राजभाषा
विशेषांक

वाणी

वर्ष : 34 ❀ अंक 126 ❀ सितम्बर 2020

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक की
तिमाही गृह पत्रिका

गतिविधियाँ

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में केंद्रीय कार्यालय के प्रांगण में ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर ध्वजारोहण के बाद तिरंगे को सम्मान देते हुए हमारे कार्यपालक निदेशक श्री ए.के. श्रीवास्तव। उनके साथ हैं, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री ए.बी.विजयकुमार और मुख्य सुरक्षा अधिकारी कैप्टन पी. वेंकटेशन।

आइओबी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी बनने के बाद पहली बार केंद्रीय कार्यालय में पदार्पण के अवसर पर श्री पार्थ प्रतिम सेनगुप्ता का सभी कार्यपालकों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर एमडी व सीईओ श्री पी.पी.सेनगुप्ता के साथ मौजूद हैं कार्यपालक निदेशक श्री ए.के. श्रीवास्तव एवं केंद्रीय कार्यालय के सभी महा प्रबन्धकगण।

इस अंक में

वाणी

वर्ष : 34 ❀ अंक 126 ❀ सितम्बर 2020

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक की तिमाही गृह पत्रिका

सदेश

गृह मंत्री जी का सन्देश 3
प्रबन्ध निदेशक महोदय का संदेश 5
कार्यपालक निदेशक महोदय का संदेश 6
महा प्रबंधक महोदय का संदेश 7

संपादकीय

राजभाषा : आज के परिप्रेक्ष्य में 8

भेंट-वार्ता

प्रबन्ध निदेशक से साक्षात्कार 9

बैंकिंग व अन्य लेख

दि गांधी : आदि से अंत तक 12
कोरोना महामारी आपदा प्रबन्धन... 51
भारतीय बैंकिंग क्षेत्र : बैंकिंग सेवाएं... 54

कविता

ज़िन्दगी की कहानी 15
कोरोना की चुनौती 16
कोरोना से बचो ना 16
बेटी दिवस के अवसर पर विशेष छंद 23
अभी हारा नहीं हूँ मैं! 28

विशेष आलेख

बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन... 17
राजभाषा हिन्दी एवं बाजार 37

साहित्य का सफरनामा

गांव-गली-खेत का कवि : अदम गोंडवी 20

प्रदक्षिणा

अंगकोरवाट 25

फोटो फीचर

केंद्रीय कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह 29
क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह 30

तारीख़े बयाँ और

औपनिवेशिक हिंसा का प्रतीक - लियोपॉल्ड II 33

नज़र कानूनी

किसानों के लिए कितने कारगर नए कृषि कानून 42

ख़तों के रास्ते इतिहास

दासता की दास्तान 46

स्वास्थ्य संपदा

स्वस्थ कैसे रहें ...? 56

परिक्रमा

झाँकी झारखंड की !! 58

विविधा

ज्ञान के मोती 24
शब्द- शब्दांतर 41
हँसी की फुलझड़ियाँ 50
प्रतिस्पंदन 60

'वाणी' पत्रिका बैंक के ऑनलाइन
यानि इंट्रानेट पर भी उपलब्ध है

राजभाषा विशेषांक

वाणी

वर्ष : 34 ❀ अंक 126 ❀ सितम्बर 2020

तुम वहन कर सको जन-मन में मेरे विचार !
वाणी मेरी चाहिए तुम्हें क्या अलंकार ?

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक की
तिमाही गृह पत्रिका

मुख्य संरक्षक
पार्थ प्रतिम सेनगुप्ता
प्रबन्ध निदेशक एवं
मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक
अजय कुमार श्रीवास्तव
कार्यपालक निदेशक

परामर्शदाता
भुवन चन्द्र शर्मा
महा प्रबंधक

संपादक
सुरेश कुलकर्णी
उप महा प्रबंधक

अंक संपादक
व प्रकाशक
अलीम खान
वरिष्ठ प्रबंधक

सम्पादन सहयोग
नेहा रंजन
सहायक प्रबंधक
केन्द्रीय कार्यालय

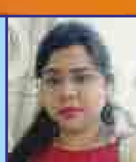

सम्पादन सहयोग
नगेंद्र कुमार सिंह
सहायक प्रबंधक
केन्द्रीय कार्यालय

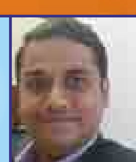

सम्पादन सहयोग
शुभम दीक्षित
सहायक प्रबंधक
केन्द्रीय कार्यालय

मुद्रक
कृष्णाराज प्रिंटर्स
36 देवराजन स्ट्रीट, रॉयपेट्टा
चेन्नै 600 014, तमिलनाडु
दूरभाष : 044-28481125

वाणी में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने निजी हैं। बैंक का इनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

पत्र व्यवहार का पता
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक,
राजभाषा विभाग,
केन्द्रीय कार्यालय, 763 अण्णा सालै,
चेन्नै 600 002
दूरभाष : 044–28519572
फ़ैक्स : 044–28551618
ई–मेल : official@iobnet.co.in

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत

सत्यमेव जयते

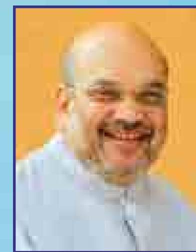

गृह मंत्री जी का संदेश

प्रिय देशवासियों !

हिन्दी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देना चाहता हूँ।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है । कई प्रकार की संस्कृतियाँ, कई प्रकार की कलाएँ और कई प्रकार की भाषा का मेलजोल यहाँ पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है । हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं । अनेक भाषाएँ एवं संस्कृतियाँ हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिन्दी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिन्दी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिन्दी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है । हिन्दी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बड़ा योगदान दिया है । हिन्दी के साथ ब्रज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएँ और बोलियाँ इसका उदाहरण हैं। हिन्दी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है । हिन्दी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है । हिन्दी भाषा की विशेषता यह है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिन्दी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिन्दी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है। हिन्दी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी, बल देने का प्रयास किया है। हर राज्य की भाषा को, हिन्दी ताकत देती है। हिन्दी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है। 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया है कि संघ की राजभाषा हिन्दी व लिपि 'देवनागरी' होगी । अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहाँ आवश्यक है या वांछनीय हो, वहाँ उसके शब्द – भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए , हिन्दी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिन्दी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों / विभागों / कार्यालयों / उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ- साथ वे सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिन्दी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिन्दी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिन्दी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिन्दी में दिए गए भाषणों से, हिन्दी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिन्दी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है । इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएँ हिन्दी में उपलब्ध कराई जाएँ और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएँ कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिन्दी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा

है। प्रधानमंत्री जी के "आत्मनिर्भर भारत" के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है।'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिन्दी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिन्दी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई- सरल हिन्दी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिन्दी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिन्दी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिन्दी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थनों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिन्दी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थितियों से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय – समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिन्दी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। इसके साथ- साथ हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले 'राजभाषा गौरव पुरस्कार' विजेता भी बधाई के पात्र हैं हीं। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिन्दी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के ज़रिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया, जिसमें परंपरागत क्लास रूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कॉन्फ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिन्दी में करते हुए अधिकारियों / कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा पाएं।

आइए ! हिन्दी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिन्दी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिन्दी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिन्दी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूँ कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूँ – अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएँ। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिन्दी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्व पटल पर ज्ञान- विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिन्दी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मैं हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

भारत माता की जय !

नई दिल्ली,
14 सितंबर 2020

(अमित शाह)

प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय का संदेश

प्यारे साथियो,

मेरे प्रभार ग्रहण करने के पश्चात यह पहला अवसर है जब मैं वाणी के माध्यम से आप सभी से रूबरू हूँ। साथियो, आप सभी के अथक प्रयासों से हमारे बैंक ने जो लाभार्जन किया है, हमें उसे बनाए रखना होगा। हमारा प्रयास होना चाहिए कि जो लाभ करोड़ के तीन अंकों तक सिमट कर रह गया है अब हमें अपने प्रयासों से उसे बढ़ा चार अंकों तक लेकर जाना होगा।

जैसा कि आपको पता ही है कि पिछले माह हमने हिन्दी दिवस मनाया और ये कुछ ऐसा था कि मानो कि हमारा कार्यालयी कार्य हिन्दीमय हो गया हो। सभी क्षेत्रों के द्वारा सामाजिक दूरी के नियमों का पालन करते हुए ऑनलाइन माध्यम से प्रतियोगिताओं का आयोजन अपने आप में एक अद्वितीय प्रयास था जो पूर्ण रूप से सफल साबित हुआ, जिसके लिए सभी प्रतिभागीगण तथा राजभाषा टीम के सदस्य बधाई के पात्र हैं।

जिस तरह सितंबर माह सभी देशवासियों के लिए मायने रखता है उसी तरह अक्तूबर माह बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों से जुड़े सभी कर्मचारियों के लिए और भी महत्व रखता है। हर वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन सतर्कता आयोग की दूरदर्शिता का परिचायक है। भ्रष्टाचार की रोकथाम और उसके खिलाफ संघर्ष में सामूहिक रूप से जनता की भागीदारी को बढ़ावा देने और इसके महत्व, कारण और इससे होने वाले खतरों के प्रति जागरूक करना ही इसका उद्देश्य है। साथ ही वित्तीय गतिविधियों से जुड़े होने के कारण इस संदर्भ में हमारा दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। अगर हम सतर्कता जागरूकता सप्ताह की शुरुआत की बात करें तो 19 जून 2000 को आयोजित राज्य सतर्कता आयुक्तों एवं राज्य भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के निदेशकों की बैठक में निर्णय लिया गया कि अपनी सत्यनिष्ठा के लिए सर्वविदित 31 अक्तूबर को जन्मे सरदार वल्लभ भाई पटेल की स्मृति में उनको सच्ची श्रद्धांजली स्वरूप 27 अक्तूबर से 2 नवंबर की अवधि को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के रूप में मनाया जाएगा।

अगर पारिभाषिक शब्दों में कहा जाए तो कोई ऐसा प्राधिकृत व्यक्ति जो स्वयं को या दूसरों को लाभ पहुंचाने के लिए किसी बेईमान और अनैतिक आचरण को अपनाता है तो वह भ्रष्टाचारी कहलाता है। भ्रष्टाचार रूपी इस व्याधि का समूल निर्मूलन करने के लिए सतर्कता हमारे लिए पैने हथियार का काम करती है। मैं आप से अनुरोध करता हूँ कि वर्ष 2020 की थीम सतर्क भारत, समृद्ध भारत के पथ पर चलते हुए सदैव सतर्क रहें तथा समृद्धि के पथ पर अग्रसर रहें।

शुभकामनाओं सहित

पार्थ प्रतिम सेनगुप्ता
प्रबन्ध निदेशक एवं
मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक महोदय का संदेश

प्यारे आइओबियन्स ,

हाल ही के वित्तीय नतीजों ने हम आइओबियन्स में खुशी का माहौल पैदा कर दिया है। हम फिर से लाभप्रदता की राह पर निकल पड़े हैं, लेकिन आगे की राह हमें पूरे समर्पण के साथ तय करनी होगी। चाहे बैंकिंग हो या राजभाषा का काम, हर क्षेत्र में प्रयासों और उपायों की आवश्यकता होती है। बैंक को दुबारा से पटरी पर लाने के जो अनन्य प्रयास आप लोगों ने किए, वे सराहनीय हैं। वैसे ही राजभाषा कार्यान्वयन में आपका योगदान और सहयोग हमें निरंतर मिलता रहता है, यह अत्यंत सरहनीय है। आप सभी के सहयोग से ही आज हमारा बैंक राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अन्य बैंकों के समकक्ष खड़ा है। तमिल नाडु में स्थित होने के बावजूद राजभाषा काम काज में हमारा बैंक किसी भी मामले में कमतर नहीं है। लेकिन बात वही है – कोई भी चीज़ कभी पूर्णता को नहीं प्राप्त कर सकती। अगर हमारा कार्य अच्छा है, तो उसे हम बेहतर बनाएँ और अगर बेहतर है तो बेहतरीन बनाएँ। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि हम राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी अपना झंडा गाड़ दें। हमें यदि उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त होता है तो इससे हमारी हौसला अफ़ज़ाई होगी। अतः आइए, हम सब इस दिशा में आगे बढ़ते हुए राजभाषा के कामकाज में पूरा ज़ोर लगा दें, हर संभव प्रयास व प्रयत्न करें, कोई कसर न छोड़ें ताकि पुरस्कार हमें ढूँढते हुए आ जाएँ।

साथियो, कोविड 19 महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के चक्र को जैसे रोक सा दिया है, बड़े-बड़े विकसित देशों से ले कर विकासशील देश इसकी मार से अभी तक उबर नहीं सके हैं। ऐसे में हमारा देश भी इस महामारी के प्रकोप से अछूता नहीं रहा है। हालांकि पिछले एक महीने में परिस्थितियाँ कुछ सामान्य होती नज़र तो आ रही है मगर लगभग एक तिमाही से अधिक समय तक चले लॉकडाउन ने निर्माण, विनिर्माण और तमाम आर्थिक गतिविधियों को इस हद तक प्रभावित कर दिया है कि उनके वापस अपनी गति प्राप्त करने की राह इतनी आसान नज़र नहीं आ रही है। एक ओर जहाँ आर्थिक गतिविधियों के इस दीर्घकालिक स्थगन ने प्रवासी मज़दूरों को पलायन के लिए मजबूर किया तो वहीं दूसरी ओर अब लॉकडाउन में छूट दिए जाने के बावजूद भी मानव संसाधन की आपूर्ति में कमी के चलते उद्योगों में पुनः उत्पादन अपेक्षित गति नहीं प्राप्त कर पा रहा है।

आप सभी जानते ही हैं कि ऋण जितने बड़े होंगे जोखिम भी उतना ही अधिक होगा। हमें अपने बैंक के जोखिम-स्तर को कम करना होगा, इसके लिए हमें अपना ध्यान खुदरा उत्पादों, विशेष रूप से आवास ऋणों एवं एमएसएमई ऋणों की ओर केन्द्रित करना होगा ताकि जोखिम के स्तर को बढ़ाए बिना हम अपने अग्रिम पोर्टफोलियो को बढ़ा सकें। हमें अपने मौजूदा आवास ऋण ग्राहकों तक अपनी अन्य खुदरा सेवाओं यथा पुष्पका, शुभगृह, आवास सज्जा, क्रेडिट कार्ड आदि का विस्तार करना होगा ताकि हम अपने बैंक के रिटेल पोर्टफोलियो को बढ़ा सकें। ऐसे में विद्यमान आवास ऋण एवं एमएसएमई उधारकर्ताओं को हमारे पैरा बैंकिंग उत्पादों का विपणन सोने पे सुहागा हो सकता है, आवश्यकता है तो बस इन संभावनाओं को हकीकत में परिवर्तित करने की।

शुभकामनाओं सहित

अजय कुमार श्रीवास्तव
कार्यपालक निदेशक

महा प्रबंधक महोदय का संदेश

वाणी का नूतन अंक, राजभाषा विशेषांक, आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। सितंबर माह हिन्दी दिवस का महीना होता है और यह दिवस किसी उत्सव से कम नहीं होता। सारा परिवेश हिन्दीमय हो जाता है और ऐसा प्रतीत होता है कि हम पूर्णत: हिन्दी वातावरण में ही जी रहे हैं। यदि इस एक महीने को छोड़ दें तो हमें अन्य समय में हिन्दी का वह वर्चस्व नज़र नहीं आता जिसकी कि वो अधिकारी है। यह एक विडम्बना ही है कि हिन्द प्रदेश, हिन्दुस्तान में हिन्दी दिवस मनाया जाता है, जहाँ की यह भाषा है। होना तो यह चाहिए था कि विदेशों में हिन्दी दिवस मनाया जाए ताकि भारतीय भाषा व संस्कृति की ध्वनि वहाँ के वातावरण में गूँज सके। आज भी हम देखते हैं कि कई क्षेत्रों में हिन्दी का काम तो होता है, पर हिन्दी में काम नहीं होता। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पिछले डेढ़-दो दशकों में हिन्दी ने व्यापक स्तर पर अपने पैर पसारे हैं और कुछ क्षेत्रों में तो हिन्दी का ही बोलबाला है। बैंकों में भी हम पाते हैं कि हिन्दी ने विशाल स्तर पर अपनी पैठ बना ली है और डिजिटल बैंकिंग, मार्केटिंग एवं ग्राहक सेवा जैसे क्षेत्रों में हिन्दी की पहुँच पहले की अपेक्षा काफी संतोषजनक बनी हुई है।

इस अच्छे कार्य को यानि राजभाषा कार्यान्वियन को और भी समृद्ध व सम्पन्न बनाने की आवश्यकता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हिन्दी किसी एकल व्यक्ति का कार्य नहीं है। राजभाषा का काम-काज एक पूरी टीम का काम होता है, जिसमें टीम के हर सदस्य को एक दूसरे के साथ समन्वयन बना कर रखना होता है। सहयोग, समन्वय, सहकार, सहायता आदि गुण हिन्दी के आधार हैं। हमें इस आधार के द्वारा हिन्दी को उसका वास्तविक स्थान दिलाने के लिए सभी संभव प्रयास करने चाहिए। हमारी सरकार ने मेड इन इंडिया को अपना ध्येय व उद्देश्य बना रखा है, ठीक उसी प्रकार देश की भाषा का प्रयोग हर क्षेत्र में व हर कार्य में होना चाहिए। हमारा देश हिन्दी की महिमा से ओत-प्रोत हो जाए इस दिशा में हमें अपने प्रयत्न करने होंगे। बैंकर होने के नाते हम अपनी ओर से इस महत कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हमें हिन्दी को संवर्धित करने एवं उसे प्रगतिशील बनाने के उपाय करने होंगे, योजनाएँ बनानी होंगी। योजनाबद्ध रूप से किया गया हर कार्य सफलता प्रदान करता है। अतः दृढ़ निश्चय करना है कि हमें हर परिस्थिति में सफल होना ही है।

सफलता की सबसे पहली कसौटी होती है पुरस्कार। राजभाषा कार्यान्वियन में यदि हमारे बैंक को भारत सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त होता है तो हम अपनी सफलता की कसौटी पर खरे माने जाएंगे। हम सब का यह दायित्व है कि बैंक में जहाँ-जहाँ भी, जिस-जिस कार्य में भी हिन्दी का प्रयोग किया जा सकता है वहाँ हमें उसका भरसक प्रयोग करना चाहिए। कहीं भी कोई शिथिलता या कमी उत्पन्न न हो। यदि हम सब अपना-अपना योगदान सही ढंग से देंगे, अपनी भूमिका का निर्वहन समुचित रूप से करेंगे तो कोई कारण नहीं कि हम इस पुरस्कार से वंचित रहें। आइए आज हम सब मिल कर प्रण लें कि हम अपने बैंक में राजभाषा हिन्दी को शिखर पर पहुंचाएंगे और सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त कर बैंक में हिन्दी की गरिमा को और भी बढ़ाएँगे। प्रत्येक संस्था द्वारा राजभाषा हिन्दी को सुदृढ़ व समृद्ध बनाने के लिए समुपयुक्त कदम उठाए जाएँगे तो ही हिन्दी का चहुंमुखी विस्तार होगा। हम सभी राजभाषा हिन्दी की प्रगति को और अग्रसर करने हेतु वचनबद्ध हैं।

शुभकामनाओं सहित

भुवन चन्द्र शर्मा
महा प्रबन्धक

राजभाषा : आज के परिप्रेक्ष्य में

प्रिय सुधिजनों,

अगर हम इतिहास पटल पर झांक कर देखें तो अगस्त और सितंबर माह काफी हद तक एक दूसरे में गूँथे हुए नज़र आते हैं। एक ओर 15 अगस्त जहाँ हमारी औपनिवेशक आज़ादी का प्रतीक है जिसे आधिकारिक रूप से हमने 1947 में पा लिया, वहीं दूसरी ओर 14 सितंबर भाषाई परतंत्रता से आज़ादी का प्रतीक भर है जिससे आधिकारिक रूप से आज़ादी पाने की ज़ंग आज तक बदस्तूर जारी है। जिस तरह स्वराज तत्समय की मांग थी, उसी तरह हमारी राजभाषा को उसका न्यायोचित स्थान दिलाना आज की मांग है। लेकिन आज कहीं और न देख कर अपने आप को ही देखें तो गलत अँग्रेजी बोलना यदि अँग्रेजों के सामने मानहानि है तो किसी भारतीय के सामने बोलना सामाजिक अपराध। अगर हिन्दी की बात करें तो इसके व्याकरण और सिद्धान्त गए जमाने की बातें भर हैं और ये अँग्रेजी के शब्दों के बीच से झाँकती एक भाषा मात्र है। अँग्रेजी का शब्द 'हॉस्पिटल' यदि हिन्दी में अस्पताल बनाया गया, अरबी से आये 'फ़स्ल' को अगर 'फ़सल' कहा गया तो ये विदेशी भाषाओं को सम्मान देते हुए हिन्दी में शामिल करने की एक लचीली प्रक्रिया थी।

बहुत सारे शब्दों को अँग्रेजी से हिन्दी में लाने का काम किया गया। यदि इंडेक्स को अनुक्रमणिका, बेस को आधार और नक़्शे को मानचित्र कहा गया तो हिन्दी को सुचारु बनाने के लिए ही कहा गया था। यह मेहनत की गयी इसीलिए कि हिन्दी के पास भी अपने तकनीकी शब्द रहें और हम हिन्दी बोलते या प्रयोग करते समय अँग्रेजी के शब्दों में न उलझें। फ़स्ल को फ़सल ही बोलना है क्योंकि अरबी नहीं आती पर अस्पताल को हॉस्पिटल बोलना है क्योंकि अँग्रेजी आती है। हिन्दी भाषा को बनाने में न कभी भेदभाव किया गया और न ही कभी किसी भाषा के आधिपत्य को स्वीकार किया गया। यह एक लोकतान्त्रिक प्रक्रिया थी जिसमें एक भाषा दूसरी भाषा के शब्दों को गोद ले रही थी और उन्हें अपने घर के अधिकार दे रही थी, पर अपनी शर्तों पर। आज हम अपनी राजभाषा को उस मुकाम पर ले आए हैं जहाँ सरल हिन्दी के नाम पर हमने हिन्दी को ही अंग्रेजीनुमा बना डाला है। वर्तमान में हिन्दी विदेशायातित शब्दों के बीच से झाँकती एक ऐसी भाषा जान पड़ती है जिसके पास अपनी लिपि के अलावा कुछ भी नहीं! ऐसे में कितना तो सटीक ही लिखा है अकबर इलाहबादी साहब ने :

"हमारी इस्तलाहों से ज़बां नाआशना होगी, लुग़ाते-मग़रिबी बाज़ार की भाखा से जम होंगे।"

(हमारी ज़बान अपने खुद के दस्तावेज़ों से गायब रहेगी और हमारे शब्दकोश पश्चिमी भाषाओं के होंगे जो बाज़ार की भाषा से भरे पड़े होंगे।)

वाणी के इस अंक से तीन नए स्तंभ जोड़े जा रहे हैं जिसमें "शब्द-शब्दांतर" नामक स्तम्भ, जो शब्द सामर्थ्य के तीनों आयामों (अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना) के प्रति आपकी समझ को एक नया आयाम देगा, "ख़तों के रास्ते इतिहास" नामक स्तम्भ जो अलग-अलग भाषाओं में किए गए कुछ ऐतिहासिक पत्राचारों, जिन्हें आज के समय के आसन्न पढ़ा समझा जाना चाहिए, से आपकी मुलाक़ात करवाएगा और इन्हीं के साथ तीसरा स्तम्भ "तारीख़-ए-बयां और" जो वक्त की धूल के साथ धुंधले हो चुके इतिहास की तहों की पड़ताल करते हुए कुछ कहा-अनकहा अतीत आपके सम्मुख प्रस्तुत करने की कोशिश करेगा। मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि आपको ये स्तम्भ पसंद आएंगे एवं इन्हें भी आपकी उतनी ही दाद एवं सराहना प्राप्त होगी जितनी कि अन्य स्तंभों को प्राप्त होती आई है।

सुरेश कुलकर्णी
उप महा प्रबन्धक एवं संपादक

प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय का साक्षात्कार

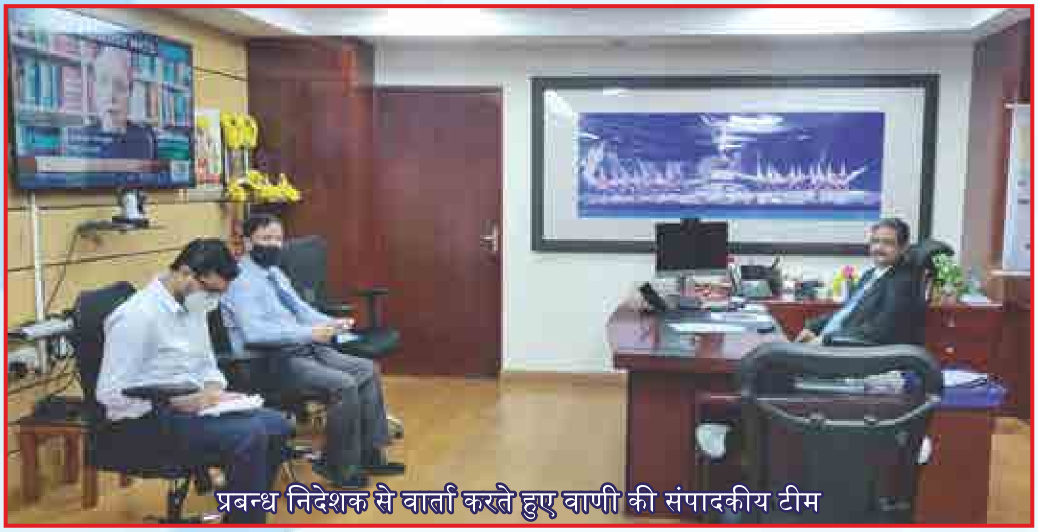

प्रबन्ध निदेशक से वार्ता करते हुए वाणी की संपादकीय टीम

1.अपनी शिक्षा-दीक्षा तथा जन्मस्थान के बारे में कुछ बताएं ?

शिक्षा के बारे में अगर आप पूछें तो मैंने भौतिकी में बीएससी (ऑनर्स), बी. एड. एवं बैंकिंग के क्षेत्र में सीएआइआइबी किया है । वैसे तो मेरा जन्म और शुरुआती परवरिश झारखंड में हुई है, लेकिन जब आप मेरे जन्मस्थान के बारे में पूछते हैं तो मैं इसे किसी एक शहर या राज्य के दायरे में बांध कर नहीं रखना चाहता । हर वो शहर/राज्य जहाँ अपने काम के दौरान मैंने अपने जीवन का कुछ समय दिया है, जहाँ से मुझे कुछ सीखने को मिला है या कि जो मेरी स्मृतियों में कुछ खट्टे-मीठे अनुभवों के साथ दर्ज हैं, ये सभी जगहें मेरे लिए बेहद खास हैं, इन सभी ने मेरे जीवन और व्यक्तित्व के निर्माण में अहम भूमिका निभाई है।

अगर आप एक नज़र में भारत का मानचित्र उठा कर देखें तो मेरा बहुत सारे राज्यों काम के सिलसिले में जाना हुआ है फिर चाहें वो महाराष्ट्र हो या फिर सुदूर अंडमान निकोबार द्वीप समूह। सभी ने मुझ में कुछ न कुछ जोड़ा ही है, बेशक बेहतरी की ओर, और ये सीखने की प्रक्रिया अभी तक अबाध रूप से जारी है। इसलिए जब आप मुझसे मेरे जन्म स्थान के बारे में पूछते हैं तो मैं इसे पूरे देश से जोड़ कर देखता हूँ। लेकिन फिर भी अगर किसी एक जगह के नाम का चुनाव करना हो तो मैं अंडमान निकोबार द्वीप समूह का नाम लेना चाहूँगा। मेरे व्यक्तित्व के निर्माण और मेरी सोच को आकार देने में इस जगह की गहरी भूमिका रही। ये ऐसी जगह है जहाँ कभी धर्म, जाति, लिंग, वर्ण को लेकर किसी प्रकार का कोई विवाद या भेदभाव नहीं रहा, गुजरात से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक और जम्मू-कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अलग-अलग धर्मों को मानने वाले अलग-अलग जगहों के लोग यहाँ पर उस भारत का निर्माण करते हैं जिसका सपना हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देखा था, शायद यही कारण है, जो इस जगह से थोड़ा सा बांधता है मुझे।

2. अपने बैंकिंग कैरियर पर प्रकाश डालें। अपने सुदीर्घ बैंकिंग कैरियर में बैंकर के तौर पर आपका अनुभव कैसा रहा ? कुछ खट्टे-मीठे अनुभव जो आप हमें बता सकें ?

बैंकिंग क्षेत्र में अपने कैरियर की बात करूँ तो इसकी शुरुआत 1986 में पंजाब नैशनल बैंक में मैनेजमेंट ट्रेनी के रूप में हुई थी जहाँ मैंने कुछ महीनों तक धनबाद और बोकारो में काम किया और इसी बीच स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से नियुक्ति का पत्र मिला और मैंने 02 फरवरी 1987 बंगाल क्षेत्र की रानाघाट शाखा में परिवीक्षाधीन अधिकारी के रूप में पदभार ग्रहण कर लिया। वहाँ से मेरी नियुक्तियां पश्चिम बंगाल की कोलकाता से लेकर जलपाईगुड़ी, कुछ ग्रामीण शाखाओं और कई अर्धशहरी शाखाओं में हुईं। 1989 में बैंक में पुष्टि होने पर मेरी नियुक्ति अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी शाखा पोर्टब्लेयर में की गई जोकि मेरे कैरियर का सबसे यादगार समय रहा।

इसके बाद बीतते वक्त के साथ कई जगहों पर अलग-अलग पदों पर काम करते हुए कई अनुभव कमाए । जिनमें 1991 में ओवरसीज़ शाखा, कोलकाता, एसएसआई शाखा, कमर्शियल शाखा सिलीगुड़ी में शाखा प्रबन्धक, सिलीगुड़ी क्षेत्रीय प्रमुख, उप महा प्रबन्धक के पद पर पदोन्नति होने के पश्चात कुछ दिन पुणे में मिड कॉर्पोरेट विभाग, महा प्रबन्धक के पद पर पदोन्नति के पश्चात कुछ दिन कोलकाता में सीजीएम और उसके बाद चीफ क्रेडिट अधिकारी के पद पर कार्य करना प्रमुख था।

सीखना एक क्रमिक प्रक्रिया है जहाँ आप सीढ़ी दर सीढ़ी, कदम दर कदम सीखते चलते हैं । आपकी हर नियुक्ति आपको कुछ नया सिखाती है लेकिन सन 2008-2010 तक सिलीगुड़ी में क्षेत्रीय प्रमुख के पद के अनुभव ने मेरे व्यक्तित्व में जितना जोड़ा, वह आज तक मेरे काम आ रहा है। अपने अनुभव की तीन घटनाएँ मैं आपके साथ साझा करना चाहूँगा जो आज तक मुझे मेरा श्रेष्ठतम देने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

i) एक दिन हमारी शाखा के सामने हॉस्पिटल से लगे एटीएम में आग लग गई, कुछ वक्त तक इंतज़ार करने के बाद जब अग्नि शमन विभाग की ओर से आश्वासन न मिला तो हमारी शाखा के स्टाफ़ सदस्यों ने रेत, पानी जो कुछ भी उस समय उपलब्ध था उससे उन्होंने अपनी

जान पर खेलते हुए आग को बुझाया, जिसकी स्थानीय लोगों से काफी सराहना प्राप्त हुई।

ii) दूसरी घटना उस वक्त की बात है जब हम एक ग्रामीण शाखा के निरीक्षण के लिए गए और वहाँ से हमें एक गाँव में जाना था। हम पूरी तरह से थक चुके थे लेकिन जिस ग्राहक के घर हम लोग गए उन्होंने हमें फल, दूध और कुछ-कुछ खाने को दिया, वो खाने पीने की चीज़ें उन्होंने अपना रोज़ा खोलने के लिए रखीं थीं। आज भले ही हम पाँच सितारा होटल्स में जाते हैं, जहाँ आपके छोटे से छोटे इशारे पर आप का काम करने को तैयार वेटर्स बेहद अदब से पेश आते हैं, मगर वो आतिथ्य, वो सत्कार, वो स्नेह और सम्मान इस चमक-दमक से कहीं बढ़ कर है, इससे कहीं अधिक निश्छल है, जिसे दुनिया की किसी भी दौलत से खरीदा नहीं जा सकता।

iii) तीसरी घटना उस वक्त की है जब हमारी एक शाखा में एक धोखाधड़ी का मामला सामने आया था, बाद की जांच में एक स्टाफ़ भी उसमें शामिल पाया गया। कुछ औपचारिकताओं के बाद उसे निलंबित कर दिया गया मगर उस वक्त उस स्टाफ़ के पक्ष में यूनियन के सभी लोग आ गए। इससे हमारे क्षेत्र का कामकाज कुछ दिनों तक रद्द रहा। शीर्ष मैनेजमेंट से विरोध में शामिल सभी स्टाफ़ सदस्यों पर कार्रवाई का दवाब दिया जा रहा था लेकिन मैंने इसे उचित नहीं समझा और कुछ दिनों के बाद स्थितियाँ सामान्य हो गईं। ये कार्रवाई न करने और क्षेत्र के स्टाफ़ सदस्यों की मेहनत का ही नतीजा था कि आने वाले कुछ महीनों में मैं बंगाल सर्कल के अर्ध-शहरी व ग्रामीण प्रवर्ग में सर्वश्रेष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक बन गया।

हालाँकि ये भी काम का ही एक हिस्सा है मगर किसी स्टाफ़ की गलतियों की वजह से उनको बर्खास्त करना, निलंबित करना आदि हमेशा ही दिल दुखाता है और न चाहते हुए भी आँखें नम हो जाती हैं। एक सवाल जो मुझे हमेशा परेशान करता रहा है कि ऐसी क्या मज़बूरी रही होगी कि उस स्टाफ़ सदस्य को ऐसा कदम उठाना पड़ा; मान, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा सब पर दाग लग जाना; ये कोई मामूली बात तो नहीं! मैं अपने सभी साथियों को भी यही सलाह देना चाहूँगा, भले ही आपको मनचाही जगह तैनाती न मिले, मन माफिक तरक़्क़ी न मिले, लेकिन हमें अपना कर्म नहीं छोड़ना चाहिए। हमारे साथियों ने विमुद्रीकरण, 2015 में चेन्नै में आई बाढ़ या हाल ही की वैश्विक महामारी जैसी विषम परिस्थितियों का सामना किया है। सेवा क्षेत्र होने के नाते हम सदैव ही अबाध रूप से अपनी सेवाएँ देते आ रहे थे, भले ही इस सब में हमारे कुछ साथियों को अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ा मगर हम रुके नहीं, हम थके नहीं। समस्याएँ आती जाती रहेंगी मगर सीमा पर तैनात देश के जवानों की तरह, देश के प्रहरियों की तरह हमें भी अपने पथ से विचलित नहीं होना है। हमें एक बात हमेशा ध्यान रखनी है कि हम ऐसा कुछ न करें जिसके चलते हमें अपना सब कुछ खोना पड़े।

3. आपकी कौन सी पोस्टिंग चुनौतीपूर्ण या आपको आत्म संतुष्ट करने वाली थी, अपने कुछ अनुभव साझा करें।

सभी सेवा क्षेत्रों से इतर जो बात बैंकिंग क्षेत्र को सबसे अलग बनाती है, वो है लोगों से जुड़ाव एवं परिचय। बैंकिंग में रहते हुए आप ग्राहक संपर्क से अछूते नहीं रह सकते और ये हमारा सौभाग्य ही है कि हम उस जगह पर हैं जहाँ पर हम लोगों की जरूरतों को पूरा करते हैं उनके सपनों को साकार करने में उनकी मदद कर सकते हैं, उनके व्यापार को एक नया आकार दे सकते हैं, यही इस क्षेत्र के बारे में सबसे बड़ी सुखदानुभूति है। यहाँ आपका संपर्क सभी वर्ग के सभी ग्राहकों के साथ होता है, आपको सभी की जरूरतों का ध्यान रखना होता है।

जब मैं शाखा में प्रबन्धक के रूप में कार्यरत था, उस वक़्त कंप्यूटर का ज़माना नहीं था, छोटे से छोटे काम के लिए भी घंटों बड़े-बड़े लेज़र्स खँगालने पड़ते थे। एक दिन एक 80 वर्ष के बुजुर्ग हमारी शाखा में आकर बोले, “अब मेरा वक़्त नजदीक आ चुका है, मैं अपना सारा कर्ज़ चुका देना चाहता हूँ”। उनके कर्ज़ से जुड़े कागज़ ढूँढने में हमें कुछ दिन लग गए और उन बुजुर्ग ने एक हफ्ते के बाद आकर सारे बकाए का भुगतान किया और अपना सारा कर्ज़ चुका दिया। ये एक दौर था जब लोग अपने वादों के प्रति समर्पित हुआ करते थे। ऐसी ही कई छोटी-छोटी घटनाएँ यादगार बन जाती हैं।

एक दिन मैं बस में सफर कर रहा था कि अचानक एक नौजवान ने मुझे उठ कर अपनी सीट पर बैठने का प्रस्ताव दिया, उसने बताया कि जहाँ मैं पहले काम करता था वो उस शाखा का ग्राहक है, हालांकि काफी कोशिश के बाद भी मैं उसका नाम याद नहीं कर पाया।

4. वैश्विक महामारी के कारण विश्व की अर्थव्यवस्था एवं भारत की अर्थ व्यवस्था जिस तरह प्रभावित हुई है वह कब तक टर्नअराउंड करेगी? क्या उपाय किए जाने चाहिए?

हम सभी जानते हैं कि हमारे देश में शुरुआती मार्च में आई इस वैश्विक महामारी ने न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को पटरी से उतार दिया है। अगर हम भारत के संबंध में बात करें तो आबादी ज्यादा होने के कारण हमारी जनसंख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा इसकी चपेट में हैं, नौकरी जाना, मजदूर विस्थापन, शिक्षा व्यवस्था के चरमरा जाने से जन साधारण का जीवन प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुआ है। लेकिन हमें धीरज बांधे रखना होगा और अपनी सोच को सकारात्मक रखना होगा। बेशक आज नहीं तो कल हम इस समस्या से छुटकारा पा ही लेंगे। हमारे बैंक ने भी पहली तिमाही की अपेक्षा दूसरी तिमाही में बेहतर प्रदर्शन किया है, ज़रूरत है तो बस डटे रहने की, और जल्द ही हम इस महामारी से निजात पा लेंगे। भारत सरकार ने सभी आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाए हैं और जल्द ही इनके परिणाम हमारे सामने होंगे।

5. कोविड 19 महामारी के चलते बैंक की अर्जक आस्तियों (Performing Assets)/ ऋणों पर जो प्रभाव पड़ा है उसके दूरगामी परिणाम क्या होंगे ?

हमें यहाँ एक बात समझनी होगी, जब बात अर्थव्यवस्था पर दबाव की होती है तो अप्रत्यक्ष रूप से ये दबाव बैंकों के ऊपर ही होता है। भारतीय रिज़र्व बैंक ने विभिन्न योजनाओं की शुरुआत की है, हमें सभी योजनाओं पर नज़र बनाए रखनी होगी। हमें देखना होगा कि जिस किसी भी उधारकर्ता को क्षति हुई है उसकी यदि किसी योजना के तहत मदद की जा सकती है तो हमें उस दिशा में कदम उठाने होंगे तथा अपेक्षित सहायता प्रदान करनी होगी। वे सभी खाते जो भविष्य में अनर्जक हो सकते थे, हम पहले ही उनकी घोषणा कर चुके हैं। जिस तरह मरीज़ को अगर सही समय पर सही दवा की खुराक मिल जाए तो उसे आसानी से बचाया जा सकता है ठीक उसी तरह अगर पात्र विद्यमान खातों की मदद की जाए तो उन्हें अनर्जक होने से बचाया जा सकता है।

6. आइओबी में कारोबार की वृद्धि के लिए आपके अभिमत तथा उपाय क्या है ?

हमारी ग्राहक सेवा उत्कृष्ट है और यही हमारी शक्ति है, हमें इसे और अधिक बेहतर बनाना होगा। हमें उन्नत तकनीक का प्रयोग करना होगा एवं यह तकनीकी उन्नयन हमें युवाओं के बीच अपने बैंक की जड़ें मजबूत करने में अहम भूमिका निभा सकता है। हमारा आज का युवा वर्ग कल का उद्यमी और वेतन भोगी समूह होगा; उनकी वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति कर हम अपने बैंक के व्यापार को एक नई दिशा एवं दशा दे सकते हैं। हमें अपने अग्रिम पोर्टफोलियो को मजबूत करना होगा, बड़े उद्यमियों को बेहतर सेवा दे कर उन्हें अपने बैंक से जोड़ना एक बेहतर रणनीति साबित हो सकती है। नए उद्यमियों को बेहतर कार्यकारी माहौल एवं तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाना हमें लाभ पहुँचा सकता है।

7. हमारे बैंक को पीसीए से बाहर निकालने की क्या-क्या योजनाएँ हैं ?

पीसीए से बाहर आने के लिए लीवरेज अनुपात के अलावा हम सभी मानकों को पूरा कर चुके हैं। हमें अभी थोड़ा इंतज़ार करना होगा एवं कोविड 19 महामारी के कारण उत्पन्न हुई स्थितियों का ठीक-ठीक आकलन करना होगा। हमें पीसीए से बाहर आने के लिए आरबीआई से संपर्क करने से पूर्व अपनी स्थिति एवं तुलन पत्र को और अधिक मजबूत करना होगा ताकि एक बार पीसीए से बाहर आने के पश्चात हमें पीछे मुड़ कर देखना न पड़े।

8. बैंकों के निजीकरण/ विलय के बारे में आपकी क्या राय है ?

बैंकों का विलय आज के समय की मांग है, ये कॉर्पोरेट एवं ग्राहक दोनों के हित में है। एक ओर जहाँ ये कॉर्पोरेट को ग्राहकों तक बेहतर पहुँच प्रदान करेगा, वहीं दूसरी ओर ये प्रतिस्पर्धी माहौल में ग्राहकों को बेहतर सेवाएँ देने के लिए कॉर्पोरेट को बाध्य भी करेगा। हमें अपनी शक्तियों को पहचानते हुए नए ग्राहक जोड़ने होंगे इसके साथ ही ग्राहक सेवा में हमारी उत्कृष्टता हमें इस क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल करवा सकती है।

9. कोई व्यक्तित्व जो आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है या आप जिससे प्रेरणा लेते हैं या जो आपका मेंटर है ?

कोई ऐसा व्यक्तित्व जो मुझे प्रभावित करता है का सबसे सटीक जवाब देश के कई लोगों की तरह “स्वामी विवेकानंद” ही होगा। उन्होंने आने वाले 500 सालों तक की समस्याओं का समाधान पहले ही दे दिया। ज़रूरत है तो बस उनके उपदेशों से शिक्षा लेने की। उन्होंने समाज की उन्नति के लिए सब कुछ छोड़ दिया ताकि समाज की, राष्ट्र की सेवा कर सकें। स्वामी विवेकानन्द के अलावा महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस के विचार भी काफी प्रेरणा दायक हैं। बैंकिंग क्षेत्र में आर के तलवार को पढ़ना जहाँ हमेशा ही ऊर्जा और स्फूर्ति से भर देता है वहीं जिन लोगों के साथ मैंने काम किया है उनमें अरुंधती भट्टाचार्य एवं रजनीश कुमार के नेतृत्व कौशल एवं निर्णय लेने की क्षमता ने भी मुझे काफी प्रभावित किया।

10. आइओबियन्स के लिए भविष्य हेतु आपकी क्या कल्पनाएँ हैं ?

दक्षिण भारत में अपनी सशक्त मौजूदगी के साथ आइओबी एक बेहद ही मजबूत बैंक है, लेकिन हमें अपनी क्षमताओं को बढ़ाना होगा, युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा देनी होगी। हमें अपना ध्यान ग्राहक सेवा के ज़रिए मौजूदा ग्राहकों को बेहतर सेवा, डिजिटलीकरण के माध्यम से नए ग्राहकों को जोड़ने एवं बेहतर निर्णय लेकर अपने अग्रिम पोर्टफोलियो को मजबूत करने की ओर केन्द्रित करना होगा ताकि हमारा बैंक और अधिक लाभर्जन कर अग्रणी बैंकों की कतार में शामिल हो सके। अगर हम योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ते रहेंगे तो शीघ्र ही कामयाबी हमारे कदमों में होगी।

11. अपनी तरफ से आइओबियन्स को कोई संदेश ?

साथियो, यह बैंक हमारा अपना बैंक है और इसकी उन्नति में ही हमारी उन्नति है, हमें अपना समस्त कार्य ग्राहकों के हितों को ध्यान में रखते हुए करना होगा। यहाँ जो भी काम है वह बैंक का काम है, किसी एक का नहीं, और हम जो भी करते हैं अपने प्यारे बैंक के लिए करते हैं। हमें अपने काम आपस में बाँट कर करने होंगे औए एक दूसरे का हाथ बँटाना होगा। जीत का सिर्फ एक ही मंत्र होता है अपने प्रतिस्पर्धी की नीतियों और योजनाओं पर नज़र रखना। अतः हमें अपने प्रतिस्पर्धी बैंकों की गतिविधियों व उनकी योजनाओं पर भी पैनी नज़र बनाए रखनी होगी ताकि हम इस प्रतिस्पर्धात्मक दौर में कहीं पीछे न छूट जाएँ।

दि गांधी : आदि से अंत तक

निरंजन पण्डा
मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

वैसे तो गांधी के व्यक्तित्व को किसी एक आलेख में बाँधना संभव नहीं है, गांधी अपने आप में पूरा साहित्य हैं किंतु फिर भी संबोधन शैली में गांधी के व्यक्तित्व के बारे में कुछ जाने और कुछ अनजाने तथ्य एक आलेख में पिरोने का प्रयास किया है। उम्मीद है कि यह आपको गांधी के और निकट आने में और उन्हें और अधिक जानने में आपका सहचर बनेगा।

प्रस्तावना:

बापू अर्थात मोहनदास करमचंद गांधी किसी भी परिचय के मोहताज़ नहीं हैं। एक बार बापू ने एक सभा में कहा था कि गांधी को कोई मार नहीं सकता, गांधी मर सकता है लेकिन गांधीवाद जिंदा रहेगा लेकिन मैं कहता हूँ कि गांधीवाद मर सकता है लेकिन गांधी जिंदा रहेगा। आप एक ऐसा अद्भुत भारतीय चरित्र थे जिसके आगे सारी दुनिया ने मस्तक झुकाया, जिनके दिखाएं रास्ते पर पूरी दुनिया चली, आप एक ऐसे नेता थे जिनका अनुसरण कर न सिर्फ भारत को बल्कि दुनिया के कई मुल्क आज़ाद हुए। आजाद भारत ने गांधी को सबसे बड़ी पहचान उन्हें राष्ट्रपिता के रूप में दी। देश ने अपनी मुद्राओं पर गांधी को जिंदा रखा।

जीवन परिचय:

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर, गुजरात में हुआ था। आपके पिता श्री करमचंद गांधी ब्रिटिश राज में काठियावाड़ की एक छोटी सी रियासत में राजकोट के दीवान थे और जाति से मोध बनिया थे। आपकी माता पुतलीबाई श्री करमचंद जी की चौथी पत्नी थीं और मोहनदास अपनी माता के आखिरी एवं सबसे छोटी संतान थे और आपके दो भाई और एक बहन थी। मई 1883 को 14 साल की आयु में आपका विवाह कस्तूरबा से कर दिया गया था, कस्तूरबा आप से लगभग एक वर्ष बड़ी थीं और लगभग 62 वर्ष की आयु तक आपने वैवाहिक जीवन व्यतीत किया। आपकी मातृभाषा गुजराती थी और आपने अल्फ्रेड हाई स्कूल, राजकोट से पढ़ाई की थी। आपके जन्म दिवस 2 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप मे विश्वभर में मनाया जाता है। श्री माधव देसाई, आपके निजी सचिव थे। विकिपीडिया पर आपकी जीवनी 170 से भी अधिक भाषाओं में लिखी है, जो संभवतः किसी भी अन्य भारतीय की तुलना में कहीं अधिक है।

टाइम मैगजीन ने गांधी को वर्ष 1930 में "Man of the year" चुना था। रवींद्रनाथ ठाकुर की भांजी सरला देवी, जिनका विवाह पंजाब के एक जमींदार रामभज दत्त चौधरी से हुआ था, को गांधीजी अपनी आध्यात्मिक पत्नी मानते थे। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने आपको 'अधनंगा फकीर' की उपाधि दी थी। गांधीजी के बेटे हरीलाल ने उन्हें छोड दिया था और इस्लाम धर्म अपना लिया था। बहुत कम लोगों को मालूम है कि आपने बोएर युद्ध में बतौर सैनिक हिस्सा लिया था। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा गुजराती भाषा में लिखी है। आपने अपनी आत्मकथा "सत्य के साथ मेरे प्रयोग (my experiments with truth)", के नाम से लिखी जो 1927 में प्रकाशित हुई और श्री हार्पर कोलिन्स ने इसे उन्नीसवीं सदी की 100 सबसे प्रमुख आध्यात्मिक पुस्तकों में एक घोषित किया। अपनी आत्मकथा में महात्मा गांधी ने लिखा है कि वे बचपन में बहुत शर्मीले थे और स्कूल से भाग जाया करते थे। दूसरों से बात करने में उन्हें बहुत झिझक होती थी।जीवनी के अनुसार आपने अपने जीवन के एक समय में छोटी-मोटी चोरियां की और धूम्रपान को भी अपनाया था लेकिन बाद में इन गलतियों को कभी न दोहराने का प्रण भी लिया। वह अपने नकली दांत अपनी धोती में बांध कर रखा करते थे। केवल खाना खाते वक्त ही इनको लगाया करते थे।

श्रवण कुमार की कहानी और हरिश्चन्द्र के नाटक को देखकर आप काफी प्रभावित हुए। आपकी राइटिंग बहुत अच्छी नहीं थी और इसके लिए आपको हमेशा अफसोस रहा। महात्मा गांधी को 5 बार नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था किंतु 1948 में पुरस्कार मिलने से पहले उनकी हत्या हो गई थी इसलिए नोबेल कमेटी ने यह पुरस्कार उस साल किसी और व्यक्ति को नहीं दिया। महात्मा गांधी ने अपने पूरे जीवनकाल में कभी भी हवाई जहाज से यात्रा नहीं की और न ही कभी अमेरिका गए। 19 साल की उम्र में पढ़ाई में सामान्य होने के बावजूद वे कानून की पढ़ाई करने 1889 में इंग्लैंड गए। गांधीजी ने जब अपनी कानून की पढ़ाई खत्म कर इंग्लैंड में वकालत शुरू की तो वह पूरी तरह असफल साबित हुए, यहाँ तक कि अपने पहले केस में घबराहट के चलते पूरी बहस किए

बिना ही वे बैठ गए और केस हार गए थे किंतु दक्षिण अफ्रीका में आप बहुत सफ़ल वकील बने। आप स्वास्थ्य के प्रति बहुत ही जागरूक थे। आप प्राय: तेज क़दमों से चलते थे क्योंकि आपका मानना था कि- चलना व्यायाम का सर्वोत्तम तरीका है और आप लगभग प्रतिदिन 18 किलोमीटर पैदल चलते थे यह आपके पूरे जीवनकाल में दुनिया के 2 चक्कर लगाने के बराबर है। खान पान के विषय में आप बहुत सजग थे और आप गाय या भैंस का नहीं बल्कि बकरी का दूध पीते थे।

राष्ट्रपिता और बापू की उपाधि :

सुभाष चंद्र बोस ने आपको “राष्ट्रपिता” की उपाधि दी थी। 1915 में जब गाँधी जी शाँति निकेतन में रबीन्द्र नाथ टैगोर से मिले तो उन्होंने टैगोर जी को “नमस्ते गुरुदेव” कह कर संबोधित किया। इस पर टैगोर जी ने कहा कि अगर मैं गुरुदेव हूँ तो आप “महात्मा” हैं। तब से ही टैगोर जी के नाम के पहले ‘गुरुदेव' और गाँधी जी के नाम के आगे 'महात्मा' लगने लगा।

गांधी एक साहित्यकार के रूप में :

आप का साहित्य से हमेशा नाता रहा। गांधी साहित्य के हिस्से नहीं है बल्कि खुद में पूरा साहित्य हैं। आपमें और प्रसिद्ध लेखक टॉल स्टॉय के बीच लगातार पत्र व्यवहार होता रहता था। आपका टॉलस्टॉय के प्रति प्रेम इतना गहरा था कि आपने दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह संघर्ष के दौरान जोहांसबर्ग से 21 मील दूर 1100 एकड की छोटी सी कॉलोनी टॉलस्टॉय फर्म स्थापित की थी। उन्होंने भारत और सॉउथ अफ्रीका में एक संपादक के तौर पर हरिजन, Indian Opinion और युवा भारत सहित कई समाचार पत्रों का हिन्दी, अंग्रेजी और गुजराती भाषा में संपादन किया था, आपने लगभग 50,000 पृष्ठ से भी अधिक का लेखन कार्य किया।

दलित प्रेम और उत्थान - समाजसेवा:

हिन्दु समाज में निचली जातियों के अस्पृश्य, अछूत, अंत्यज, दलित इत्यादि नाना नाम प्रचलित थे। बापू ने देखा कि ये सारे नाम ही अपमानजनक हैं इसलिए 1932 के अंत में गुजरात के एक अंत्यज ने ही महात्मा गांधी को नरसी मेहता के एक गुजराती भजन का हवाला देकर लिखा कि अंत्यजों को 'हरिजन" जैसा सुंदर नाम क्यों न दिया जाए। उस भजन में हरिजन ऐसे व्यक्ति को कहा गया है, जिसका सहायक संसार में, सिवाय एक हरि के दूसरा कोई नहीं है। गांधी जी ने यह नाम पसंद कर लिया और यह प्रचलित हो गया। यही नहीं दिल्ली प्रवास के दौरान आप भंगी बस्ती में ही रहते थे। आप छुआछूत के सख्त खिलाफ थे।

हिंदी के लिए योगदान:

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कुछ अंग्रेज़ पत्रकार महात्मा गांधी के पास आए और उनका इंटरव्यू अंग्रेज़ी में लेने लगे। इस पर महात्मा गांधी हिंदी में बोले “मेरा देश अब आजाद हो गया है। अब मैं हिन्दी में ही बात करूंगा” राष्ट्र भाषा के विषय में उनका विचार था "कोई भी देश तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक कि वह अपनी भाषा में नहीं बोलता"। आपकी मातृभाषा गुजराती थी लेकिन आपने हिन्दी की उन्नति के लिए हर संभव प्रयास किया। आप ही ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत करते हुए कहा था कि राष्ट्रभाषा के बगैर राष्ट्र गूंगा है। सन 1921 में यंग इण्डिया में प्रकाशित अपने एक लेख के माध्यम से गांधी जी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के भाव को विस्तृत रूप से स्पष्ट किया था।

आजादी का आंदोलन:

गांधी का एक ही स्वप्न था पूर्ण स्वराज। इसके लिए उन्होंने कई आंदोलन चलाए। 1920 में उन्होंने असहयोग आंदोलन चलाया और आजादी के लिए चलाया गया यह सबसे पहला आंदोलन था जिसे कि रॉलेट एक्ट के विरोध में चलाया गया था। 1930 में उन्होंने अंग्रेजों के बनाए नमक कानून के खिलाफ 400 किमी की दांडी यात्रा की और 1942 में अंग्रेजों के खिलाफ भारत छोड़ो आंदोलन का सूत्रपात किया। भारत की स्वतंत्रता के लिए आप कई बार जेल गए, कुल मिलाकर अपने जीवन के लगभग 6 साल 5 महीने आपने स्वाधीनता के लिए जेल में बिताए। 1942 में अंग्रेजों ने एक दांव खेला और गांधी जी से कहा कि विश्वयुद्ध में भारत हमारा सहयोग करे और बदले में हम भारत को आजाद कर देंगे। गांधी जी ने आंदोलन वापस ले लिया। दूसरे विश्वयुद्ध में गांधी जी के कहने पर ही भारतीय सेना अंग्रेजों के लिए लड़ी थी। आपने 4 महाद्वीपों में और 12 देशों में नागरिक अधिकारों के लिए आंदोलन किया था।

दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह और रंगभेद की लड़ाई:

सन 1893 में गांधी जी को दक्षिण अफ्रीका से सेठ अब्दुल्ला ने एक मुकदमा लड़ने के लिए बुला लिया और यहीं से उनकी अफ्रीका यात्रा प्रारंभ हुई। सेठ अब्दुल्ला के बुलावे पर गांधी जी जहाज पर सवार होगर अफ्रीका के डरबन पहुंचे। यहां से 7 जून 1893 को उन्होंने प्रीटोरिया जाने के लिए ट्रेन पकड़ी और उनके पास फर्स्ट क्लास का टिकट था। वैध टिकट होने के बावजूद उन्हें तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने को कहा गया और मना करने पर उन्हें ट्रेन से फेंक दिया गया। उन्हें कई होटलों में वर्जित कर दिया गया। एक अदालत में न्यायधीश ने गांधी को अपनी पगड़ी उतारने के लिए बोला तो यह आदेश गांधी जी ने नहीं माना और इन घटनाओं ने उन्हें रंगभेद के प्रति सत्याग्रह करने की प्रेरणा दी। गांधी ने सत्याग्रह का पहली बार उपयोग साउथ अफ्रीका में ही किया था।

गांधी दर्शन: आपके जीवन पर प्रसिद्ध साहित्यकार टॉलस्टॉय एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर का बहुत प्रभाव पड़ा। आपने इस देश में सांप्रदायिक एकता, अस्पृश्यता निवारण, मद्य निषेध, खादी प्रचार, ग्रामोद्योग, सफाई, शिक्षा, बुनियादी तालीम, हिन्दी प्रचार, स्त्रियों की उन्नति, स्वास्थ्य, प्रौढ़ शिक्षा, आर्थिक समानता, कृषक संगठन, विद्यार्थी संगठन, श्रमिक संगठन, स्वतंत्रता, स्वराज्य के लिए सतत संघर्ष किया। आपने ही सबसे पहले बताया कि जो बदलाव आप दुनिया में देखना चाहते हैं उसके लिए पहले खुद में बदलाव लाएँ और आपने ही कहा था लोग सोने चांदी को असली धन मानते हैं किन्तु मेरे हिसाब से स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है। वास्तव में गांधी ने किसी नए दर्शन की रचना नहीं की वरन उनके विचारों का जो दार्शनिक आधार है वही गांधी दर्शन है। निश्चित तौर पर आपका दर्शन सामाजिक न्याय का दर्शन था, आपने श्रमिक वर्ग को एक नई राह दिखाई। आपने ही कहा था कि गंदे नाले की कुछ लहरों से पूरा सागर कभी गंदा नहीं होता। निश्चित तौर पर समाज में कुछ लोगों के गंदे होने से पूरा समाज गंदा नहीं हो सकता। आपने कहा था कि जितना कम बोलोगे लोग आपको उतना ज्यादा सुनना चाहेंगे।

आत्मनिर्भर भारत और गांधी:

आज के आत्मनिर्भर भारत की जो भूमिका वर्तमान सरकार ने बनाई है, गांधी इसके प्रबल पक्षधर थे। आत्मनिर्भर ग्रामीण भारत अर्थव्यवस्था का विकास गांधी का सपना था। आप चाहते थे कि हर हाथ को काम मिले, बेकार नहीं। यंत्र व्यक्ति के काम को छीनकर पंगु बनाता है तो गांधी का चरखा संदेश देता है नियंत्रण योग्य मशीनों का और गांव के शासन का। गांधी का चरखा श्रम की मर्यादा का प्रतीक था और आप मशीनी उत्पादन और औद्योगीकरण के भी विरोधी थे जिसके लिए आपको कुछ लोगों की आलोचना का भी भाजन बनना पड़ा किन्तु आपके आलोचकों ने भी आपकी प्रभुता स्वीकार की और इसे अपनाने पर बाध्य हुए।

मृत्यु:

आपका जीवन ईश्वर के सदृश्य पवित्र था। 30 जनवरी, 1948 को शाम को 5 बजकर 17 मिनट पर जब दिल्ली के बिड़ला भवन के बगीचे में आपके सीने को गोलियों को से चाक किया गया तो आपके मुख से केवल दो शब्द निकले थे और वे थे हे राम। राम सदैव आपके आराध्य रहे और राम राज्य आपका सपना। राम के नाम से उन्हें इतना प्रेम था कि अपने मरने के आखिरी क्षण में भी उनका आखिरी शब्द हे राम ही था। जिस वाहन में 1948 में महात्मा गांधी को अंतिम संस्कार के लिए ले जाया गया था वही वाहन सन 1997 में मदर टेरेसा की अंतिम यात्रा के लिए भी इस्तेमाल किया गया था। बहुत कम लोगों को मालूम है कि आपकी 8 किलोमीटर की शवयात्रा में लगभग 10 लाख लोग शामिल हुए थे और लगभग 15 लाख लोग रास्ते में खड़े हुए थे। आज़ाद भारत के इतिहास में किसी भी नेता के लिए यह सबसे बडी विदाई थी।

हिन्दी कविता और गांधी :

लगभग सभी समकालीन और वर्तमान कवियों ने गांधी को अपनी कविता से श्रद्धांजली अर्पित की है और उनके पद के महत्व को रेखांकित किया है। जब नाथूराम गोड़से ने आप पर गोली चलाई तो श्री हरिवंश राय बच्चन जी चालीस दिन तक राजघाट की ओर न जा सके और जब चालीस दिन बाद वहां गए तो उन्होंने लिखा कि –

बापू की हत्या के चालीस दिन बाद गया,
मैं दिल्ली को, देखने गया उस थल को भी,
जिस पर बापू जी गोली खाकर सोख गए,
जो रंग उठा उनके लोहू की लाली से।

रामधारी सिंह दिनकर ने भी आपके महत्व को कुछ यूं रेखांकित किया है : –

अंगार हार उनका, जिनकी सुन हांक समय रुक जाता है,
आदेश जिधर का देते हैं, इतिहास उधर झुक जाता है।
बापू तू वह कुछ नहीं, जिसे ज्वालाएं घेरे चलती हैं,
बापू, तू वह कुछ नहीं, दिशाएं जिसको देख दहलती हैं।

सुमित्रा नंदन पंत ने बापू की शक्ति और गौरव को कुछ यों सराहा –

तुम मांसहीन, तुम रक्तहीन, हे अस्थिशेष तुम अस्थिहीन
तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल, हे चिर पुराण, हे चिर नवीन
तुम पूर्ण इकाई जीवन की, जिसमें असार भव-शून्य लीन
आधार – अमर, होगी जिस पर भावी की संस्कृति समासीन

राष्ट्रपिता, महात्मा, बापू क्या-क्या नहीं थे। आप भारत के भाग्य विधाता थे। आप अपने आप में पूरा देश थे, पूरी मानवता थे। शायद इसीलिए प्रसिद्ध कवि नारायण सिंह ने लिखा था कि –

जग जेकर प्रेम समाज रहल, बिन ताज सदा सिरताज रहल
मुट्ठी भर हड्डी में जेकर, कोटिन के लिपटल लाज रहल

विश्व की महान श्रद्धांजलियाँ:

गांधी अपने आप में हिमालय हैं। वे युग सृष्टा एवं युग दृष्टा हैं। एक पूरा का पूरा युग गांधी में समाहित है। एप्पल कंपनी के सीईओ "स्टीव जॉब्स" महात्मा गांधी की तरह गोल शीशे वाला चश्मा पहनते थे इस तरह से वह महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देते थे। दुनिया में महात्मा गांधी के आदर को इस बात से समझा जा सकता है कि जिस देश से भारत को आज़ादी दिलाने के लिए उन्होंने लड़ाई लड़ी, उसी ने उनके

सम्मान में डाक टिकट जारी किया, ब्रिटेन ने उनके निधन के 21 साल बाद उनके नाम से डाक टिकट जारी किया। रिजर्व बैंक ने पहली बार वर्ष 1969 में 100 रुपए का एक स्मारक नोट जारी किया जिसमें सेवाग्राम आश्रम में बैठे महात्मा गांधी को दिखाया गया था, लेकिन करेंसी नोट में राष्ट्रपिता की तस्वीर को नियमित रुप से प्रकाशित करने का काम 1987 में ही शुरू हो पाया था। भारत की मुद्रा पर गांधी जी का फोटो हैं। यह फोटो 1946 में खींची गई थी। साउथ अफ्रीका के पीटरमेरिट्ज़बर्ग स्टेशन पर जहां गांधी जी को धक्का मार कर ट्रेन से फेंक दिया गया था आज वहां पर गांधी जी की मूर्ति बनी हुई हैं। गांधीजी के स्वदेशी के कट्टर समर्थक होने के बावजूद उनका पहला डाक टिकट स्विटजरलैंड में छपवाया गया था। जमनालाल बजाज जी का ब्लैंक चेक हमेशा गांधी जी के पास रहता था। गांधीजी को अपनी फोटो लिया जाना पसंद नहीं था। इसके बावजूद आजादी की लड़ाई के दौरान सबसे ज्यादा उन्हीं की फोटो ली गई थी। भारत ने राष्ट्रपिता को सम्मान देने के लिए उनके जन्मदिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मान्यता दी है। मुख्यत: भारत के तीन राष्ट्रीय पर्व हैं-15 अगस्त, 26 जनवरी और 2 अक्टूबर गाँधी जयंती। अमेरिका की टाइम मैगजीन ने 1930 में महात्मा गांधी को “मैन ऑफ द ईयर” का पुरस्कार दिया था। 1999 में गांधीजी को टाइम मैगजीन द्वारा Albert Einstein के बाद 19 वी सदी का दूसरा सबसे प्रभावशाली व्यक्ति चुना गया। मार्टिन लूथर किंग 1959 में जब आपकी समाधी राजघाट आए थे तो राजघाट पर आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनकी दोनों आंखें नम हो गईं थीं। गांधी स्वच्छता को ईश्वर का दूसरा रूप मानते थे और उनके इसी दर्शन को मूर्त रूप प्रदान करने हेतु 2 अक्तूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया गया।

उपसंहार:

दुनिया के महान वैज्ञानिकों में शुमार आइंस्टीन ने कहा था कि कुछ सालों बाद लोग इस बात पर यकीन नहीं करेंगे कि महात्मा गांधी जैसा इंसान कभी भी इस धरती पर हाड़ मांस का शरीर लेकर चलता था। आप दलित एवं वंचितों के मसीहा थे। बहुत कम लोगों को पता होगा कि गांधी जी अपने दिल्ली प्रवास में ज्यादातर भंगी बस्ती में ही रहते थे। महात्मा गांधी ने दलितों को हरिजन का नाम दिया। चलिए हम सभी गांधी को नरसी मेहता द्वारा रचित उनके प्रिय गुजराती भजन से श्रद्धांजली अर्पित करते हैं –

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड पराई जाणे रे,
पर दु:खे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे ॥
सकल लोकमां सहुने वंदे निंदा न करे केनी रे,
वाच काछ मन निश्चल राखे धन - धन जननी तेनी रे ॥
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड पराई जाणे रे,

ज़िन्दगी की कहानी

बड़ी ही विचित्र है इस ज़िन्दगी की कहानी !
न तुमने जानी, न हमने जानी !
कभी फूलों का चमन है ज़िन्दगी,
तो कभी काँटों का जाल है ज़िन्दगी !

धन है, दौलत है,
फिर भी क्यों गरीब है ज़िन्दगी ...!
शान है, शोहरत है,
फिर भी क्यों खामोश है ज़िन्दगी ...!

सुखी जीवन की लालसा में,
इंसान को हैवान बनाती है ज़िन्दगी !
धन-दौलत की चाह में,
अपनों को पराया बनाती है ज़िन्दगी !

कभी खुशियों का सागर है ज़िन्दगी,
तो कभी दुखों का पहाड़ है ज़िन्दगी !
कठिन से कठिन राहों पर,
चलना सिखाती है ज़िन्दगी !

जमीन से आसमां तक, पहुँचाती है ज़िन्दगी !
बड़ी ही विचित्र है इस ज़िन्दगी की कहानी !
न तुमने जानी, न हमने जानी...!

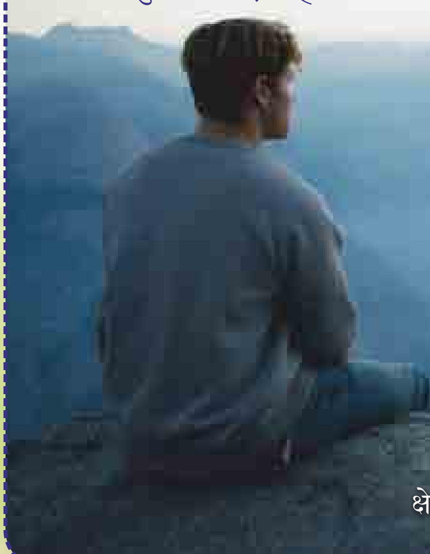

वैभव शर्मा
सहायक प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा

कोरोना की चुनौती

आंख मूंद कर जिए जा रहे थे
अहंकार मानवता पर भारी था,
समझ बैठे थे खुद को महादेव
विष भी अमृत की तरह पिए जा रहे थे ।।

एक झटके ने झिंझोड़ दिया है
नस नस तक निचोड़ दिया है,
अहंकार सारा काँप रहा है
अब तो विज्ञान भी हाँफ रहा है ।।

जाने कितने घर बार गए अब
जाने कितने दरबार मिटे अब,
ध्यान रहे, न अभिमान अब अपनाना है
पर फिर से उम्मीद जगाना है ।।

प्रकृति बनी है सब से मिलकर
विषाणु अकेले क्या मजा पाएगा,
जरा देखें श्रेष्ठ मानव अब
तू क्या है और तू क्या कर पाएगा ।

नीरज कुमार तिवारी
वरिष्ठ प्रबन्धक
क्षेत्रीय कंप्यूटर केंद्र, राँची

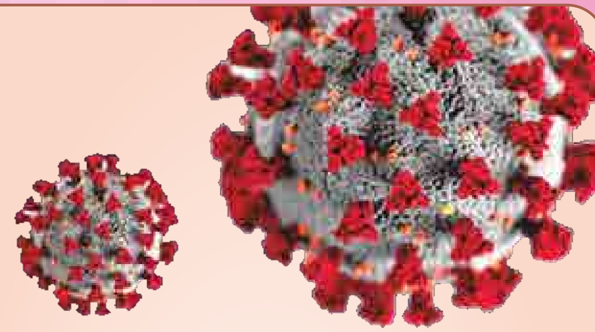

कोरोना से बचो ना ....

कोरोना से डरो ना ...सुबह जल्दी उठो ना ...
व्यायाम हर रोज करो ना ...
ताजा आहार खाओ ना ...
इसे आदत जरूर बना लेना
फिर कोरोना से क्यों डरना ?
साफ सफाई बरतो ना
हमेशा हाथ धोते रहो ना
मुख कवच लगाए रखो ना
किसी से गले मत मिलो ना
आपस में दो गज़ दूरी रखो ना
दूर से टाटा – बाई बाई कर लेना ...
इसे आदत जरूर बना लेना
फिर कोरोना से क्यों डरना ?
हमारे पुरखों ने सिखाया है ना
जड़ी-बूटी का काढ़ा बनाना
घर-घर के बूढ़ों ने रोज़ाना
पाला नहीं बच्चों को इसे पिलाए बिना
रोग प्रतिरक्षा दिन चर्या में ही थी ना ....
इसे आदत जरूर बना लेना
फिर कोरोना से क्यों डरना ?

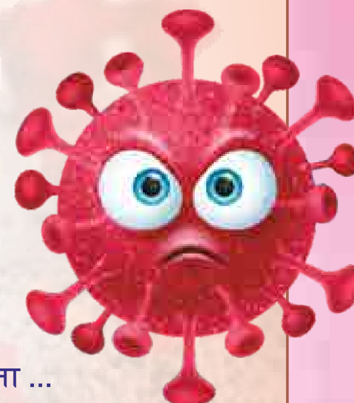

अणिमा. आर
मुख्य प्रबन्धक
ग्राहक सेवा विभाग
केन्द्रीय कार्यालय, चेन्नै

बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन : समस्याएँ व समाधान

आर. रंगराजन
सहायक महा प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

भारिबैं सहित हर बैंक में राजभाषा विभाग है। वित्तीय सेवाएं विभाग से सतत रूप से राजभाषा कार्यान्वयन सबंधी दिशानिर्देश आते रहते हैं। संसदीय समितियों का सतत रूप से दौरा चलता रहता है। गृह मंत्रालय से भी इस संदर्भ में अनुदेश जारी होते रहते हैं किंतु क्या बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन सबंधी दिशानिर्देशों का पालन अक्षरश: हो रहा है? क्या 50 प्रतिशत नियम – विनियमन, अधिनियम माने जा रहे हैं? क्या 25 प्रतिशत भी ? क्या "क" क्षेत्र में स्थिति कार्यालयों में शत-प्रतिशत पत्राचार द्विभाषिक या हिन्दी में हो रहा है? क्या राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए जाने वाले वार्षिक लक्ष्यों को शत-प्रतिशत अनुपालन किया जाता है? अगर नहीं तो क्यों? आइए सार्वजनिक क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन की वास्तविक स्थिति और समस्याओं और इसके निदान और अन्य जानकारियों का अध्ययन करते हैं।

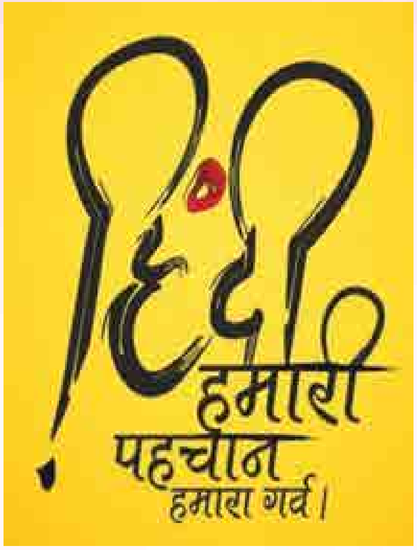

राजभाषा कार्यान्वयन की वास्तविक स्थिति :-

वास्तव में अगर सच्ची बात कहें तो पूरा बैंकिंग सेक्टर राजभाषा दिशानिर्देशों के अनुपालन के प्रति गंभीर नहीं है। बैंकों में अधिकतर स्टॉफ के द्वारा जानबूझकर राजभाषायी दिशानिर्देशों का उल्लघंन किया जाता है क्योंकि पूरे बैंकिंग सेक्टर में इसके लिए कहीं कोई स्पष्ट जवाबदेही निर्धारित नहीं है और यदि है भी तो नाम मात्र की हालांकि कई बार नियमों में उल्लघंन इसलिए भी होता है क्योंकि संबंधित स्टॉफ को नियमों की जानकारी नहीं होती है।

कर्मचारियों को हिन्दी में काम करना है इसके लिए एक पूरा का पूरा विभाग बनाया गया है। हर जगह बताया जाता है कि कर्मचारी हिन्दी में कार्य करे और राजभाषा को प्रोत्साहन दे और साथ ही साथ हर जगह कर्मचारी को हर जगह हिन्दी में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रोत्साहन दिया जाता है फिर भी कर्मचारियों द्वारा अंग्रेजी में कार्य किया जाता है जो कि न तो संविधान सम्मत है और न ही सेवा निदेशों के। यहां पर यह भी स्पष्ट करना जरूरी है कि अंग्रेजी को वैकल्पिक रूप से प्रयोग किया जा सकता है किंतु हिन्दी का प्रयोग करना संवैधानिक बाध्यता है और अनिवार्य भी है।

वास्तविक धरातल पर देखा जाए तो जो रिपोर्टें भेजी जा रही हैं वो वास्तविकता से काफी दूर हैं और वास्तविक स्थिति काफी शोचनीय है। हिंदी की अधिकतम रिपोर्टों में विंडों ड्रेसिंग आम है। आम तौर पर यह माना जाता है कि हिन्दी का काम करना राजभाषा अधिकारी की जिम्मेदारी हैं इसलिए यहाँ पर यह स्पष्ट करना जरूरी है कि सभी कर्मचारियों को हिंदी का काम नहीं करना है बल्कि हिन्दी में काम करना है और राजभाषा अधिकारी सिर्फ सहायक अधिकारी है जो कि आप की हिन्दी कार्यान्वयन में सहायता करता है।

वास्तविक कार्यान्वयन हेतु कुछ उपाय:

राजभाषा के संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति के लिए शायद समय आ गया है कि पुन: नए सिरे से सोचा जाए और उसी हिसाब से नीतियों का निर्धारण किया जाए। मेरे हिसाब से अगर निम्न मुद्दों पर विचार किया जाए तो शायद राजभाषा कार्यान्वयन संतोषजनक हो सकता है और निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है-

1. टाइपिंग में सुधार राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। इंडिक सॉफ्टवेयर में कर्मचारी काफी सहज हैं। मेरा मानना है कि हर कर्मचारी को तीन माह तक सतत रूप से एक घंटे प्रतिदिन का हिंदी टंकण प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाए। यह एक मद ऐसी है जो कि राजभाषा कार्यान्वयन में मील के पत्थर का काम करेगी।

2. गंगा हमेशा ऊपर से नीचे की ओर बहती है लेकिन राजभाषा कार्यान्वयन में हम उल्टी गंगा बहाने की कोशिश करते हैं । अगर उच्चतम स्तर पर हिंदी को प्रोत्साहित किया जाए तो निश्चित रूप से राजभाषा कार्यान्वयन को एक दिशा मिल सकती है।

3. अक्सर देखा जाता है कि केन्द्रीय कार्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा अधिकारी को भेजा जाता है जो कि स्केल । अथवा ।। स्तर का अधिकारी होता है वस्तुत: अच्छा यह होगा कि यदि संबंधित विभाग से कार्यान्वयन करवाया

जाए जैसे कि कम्प्यूटरों में हिंदी इंस्टालेशन के लिए राजभाषा विभाग, केन्द्रीय कार्यालय द्वारा संबंधित विभाग जैसे आइटी विभाग को लिखा जाए और आइटी विभाग से सॉफ्टवेयर को इंस्टालेशन या वेबसाइट के संबंध में रिपोर्ट मांगी जाए न कि राजभाषा अधिकारी से।

4. शाखाओं की रिपोर्टिंग को डॉयरेक्ट क्लोजिंग से संबद्ध किया जाए एवं इस संबंध में शाखा प्रबंधक की जिम्मेदारी निर्धारित की जाए।

5. शाखाओं एवं नियंत्रक कार्यालयों में जितने भी प्रकार के ऑडिट होते हैं जैसे कि सांविधिक लेखा या संगामी लेखा, सीओ इंस्पेक्शन, एनुअल ऑडिट सभी में राजभाषा कार्यान्वयन की मदों के ऑडिट को भी शामिल किया जाए और संबंधित विभागों की जिम्मेदारी निर्धारित की जाए।

6. अक्सर देखा जाता है कि दबाव के कारण या अन्य कारणों से मंत्रालय की रिपोर्टिंग में सही डेटा नहीं भरा जाता है जबकि मंत्रालय को भेजी गई रिपोर्टों के आधार पर ही राजभाषा की नीतियां बनाई जाती हैं और लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं इसलिए सबसे अधिक जरूरी है कि हम वित्तीय सेवाएँ विभाग तथा गृह मंत्रालय को हिन्दी की वास्तविक स्थिति को बताएँ जिससे कि वे उचित नीतियाँ बनाएँ और सक्षम कार्रवाई कर सकें।

7. मेरा व्यक्तिगत रूप से मानना है कि जब तक राजभाषा को अकाउंटेबिलिटी से नहीं जोड़ा जाता है और कर्मचारियों में इसके प्रति जवाबदेही निर्धारित नहीं की जा सकती है तब तक राजभाषा का उत्कृष्ट कार्यान्वयन असंभव है।

8. बैंक सेवा में भर्ती के लिए हिन्दी को अनिवार्य बनाया जाना है और जिस प्रकार से अंग्रेजी भाषा ज्ञान का पेपर अनिवार्य है उसी प्रकार से हिंदी भाषा ज्ञान को अनिवार्य किया जाए। हालांकि इस मद को दृढ़ राजनैतिक इच्छा शक्ति के आधार पर ही लागू किया जा सकता है।

9. हिन्दी भाषा ज्ञान एवं राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित प्रशिक्षणों को सतत रूप से बढ़ाया जाना है। जितनी अधिक कार्यशालाएँ एवं प्रशिक्षण होंगे लोगों को उतना ही राजभाषा नियमों/ अधिनियमों और भाषा की संवैधानिक प्रयोग के बारे में पता चलेगा।

10. समस्त प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को हिंदी माध्यम से ही प्रदान किया जाए। प्रशिक्षण सामग्री का अनुवाद इस प्रकार किया जाए ताकि कर्मचारी इसमें सहज हो। अनुवाद में बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाना है।

11. राजभाषा कार्यान्वयन का दायित्व संबंधित केन्द्रीय कार्यालय के विभागों द्वारा किया जाए और उनके द्वारा ही निचले स्तर पर

कार्यान्वयन सुनिश्चित करवाया जाए। जैसे स्टेशनरी के लिए जीएडी केन्द्रीय कार्यालय द्वारा, वेबसाइट एवं फॉण्ट संबंधी विषयों को आइटी विभाग द्वारा, अग्रिमों में अग्रिम विभाग केन्द्रीय कार्यालय द्वारा सुनिश्चित करवाया जाए एवं इन विभागों से रिपोर्टों को प्राप्त किया जाए एवं डीएफएस को प्रस्तुत किया जाए।

12. रिपोर्टों की विंडो ड्रेसिंग बंद करवाई जाए एवं सही रिपोर्टों को भरने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

13. निरीक्षणों की संख्या बढ़ाई जाए। राजभाषा कार्यान्वयन में निरीक्षण एक अहम भूमिका निभाता है। निरीक्षण के दौरान शाखा में कार्यान्वयन की स्थिति का पता चलता है जिससे कि राजभाषा संबंधी अनुदेश जारी करने में मदद मिलती है। निरीक्षण न केवल क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा बल्कि केका द्वारा, अंचल कार्यालय द्वारा, नराकास एवं डीएफएस के द्वारा भी सतत रूप से किया जाना चाहिए।

14. कर्मचारियों को हिंदी का कार्य करने की अपेक्षा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

15. अब जबकि बैंक में आवेदन, मंजूरी, कार्यालय नोट सब कुछ ऑनलाइन ही हो रहा है तो सबसे अधिक जरूरी चीज है कि हम भाषा को डिजिटल रूप से प्रमोट करें। अगर राजभाषा को डिजिटल रूप से प्रमोट नहीं किया जाएगा तो राजभाषा कार्यान्वयन नहीं हो सकता।

16. चूंकि आज की बैंकिंग डिजिटल बैंकिंग में बदल चुकी है इसलिए हिंदी की प्रकृति को भी डिजिटल करना होगा। वर्तमान में किए गए प्रभाव उतने अधिक प्रभावशाली नहीं है जितनी आवश्यकता है। अगर हिंदी का प्रभावशाली कार्यान्वयन करना है तो हिंदी को डिजिटल रूप से प्रमोट करना ही होगा।

राजभाषा कार्यान्वयन और लाभप्रदता:

कुछ स्टॉफ का मानना है कि राजभाषा विभाग बैंक की लाभप्रदता से नहीं जुड़ा है जबकि यह सिर्फ एक मिथक है क्योंकि अन्य कई विभाग भी प्रत्यक्ष रूप से सिर्फ अनुपालन के लिए ही हैं और कंट्रोलिंग ऑफिस अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए होता है न कि लाभप्रदता के लिए और अधिकतर विभाग सिर्फ शाखा एवं केन्द्रीय कार्यालय के बीच मध्यस्थ एवं डेटा सेंटर के रूप में ही काम करते हैं किंतु राजभाषा विभाग प्रत्यक्ष रूप से एवं अप्रत्यक्ष रूप से बैंक की लाभप्रदता एवं बैंक की प्रतिष्ठता से जुड़ा हुआ है। यह एक मात्र विभाग है जो प्रत्यक्ष रूप से वित्तीय सेवाएँ विभाग के अधीन काम करता है और सरकारी दिशा निर्देशों के अनुपालन को सुनिश्चित करवाता है। राजभाषा विभाग द्वारा अनुवाद कार्य किया जाता है जिसे कि यदि आउटसोर्सिंग से करवाया जाए तो यह काफी मंहगा पड़ता है, साथ ही साथ विविध प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम यथा आइओबी प्रवीण एवं हिंदी कार्यशालाएं राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित की जाती हैं जबकि शिक्षण कार्य के लिए क्या वेतनमान हैं वो सर्वविदित हैं। राजभाषा विभाग विविध पत्रिकाओं का प्रकाशन कार्य करता है जिसके लिए लाखों करोड़ों रुपए देने पड़ेंगे तो साथ – साथ राजभाषा अधिकारी अपनी उत्कृष्ट कोटि की रचना को बैंक के लिए समर्पित करता है जिस लेखन कार्य के लिए लेखकों को लाखों की रायल्टी मिलती है। राजभाषा विभाग अपने आप में एक बेहतरीन इवेंट आर्गनाइज़र होता है जिसके लिए लोगों को लाखों रुपए खर्च करने पड़ते हैं। इन सबके अलावा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी जितनी भी जिम्मेदारी होती हैं वो विभाग की होती है और राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित सभी अनुपालन को सुनिश्चित करना विभाग की जिम्मेदारी होती है। यह विभाग एक मात्र ऐसा विभाग होता है जो कि सबसे कम सपोर्ट के साथ और सबसे अधिक लगन के साथ काम करता है। गिनवाने बैठूं तो हजारों काम ऐसे निकलेगें जोकि विभाग को अन्य विभागों से बेहतर साबित करते हैं।

राजभाषा विभाग बैंक को भारत सरकार से जो पुरस्कार दिलवाता है उसका कोई मूल्य नहीं है और करोड़ों रूपए खर्च करके भी वो पुरस्कार प्राप्त नहीं किए जा सकते हैं और राजभाषा विभाग द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर जो लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं उनके आयोजन, पुरस्कार को रुपयों के आधार पर नहीं मापा जा सकता और इन सबके अलावा विभाग बैंक कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा के साथ अन्य छिपी प्रतिभा को भी निखारने में सहायता करता है।

आखिरी बात:

अगर हिन्दी भाषी राज्यों की बात करें तो यहां पर अधिसंख्यक जनसंख्या हिन्दी से बखूबी वाकिफ है किंतु फिर भी बैंक अपना विज्ञापन अंग्रेजी में करते हैं जिससे कि वह विज्ञापन मूल्यहीन हो जाता है। यह एक सच्चाई है जो कि अंग्रेजी जानने वाला बैंकर या तो जानना नहीं चाहता या जानकर भी अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए करता है। स्टेशनरी में करोड़ों रूपए खर्च किए जाते हैं किंतु अंग्रेजी में छपी स्टेशनरी को आम पब्लिक समझ ही नहीं पाती और वे शाखा कर्मचारियों की सहायता से ही बार – बार पूछकर फार्म भरते हैं। उत्तर भारत में अधिकतर खाता खोलने वाले फार्मों में जो अंग्रेजी में विजिलेंस प्लेज लगती है उसे अधिकतर ग्राहक खाता खोलने का फार्म समझते हैं और उन्हें पता ही नहीं होता कि इसका मतलब क्या है तो विजिलेंस प्लेज का अर्थ ही समाप्त हो जाता है। अग्रिमों एवं थर्ड पार्टी प्रोडक्ट में अंग्रेजी में लिखी शर्तों को बहुसंख्यक ग्राहक समझ ही नहीं पाते फिर यह लाखों रुपए की बर्बादी क्यों? जब अंग्रेजी में लिखे विज्ञापनों को आम जनता समझ ही नहीं पाती तो लाखों एवं करोडों रुपए की बर्बादी क्यों हो रही है? हिन्दी के एक अक्षर के लिए अंग्रेजी के तीन या चार अक्षर लिखे जाते हैं क्ष के लिए – ksh, त्र के लिए tra, ज्ञ के लिए gya, छ के लिए chha, ख के लिए kha एवं घ के लिए gha तो बताइए किस भाषा में कम स्टेशनरी लगेगी। कुछ लोग हम पर अंग्रेजी थोप रहे हैं। अंग्रेजी सिर्फ वैकल्पिक भाषा है यहाँ तक कि यह आठवीं अनुसूची में भी नहीं है, हिन्दी में काम करने व करवाने के लिए विभिन्न विभाग कार्य कर रहे हैं। आपको हर जगह हिंदी में काम करना है बताया जा रहा है लेकिन मुझे दिखाई पड़ रहा है कि आप अंग्रेजी के बोझ तले दबते जा रहे हैं, अंग्रेजी ने आप को दबा दिया है, अब आप मजबूर हैं, असहाय हैं लेकिन अंग्रेजी का बोझ आप पर इस कदर चिपक गया है अब आप चाहकर भी इससे मुक्त नहीं हो सकते, आप थकेंगे, फिर भी अंग्रेजी ही लेकर चलेंगे। हिंदी अपनाइए, हल्का महसूस करेंगे, हिंदी में काम करिए अच्छा लगता है।

गांव-गली-खेत का कवि : अदम गोंडवी

कश्मीर सिंह
सहायक महा प्रबन्धक
आंचलिक लेखा परीक्षा कार्यालय, हैदराबाद

"हिंदी कविता में जब कुछ बड़े कवियों की धूम मची थी, 'अदम गोंडवी' अपने श्रोताओं और पाठकों को गांवों की उन तंग गलियों में ले गए जहां जीवन उत्पीड़न का शिकार हो रहा था।"

बाईस अक्तूबर 1947, एक स्मरणीय दिवस था, जिस दिन गोस्वामी तुलसीदास के गुरु स्थान सूकर क्षेत्र के करीब परसपुर (गोंडा) के आटा ग्राम में स्व. श्रीमती मांडवी एवं श्री देवी कलि सिंह के घर में एक पुत्ररत्न का जन्म हुआ। माता-पिता ने जिनको राम नाथ सिंह नाम दिया लेकिन वे बाद में "अदम गोंडवी" के नाम से सुविख्यात हुए। पारिवारिक पृष्ठभूमि कमजोर होने के कारण केवल प्राइमरी तक की शिक्षा पाने के बाद उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। बचपन से ही कवितापाठ की ओर उनका झुकाव था। अवसर मिलने पर वे आसपास के मुशायरों व कवि सम्मेलनों में जाने लगे थे।

"वाणी" के ही एक अंक में 'साहित्य का सफरनामा' नामक स्तम्भ के अंतर्गत हिन्दी ग़ज़ल के जनक "दुष्यन्त कुमार" पर मेरा एक आलेख प्रकाशित हुआ था। इस लेख में इस बात का उल्लेख किया गया था कि जिस काल में ग़ज़लें प्रेम, मुहब्बत, आशिक़ी की शोखी में डूबी हुई थी उस समय दुष्यंत जी ने ग़ज़ल को मुहब्बत और आशिक़ी की दुनिया से बाहर निकाल कर, उसे सामाजिक प्रतिकार की आवाज बनाई थी। "दुष्यन्त कुमार" मात्र 42 वर्ष की आयु में ही स्वर्ग सिधार गए थे। उस समय साहित्यिक क्षेत्र में इस बात के पूरे कयास लगाए जाते थे कि "दुष्यन्त कुमार" के निधन के साथ ही हिन्दी ग़ज़ल अनाथ हो गई है।

इन्हीं गोंडवी जी ने "दुष्यन्त कुमार" जी की परम्परा को जीवित रखा। एक गरीब किसान परिवार में जन्मे "अदम गोंडवी" के खेतों में हल चलाने वाले हाथ जब गज़ल लिखते थे तो आम लोगों के दिल में दर्द के बीज, अपने आप ही अंकुरित होते थे। "अदम गोंडवी" उत्तर प्रदेश के वे दूसरे भारतीय कवि थे जिन्होंने हिंदी में जो गज़लें, कविताएँ लिखीं, वो हाशिए की जातियों, दलितों, गरीब लोगों की दुर्दशा का प्रतिनिधित्व करती हैं। गोंडवी की कविता समाज में व्याप्त असमानता, गरीबी, भ्रष्ट राजनीति और भ्रष्ट राजनेताओं के प्रति आक्रोश के लिए जानी जाती है।

'अदम गोंडवी' लय, तुक और शब्दों की कारस्तानी से हटकर जनता के जीवन को उसके कच्चे रूप में ही सबके सामने रख देते थे। वे जनता के दुख-दर्द को गाते थे। ऐसे समय में, जब राजनीतिक गलियारों में चाटुकारिता अपने चरम पर हो, 'राजनीति' उद्योगपतियों के घरों की लौंडी बनी हो और भ्रष्ट राजनेताओं का बोलबाला हो, तब राजनेताओं को केंद्र में रखकर लिखी गई यह कविता बस 'अदम गोंडवी' ही कह सकते थे .....

"काजू भुने प्लेट में विस्की गिलास में,
उतरा है रामराज विधायक निवास में।
पक्के समाजवादी हैं तस्कर हों या डकैत,
इतना असर है खादी के उजले लिबास में।
आजादी का वो जश्न मनाएँ तो किस तरह,
जो आ गए फुटपाथ पर घर की तलाश में।
पैसे से आप चाहें तो सरकार गिरा दें,
संसद बदल गई है यहाँ की नखास में।
जनता के पास एक ही चारा है बगावत,
यह बात कह रहा हूँ मैं होशो-हवास में।

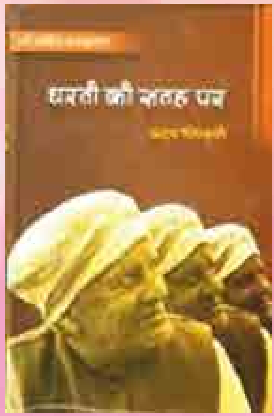

सामाजिक विषमता और विद्रूपता हमारे समाज में सदियों से सिर उठाये खड़ी है। सरकार किसी की भी रही हो, मुंसिफ कोई भी रहा हो, पर गरीब परिवारों पर होने वाले अत्याचारों में कोई कमी नहीं आई। 1980 के दशक में जब हिंदी कविता के विश्वविद्यालयी जीवन में कुछ बड़े कवियों के जीवन और रचनाकर्म की धूम मची थी तो अदम अपने श्रोताओं और पाठकों को उत्तर भारत के गांवों की उन तंग गलियों में ले गए जहां दलित जीवन उत्पीड़न का शिकार हो रहा था। उन्होंने इन गलियों में जीवन के हरसंभव रूप को देखा और उसे सम्मान दिया। 'अदम गोंडवी' ने अपने श्रोताओं को न्योता दिया कि वे भी उसके हमराह बनें। सामाजिक विषमता और विद्रूपता पर करारी चोट करती एक कविता है 'मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा आपको'। जो कि शायद उनकी सबसे लम्बी कविता है। इस कविता से ये कुछ पंक्तियाँ देखिये....

"आइए महसूस करिए जिंदगी के ताप को,
मैं 'चमारों की गली' तक ले चलूँगा आपको।
जिस गली में भुखमरी की यातना से ऊब कर,

मर गई फुलिया बिचारी इक कुएँ में डूब कर।
है सधी सिर पर बिनौली कंडियों की टोकरी,
आ रही है सामने से हरखुआ की छोकरी।
चल रही है छंद के आयाम को देती दिशा,
मैं इसे कहता हूँ सरजू पार की मोनालिसा।
कैसी यह भयभीत है हिरनी-सी घबराई हुई,
लग रही जैसे कली बेला की कुम्हलाई हुई।
कल को यह वाचाल थी पर आज कैसी मौन है,
जानते हो इसकी ख़ामोशी का कारण कौन है ?
कोई हो संघर्ष से हम पाँव मोड़ेंगे नहीं,
कच्चा खा जाएँगे ज़िंदा उनको छोडेंगे नहीं।
कैसे हो सकता है होनी कह के हम टाला करें,
और ये दुश्मन बहू-बेटी से मुँह काला करें'।
बोला कृष्ना से - 'बहन, सो जा मेरे अनुरोध से,
बच नहीं सकता है वो पापी मेरे प्रतिशोध से'।
पड़ गई इसकी भनक थी ठाकुरों के कान में,
वे इकट्ठे हो गए सरपंच के दालान में।
दृष्टि जिसकी है जमी भाले की लंबी नोक पर,
देखिए सुखराज सिंह बोले हैं खैनी ठोंक कर।
'क्या कहें सरपंच भाई! क्या ज़माना आ गया,
कल तलक जो पाँव के नीचे था रुतबा पा गया।
कहती है सरकार कि आपस में मिलजुल कर रहो,
सुअर के बच्चों को अब कोरी नहीं हरिजन कहो।
देखिए ना यह जो कृष्ना है चमारों के यहाँ,
पड़ गया है सीप का मोती गँवारों के यहाँ।"

इस रचना में जिस घटना का जिक्र है वह कहानी आज भी भारत के अलग-अलग हिस्सों में बार-बार दोहराई जाती रहती है। आज़ादी मिलने के बाद भी समाज में कुछ नहीं बदला। यदि बदलता है तो बस शिकारी, शिकार तो पहले भी वही थी आज भी वही है।

देश में मेहनतकश कौम, महिलाओं की दुर्दशा और उन पर होने वाले अत्याचारों पर 'गोंडवी' जी चुप नहीं रहते। समाज के इस विशेष वर्ग द्वारा की जाने वाली बर्बरता पर उनकी लेखनी मुखर स्वर में सपाट और बेबाक बयानी करती है....

वो जिसके हाथ में छाले हैं पैरों में बिवाई है,
उसी के दम से रौनक आपके बँगले में आई है।
इधर एक दिन की आमदनी का औसत है चवन्नी का,
उधर लाखों में गांधी जी के चेलों की कमाई है।
कोई भी सिरफिरा धमका के जब चाहे जिना कर ले,
हमारा मुल्क इस माने में बुधुआ की लुगाई है।
रोटी कितनी महँगी है ये वो औरत बताएगी,
जिसने जिस्म गिरवी रख के ये क़ीमत चुकाई है।

दिल्ली की चकाचौंध से कोसों दूर गोंडा जिले के गांव आटा परसपुर में रहने वाले 'अदम गोंडवी' पेशे से किसान थे। कंधे पर अंगोछा डाल, हाथ में हल की मूठ थाम-थाम कर भले ही उनके हाथ जितने सख्त और खुरदरे रहे हों, लेकिन उनकी कलम से निकले उनकी शायरी के अल्फ़ाज़ उतने कोमल और दिल में सीधे उतर जाने वाले हैं। स्व० गोंडवी साहब के ये कोमल शब्द, कभी तो दिल पर ऐसी सख्त चोट कर जाते थे, कि उनके निशान काफी दिनों तक दिखायी देते थे। 'अदम गोंडवी' ने कहा.....

जो उलझ कर रह गई है फाइलों के जाल में,
गाँव तक वो रोशनी आएगी कितने साल में।

बूढ़ा बरगद साक्षी है किस तरह से खो गई,
रमसुधी की झोपड़ी सरपंच की चौपाल में।

खेत जो सीलिंग के थे सब चक में शामिल हो गए,
हमको पट्टे की सनद मिलती भी है तो ताल में।

जिसकी क़ीमत कुछ न हो इस भीड़ के माहौल में,
ऐसा सिक्का ढालिए मत जिस्म की टकसाल में।

"रामनाथ सिंह उर्फ़ 'अदम गोंडवी'", यही वह नाम है जो दुष्यंत कुमार, नागार्जुन व धूमिल की परंपरा के कवियों में शुमार है। उन्होंने अपनी धारदार कविताओं के माध्यम से आम हिन्दुस्तानी के विचारों को शब्द दिए। उनकी कलम ने कभी राजनीति पर कटाक्ष किया तो कभी आम आदमी की परेशानियों को कलमबद्ध किया। उनकी रचनाएँ आम आदमी, विशेषकर दलितों, शोषितों, वंचितों और उत्पीड़ित आदमी की व्यथा है। उन्होंने आजादी मिलने के 30 साल बाद के इस वर्ग की स्थिति को कुछ तरह प्रस्तुत किया ....

घर में ठंडे चूल्हे पर अगर खाली पतीली है,
बताओ कैसे लिख दूँ धूप फागुन की नशीली है।
भटकती है हमारे गाँव में गूँगी भिखारन-सी,
सुबह से फरवरी बीमार पत्नी से भी पीली है।
बग़ावत के कमल खिलते हैं दिल की सूखी दरिया में,
मैं जब भी देखता हूँ आँख बच्चों की पनीली है।
सुलगते जिस्म की गर्मी का फिर एहसास हो कैसे,
मोहब्बत की कहानी अब जली माचिस की तीली है।

अदम उन कवियों में थे, जो शायरी को एक मकसद की तरह लेते थे। जो कुछ समाज में हो रहा है, वो उन्हें अपनी रचनाओं के माध्यम से

उठाते थे। अदम गोंडवी की रचनाओं की भाषा सहज है या यूँ कहें कि वह जनता की ही भाषा है। वह जनता के बीच से, जनता की बात करते थे। वह गरीबी की बात करते तो भूख और रोटी की भी बात करते थे। यही एक सबसे बड़ी वजह है जो उन्हें लोक कवि की श्रेणी में रखती है । देखिये उनकी यह बानगी भी .....

वेद में जिनका हवाला हाशिए पर भी नहीं,
वे अभागे आस्था विश्वास ले कर क्या करें।

लोकरंजन हो जहाँ शंबूक-वध की आड़ में,
उस व्यवस्था का घृणित इतिहास ले कर क्या करें।

कितना प्रगतिमान रहा भोगे हुए क्षण का इतिहास,
त्रासदी, कुंठा, घुटन, संत्रास ले कर क्या करें।

बुद्धिजीवी के यहाँ सूखे का मतलब और है,
ठूँठ में भी सेक्स का एहसास ले कर क्या करें।

गर्म रोटी की महक पागल बना देती मुझे,
पारलौकिक प्यार का मधुमास ले कर क्या करें।

यदि हम व्यापक दृष्टि से 'अदम गोंडवी' के साहित्य को पढ़ें तो पाएंगे कि 'गोंडवी', कबीर, निराला, मुक्तिबोध, दुष्यंत, नागार्जुन और धूमिल सब के सब एक ही गोत्र के शायर हैं। लेकिन जब मैं 'गोंडवी' जी पढ़ता हूँ तो मुझे वे 'दुष्यंत कुमार' अधिक निकट लगते हैं। उन्होंने वर्तमान व्यवस्था के यथार्थ को स्वर देते हुए उसके खिलाफ विद्रोह की कविता लिखी।

जिनके चेहरों पर लिखी थी जेल की ऊंची फ़सील,

रामनामी ओढ़ के संसद के भीतर आ गए।

ये अमीरों से हमारी फैसलाकुन जंग थी,

फिर कहाँ से बीच में मस्जिद ओ मंदर आ गए।

'अदम' की शायरी फुलिया, हरखु, सरजु, सुकई, मंगरे, जुम्मन, घिसियावन, बुधुआ, मंगल और कृष्णा से बतियाती हुई बगावत का बिगुल बजाते हुए संसद को ललकारती है। वह कहते हैं कि जनता के पास एक ही चारा है बगावत । उन्होंने न केवल शायरी की, बल्कि शायरी को जिया भी। देखते हैं उनकी यह ग़ज़ल ....

तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है,
मगर ये आँकड़े झूठे हैं ये दावा किताबी है।

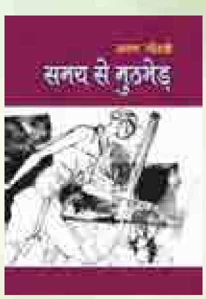

उधर जमहूरियत का ढोल पीटे जा रहे हैं वो,
इधर परदे के पीछे बर्बरीयत है, नवाबी है।

लगी है होड़-सी देखो अमीरी औ' गरीबी में,
ये गांधीवाद के ढाँचे की बुनियादी खराबी है।

तुम्हारी मेज चाँदी की तुम्हारे ज़ाम सोने के,
यहाँ जुम्मन के घर में आज भी फूटी रक़ाबी है।

वैसे तो 'गोंडवी' साहब के निशाने पर हमेशा राजनैतिक लोग ही ज्यादा रहे लेकिन वे जाति और धर्म के आधार पर समाज में होने वाले भेदभाव से बहुत ज्यादा आहात थे। एक ख़ास बात और है जो 'गोंडवी' और 'दुष्यंत' के बारे में बहुत मायने रखती है और उन्हें एक ही खाप का कवि स्थापित करती है वह, ये कि ये दोनों ही न तो किसी दलित जाति से ताल्लुक रखते थे और न ही मुस्लिम धर्म से । बावजूद इसके इन दोनों ने ही जातिवाद एवं हिन्दू-मुस्लिम एकता को निशाना बनाने वाले राजनीति दलों और राजनेताओं पर करारे व्यंग्य किये । आइये देखिये इस ग़ज़ल में क्या कहा 'गोंडवी' जी ने .....

हिंदू या मुस्लिम के अहसासात को मत छेड़िए,
अपनी कुरसी के लिए जज्बात को मत छेड़िए।

हममें है कोई हूण, कोई शक, कोई मंगोल है,
दफ़्न है जो बात, अब उस बात को मत छेड़िए।

ग़लतियाँ तो बाबर की थी, जुम्मन का घर फिर क्यों जले,
ऐसे नाज़ुक वक़्त में हालात को मत छेड़िए।

हैं कहाँ हिटलर, हलाकू, जार या चंगेज़ ख़ाँ,
मिट गए सब, क़ौम की औक़ात को मत छेड़िए।

छेड़िए इक जंग, मिल-जुल कर गरीबी के खिलाफ़,
दोस्त मेरे, मजहबी, नग़मात को मत छेड़िए।

राजनीति, राजनीतिज्ञों और देश के हालात पर भी एक ग़ज़ल के कुछ अशआर पेश हैं ....

आँख पर पट्टी रहे और अक़्ल पर ताला रहे,
अपने शाहे-वक़्त का यूँ मर्तबा आला रहे।
तालिबे-शोहरत हैं कैसे भी मिले मिलती रहे,
आए दिन अख़बार में प्रतिभूति घोटाला रहे।
एक जन सेवक को दुनिया में अदम क्या चाहिए,
चार छह चमचे रहें, माइक रहे, माला रहे।

इस देश का समाज है जिसने गोरखनाथ, चंडीदास, कबीर, रहीम, जायसी, मीरा, सूर, तुलसी, घनानंद, टैगोर, निराला और नागार्जुन की रचनाओं को बहुत ही प्यार से सहेज कर रखा है। वह अपने सुख में और दुःख में इनकी कविताएं गाता है।

आप कहते हैं सरापा गुलमुहर है ज़िंदगी,
हम ग़रीबों की नज़र में इक क़हर है ज़िंदगी।

भुखमरी की धूप में कुम्हला गई अस्मत की बेल,
मौत के लमहात से भी तल्ख़तर है ज़िंदगी।
डाल पर मज़हब की पैहम खिल रहे दंगों के फूल,
ख़्वाब के साए में फिर भी बेख़बर है ज़िंदगी।
रोशनी की लाश से अब तक जिना करते रहे,
ये वहम पाले हुए शम्सो-क़मर है ज़िंदगी।
दफ़्न होता है जहाँ आ कर नई पीढ़ी का प्यार,
शहर की गलियों का वो गंदा असर है ज़िंदगी।

'अदम गोंडवी' एक ऐसे कवि थे जिन्होंने कोई महाकाव्य नहीं लिखा। उन्होंने कोई काव्य नायक सृजित नहीं किया और न ही इश्क, हुश्न, नज़ाकत, नफ़ासत और मुहाब्बत से सनी कोई नायिका ही सृजित की। बल्कि उन्होंने अपनी ग़ज़लों में इस देश की जनता के दुःख-दर्द और उसकी टूटी-फूटी हसरतों को काव्यबद्ध कर उसे समाज को ही लौटा दिया। मेरे इस मत के समर्थन में देखिये उनकी यह ग़ज़ल ...

ज़ुल्फ़ – अँगड़ाई – तबस्सुम – चाँद – आईना - गुलाब,
भुखमरी के मोर्चे पर ढल गया इनका शबाब।
पेट के भूगोल में उलझा हुआ है आदमी,
इस अहद में किसको फुरसत है पढ़े दिल की क़िताब।
इस सदी की तिश्नगी का ज़ख़्म होंठों पर लिए,
बेयक़ीनी के सफ़र में ज़िंदगी है इक अज़ाब।
डाल पर मज़हब की पैहम खिल रहे दंगों के फूल,
सभ्यता रजनीश के हम्माम में है बेनक़ाब।
चार दिन फुटपाथ के साए में रहकर देखिए,
डूबना आसान है आँखों के सागर में जनाब।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार "अदम गोंडवी" की तीन प्रमुख कृतियाँ हैं, 'गर्म रोटी की महक', 'समय से मुठभेड़' और 'धरती की सतह पर', इन सभी की वैचारिक भूमि सिर्फ और सिर्फ एक ही है। आम तौर पर लोग यही जानते हैं कि 'पृथ्वी की सतह' और 'समय के साथ मुठभेड़' काव्य संग्रह, ही उनकी दो प्रमुख कृतियाँ हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने 1998 में, उन्हें "दुष्यंत कुमार पुरस्कार" से सम्मानित किया। 2001 में उन्हें अवधी / हिंदी में उनके योगदान के लिए 'शहीद शोभा संस्थान' द्वारा "माटी रतन सम्मान" से सम्मानित किया गया।

अट्ठारह दिसंबर 2011 को पेट, के रोगों से पीड़ित होने के कारण संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ में साहित्य के इस अनोखे साधक ने इस लौकिक जगत को अलविदा कह संसार से विदा ली। गली, गाँव एवं खेत में जन्में हिन्दी ग़ज़ल को रवानी देने वाले प्रख्यात कवि को सादर – नमन – प्रणाम - सलाम।

कविता

बेटी दिवस के अवसर पर विशेष छंद

जीवन भर
सजाती हैं
ये अपनों का
संसार!
"बेटियां"
न जाने क्यों
लगती हैं
'भार'?

❖

समय, असमय
रोप दी जाती हैं
अजानी माटी में
धान की
पौध की तरह।
जलवायु
अनुकूल हो
या प्रतिकूल
सम्भलना, खिलना
और बिखरना,
इनकी नियति होती है
'बेटियाँ'
न जाने क्यों
'अभागी'
होती हैं?

पीढ़ी दर पीढ़ी
"माँ"
सिखाती रही
बेटी को
बस 'सहना'
सुख में भी,
दुःख में भी,
खुश रहना
अभावों को भी
समझ लेना
अपना
"सौभाग्य"।

❖

"माँ"
ने क्यों नहीं सिखाया?
कि बेटी ...
सच को, सच,
झूठ को, झूठ कहे!
सुख में भी,
दुःख में भी,
तटस्थ रहे!
'ससुराल' और
'मायके' जैसे
दो सशक्त
तटों के संरक्षण में
उन्मुक्त नदी सी
बहे।

कश्मीर सिंह
सहायक महा प्रबन्धक
अं.ले.प.कार्यालय,
हैदराबाद

ज्ञान के मोती

- जब आप यह जान जाते हैं कि आप आज उतने बुद्धिमान नहीं हैं जितना आप खुद को कल समझते थे , तो आप आज ज्यादा बुद्धिमान हैं।
- ईश्वर निरंतर बातें करता रहता है। लेकिन जब वह मौन हो जाता है तो मानवता बहरी हो जाती है।
- प्रार्थना ईश्वर को नहीं बदलती , लेकिन यह उसे बदल देती है जो प्रार्थना करता है।
- दुनिया विश्वास करने वालों का कैदखाना है और अविश्वासियों का स्वर्ग है।
- मनुष्य तब तक नए महासागरों की खोज नहीं कर सकता जब तक कि उसमें किनारे को दृष्टि से ओझल करने का साहस न हो।
- अगर सूर्य की तरह चमकना है तो पहले सूर्य की तरह जलो।
- कभी भी हार मत मानों क्योंकि बाधाएँ , डर की तरह , एक भ्रम मात्र होती हैं।
- जिन्दगी तो अपने दम पर ही जी जाती है , दूसरों के कंधों पर तो सिर्फ जनाजे उठाए जाते हैं।
- दया का कोई भी काम चाहे कितना भी छोटा हो , कभी बेकार नहीं जाता।
- जिस काम से खुशी मिलती है वो करो। पूरा ब्रह्माण्ड आपके लिए वहाँ दरवाजे खोल देगा जहाँ पहले दीवारें थी।
- सुख पाने की चाह आत्मा के जोश को खत्म कर देती है।
- अंत में हम अपने दुश्मनों का कहा याद नहीं रखेंगे , याद रखेंगे तो अपने दोस्तों की खामोशी।
- तारों को छू लेने की चाह एक महत्वकांक्षा है , दिलों को छू लेने की चाह अक्लमंदी है।
- जीवन में सफल होने का सबसे बढ़िया तरीका है , उस नसीहत पे काम करना जो हम दूसरों को देते हैं।
- किसी भी आदमी को उसकी सफलता के किस्सों से मत जाँचों, बल्कि केवल इससे जाँचों कि गिरने के बाद वो आदमी कितनी बार खड़ा हुआ।
- बहादुर आदमी वो नहीं है जिसे डर नहीं लगता , बल्कि वो है जो इस डर पर विजय प्राप्त कर लेता है।
- पूरी दुनिया का अंधेरा भी एक दीपक के प्रकाश को खत्म नहीं कर सकता।
- सुंदरता से हो सकता है खुशी मिल जाए , पर खुशी से हमेशा खूबसूरती मिलती है।
- सबसे छोटा कार्य सबसे महान इरादे से हमेशा बेहतर होता है।
- आप चाहे कितने भी पवित्र शब्द पढ़ लें या बोल लें , वो आपका क्या भला करेंगे जब तक आप उन्हें उपयोग में नहीं लाते।
- विपत्ति आदमी को स्वयं से मिलाती है।
- चाल चलना और विश्वासघात करना मूर्खों के काम हैं। उनके पास इतना दिमाग नहीं होता कि ईमानदारी से काम कैसे करें।
- अगर आप किसी काम के बारे में बहुत सोचते हो , तो आप वो काम नहीं कर पाओगे।
- मन एक जंगली घोड़े की तरह है और नीतियाँ लगाम की तरह जिससे इस जंगली घोड़े को काबू किया जाता है।
- संसार एक व्यायामशाला है , जिसमें हम खुद को मजबूत करने के लिए आते हैं।
- अगर आपने गिरना बंद कर दिया है तो वह, ये दर्शाता है कि आप कुछ नया नहीं कर रहे हैं।
- हजारों दीयों को एक ही दीए से बिना उसके प्रकाश को कम किए जलाया जा सकता है। खुशी बांटने से खुशी कभी कम नहीं होती।
- सत्य के मार्ग पर चलते हुए कोई व्यक्ति दो गलतियाँ कर सकता है , पहली , पूरा रास्ता तय ना करना और दूसरा , इसकी शुरुआत भी ना करना।
- जो एक अच्छा अनुयायी नहीं बन सकता , वो एक अच्छा लीडर भी नहीं बन सकता।
- एक मूर्ख जीनियस बन सकता है यदि वो समझता है कि वो मूर्ख है , लेकिन एक जीनियस मूर्ख बन सकता है यदि वो समझता है कि वो जीनियस है।

अंगकोरवाट

नेहा रंजन
सहायक प्रबन्धक, केंद्रीय कार्यालय

ऐसा माना जाता है कि आस्था का कोई नियत स्थान नहीं होता। कभी आस्था से आस्था स्थल का उद्गम होता है तो कभी आस्था –स्थल से आस्था का... और सदियों तक दोनो का संगम निरंतर रूप से चलता रहता है। ऐसी ही आस्था का स्मारक है – कंबोडिया में मीकांग नदी के किनारे सिमरिप क्षेत्र में बना “अंगकोर वाट” का प्राचीन मंदिर, जो अब तक का विश्व का सबसे बड़ा विदित धार्मिक परिसर है और 402 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। इस मंदिर के निर्माण में मिस्र के पिरामिडों के निर्माण में इस्तेमाल किए गए पत्थरों से अधिक पत्थरों का प्रयोग किया गया है और अपनी इसी विशाल बनावट की वजह से इस मंदिर का नाम गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ है। यह इस मंदिर की ख्याति का ही परिणाम है कि इसकी तस्वीर को वर्ष 1983 में कंबोडिया के राष्ट्र ध्वज पर स्थान दिया गया है।

यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल अंगकोरवाट मंदिर का निर्माण मूल रूप से एक हिन्दु मंदिर के रूप में किया गया था, जो कि 12 वीं शताब्दी के अंत तक एक बौद्ध मंदिर के रूप में परिवर्तित हो गया था और इसी वजह से इसे हिंदू- बौद्ध मंदिर के रूप में भी जाना जाता है। इसका निर्माण खमेर वंश के शासक राजा सूर्यवर्मन द्वितीय ने खमेर राज्य की तत्कालीन राजधानी यशोधरपुर (मौजूदा अंगकोर) में 12 वीं शताब्दी की शुरुआत में किया था । पिछले शासकों की शैव परंपरा से अलग हटकर , उन्होंने अंगकोरवाट मंदिर को भगवान विष्णु को समर्पित किया था। यह मंदिर खमेर वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है। अंगकोरवाट खमेर मंदिर वास्तुकला के दो मूल या बुनियादी योजनाओं का संगम है – पर्वतनुमा मंदिर और सुसज्जित मंदिर। इसका निर्माण मुख्य रूप से मेरु पर्वत, जिसे हिन्दु पौराणिक कथाओं के अनुसार देवताओं का निवास स्थान माना जाता है , के रूप में किया गया था। यह 5 किलोमीटर (3 मील) से अधिक लंबी खाई के भीतर स्थित है , जिसकी बाहरी दीवार 3.6 किलोमीटर (2.2 मील) लंबी है। मंदिर के केंद्र में मीनारों का एक समूह मौजूद है । अधिकांश अंगकोरियाई मंदिरों के विपरीत , अंगकोरवाट पश्चिमोन्मुखी है।

व्युत्पति :

अंगकोरवाट, जो कि खमेर भाषा का एक शब्द है, का अर्थ “मंदिरों का शहर” है। यह दो शब्दों का संगम है : अंगकोर जिसका अर्थ है “शहर” या “राजधानी शहर” + वाट जिसका अर्थ है “मंदिर का मैदान “ या “बाड़ा”।

अंगकोरवाट मंदिर का मूल नाम “वराह विष्णुलोका “या” परम विष्णुलोका” है जिसका अर्थ विष्णु का पवित्र निवास स्थान है।

इतिहास :

अंगकोर वाट सियम रीप नामक आधुनिक शहर के 5.5 किलोमीटर उत्तर में और पिछली राजधानी बापहोन से कुछ दूरी पर स्थित है। कंबोडिया स्थित अंगकोरवाट मंदिर के निर्माण के संबंध में कई लोक कथाएँ व किवंदतियाँ मौजूद है । कुछ लोगों का मानना है कि स्वयं देवराज इंद्र ने महल के तौर पर अपने बेटे के लिए इस मंदिर का निर्माण करवाया था। 13वीं शताब्दी के चीनी यात्री झो डागुआन के अनुसार इस मंदिर का निर्माण महज एक ही रात में किसी अलौकिक सत्ता के हाथ से हुआ था। यह सब तो इस महल रूपी मंदिर से जुड़ी लोक कहानियाँ है। वास्तव में इस मंदिर का इतिहास बौद्ध और हिंदू दोनो ही धर्मो से बहुत निकटता से जुड़ा है। इस विशाल मंदिर का प्रारंभिक डिजाइन व निर्माण खमेर वंश के हिन्दु शासक राजा सूर्यवर्मन द्वितीय के शासनकाल के दौरान 12वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ था। यह मंदिर विष्णु को समर्पित था और तत्कालीन शासक के राज्य मंदिर और राजधानी शहर के रूप में निर्मित था। अंगकोर मंदिर के निर्माण के पीछे इसे बनवाने वाले राजा सूर्यवर्मन द्वितीय का एक खास मकसद भी जुड़ा हुआ था। दरअसल राजा सूर्यवर्मन हिन्दू देवी-देवताओं से नजदीकी बढ़ाकर अमर बनना चाहता था। इसलिए उसने अपने लिए एक विशिष्ट पूजा स्थल बनवाया जिसमें त्रिदेव यानि ब्रह्मा, विष्णु व शिव की पूजा – अर्चना होती थी। चूँकि इस मंदिर के संबंध में कोई समकालीन शिलालेख नहीं पाए गए, अतः इस मंदिर का मूल नाम अज्ञात है। परंतु मंदिर में स्थापित विष्णु की मूर्ति की वजह से यह कालांतर में “ वारह विष्णु लोक” के नाम से विख्यात हुआ।

यह मंदिर मौलिक रूप से हिन्दु धर्म से जुड़ा एक पवित्र स्थल था , जो कि 12वीं शताबदी के उतरार्ध तक आते- आते बौद्ध धार्मिक स्थल के रूप में परिवर्तित हो गया । इतिहास के नज़रिए से देखा जाए तो कंबोदेश में कुल 27 शासकों ने शासन किया था जिनमें से कुछ हिन्दु तो कुछ बौद्ध थे और यही कारण है कि कंबोडिया में हिन्दु और बौद्ध दोनो धर्मों से जुड़े मंदिर व मूर्तियाँ पायी जाती है। कंबोडिया स्थित अंगकोर वाट एकमात्र ऐसा स्मारक है जहाँ ब्रह्मा , विष्णु एवं शिव की मूर्तियाँ एक साथ विद्यमान हैं। इस मंदिर की सबसे खास बात यह है कि यह विश्व का सबसे बड़ा विष्णु मंदिर है जिसकी दीवारें रामायण व महाभारत जैसे धर्मग्रंथों से जुड़ी कहानियाँ कहती हैं। जब बौद्ध धर्मावलंबियों ने इस स्थान पर अपना आधिपत्य कायम किया तब से लेकर अब तक यहाँ बौद्ध धर्म की महायान शाखा के देवता अवलोकितेश्वर की पूजा होती है। 13वीं शताब्दी के आखिर तक आते-आते अंगकोर वाट की संरचना को संवारने का काम भी शिथिल पड़ता गया। इसी समय थेरवाद बौद्ध धर्म के प्रभाव के अंतर्गत एक संयमित धर्म का उदय होने लगा। इसी दौरान अंगकोर और खमेर साम्राज्य पर आक्रमण बढ़ने लगे और 16वीं शताब्दी के आगमन के पहले ही अंगकोर का सुनहरा अध्याय लगभग समाप्त हो गया और इसके साथ –साथ वहाँ स्थित अन्य प्राचीन मंदिर भी खंडहर में तबदील हो गए। 15वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी ई. तक थेरवाद के बौद्ध साधुओं ने अंगकोर वाट मंदिर की देखभाल की। बाद की सदियों में अंगकोर वाट गुमनामी के अंधेरे में लगभग खो सा गया था। 19वीं शताब्दी के मध्य में एक फ्रांसी अन्वेषक और प्रकृति विज्ञानी हेनरी महोत ने अंगकोर की गुमशुदा नगरी को फिर से ढूंढ निकाला और एक बार फिर से दुनिया के सामने इस बेशकीमती धरोहर को पेश किया।

वास्तुकला :

13º24'45" उत्तर व 103º52'0" पूर्व में स्थित अंगकोरवाट पर्वतनुमा मंदिर और संकेंद्रित गैलरी योजना का एक अनूठा संयोजन है। यह मंदिर देवताओं के निवास स्थान माउंट मेरु का प्रतीक है। मंदिर के केंद्र में मौजूद मीनारों का समूह मेरु पर्वत के पाँच चोटियों का प्रतीक है , वहीं इसकी दीवारें व मंदिर में मौजूद खाई मेरु पर्वत के आसपास की पर्वत शृंखलाओं और समुद्र के प्रतीक हैं। अधिकांश खमेरकालीन मंदिरों के विपरीत, अंगकोरवाट पश्चिमोन्मुखी है। अंगकोरवाट में हिंदू पौराणिक कहानियों से संबंधित नक्काशी कार्य लगभग 1200 वर्ग मीटर तक फैला हुआ है। इन नक्काशीयों के माध्यम से उकेरी गई सबसे महत्वपूर्ण कथा थी – अमृत प्राप्ति के लिए समुद्र मंथन। साथ ही यहाँ समय की शुरुआत और ब्रह्मांड के निर्माण की कहानी नक्काशी कला के माध्यम से बयाँ की गयी है।

शोधकर्ता एलेनोर मन्निक्का, जिन्होने मंदिर के संरेखण, आयामों, नक्काशी कला, इत्यादी पर गहन शोध कार्य किया है, का तर्क है **"यह संरचना राजा सूर्यवर्मन द्वितीय के शासन के तहत शांति के नए युग का प्रतिनिधित्व करती है।"**

मेहराब , कमल की पंखुड़ियों जैसी लाल रंग की मीनारें , मार्ग को चौड़ा करती अर्ध- दीर्घाएँ, बाड़ों को जोड़ती अक्षीय दीर्घाएँ, स्लैबनुमा छत (जो मुख्य धुरी के साथ दिखाई देती हैं) , इत्यादि स्थापत्य के विचार से इस मंदिर की शैली की मुख्य विशेषताएँ हैं। मंदिर तीन आयताकार दीर्घाओं से बना है जो एक केंद्रीय मीनार पर आकर मिलती हैं। एलेनोर मन्निक्का के अनुसार **"मंदिर में मौजूद दीर्घाएँ राजा, ब्रह्मा , चन्द्रमा व विष्णु को समर्पित हैं।"**

मंदिर का निर्माण पूर्ण रूप से पत्थर को तराश कर किया गया है। इसके प्रत्येक सतह का निर्माण नक्काशी और सजावटी विवरण के साथ किया गया है। डिजाइन व साज – सज्जा के सामांजस्य के लिए इस मंदिर की चहुँ ओर प्रशंसा हुई है। 20वीं शताब्दी के मध्य में अंगकोर के

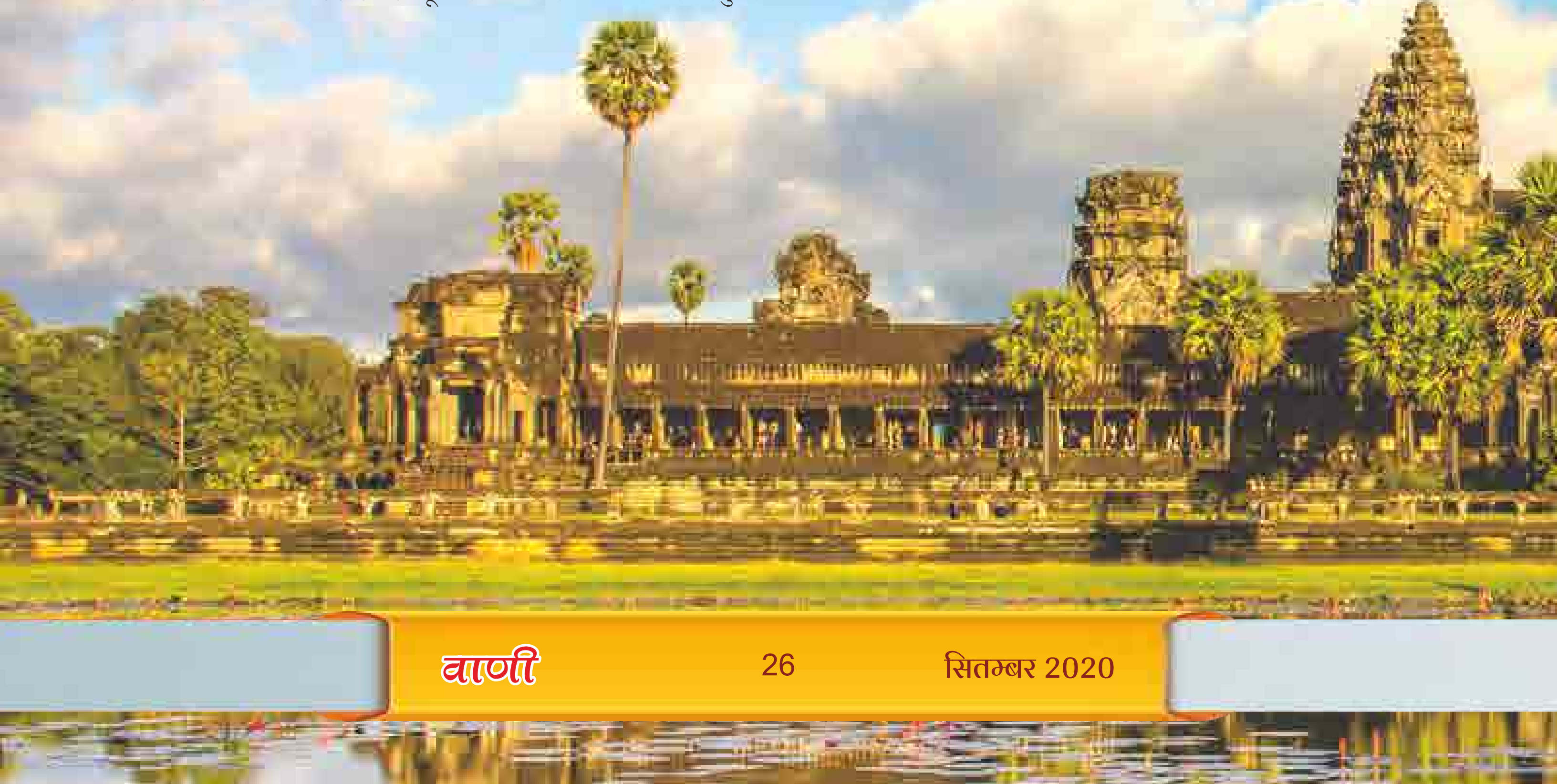

जाने –माने संरक्षक मौरिस ग्लाइज़ के अनुसार **"मंदिर अपने संयमित बारीक रूप के संतुलित तत्वों और उनके अनुपात की सटीक व्यवस्था से शास्त्रीय पूर्णता को प्राप्त करता है। यह स्मारक शक्ति , एकता और शैली का द्योतक है।"**

स्थापत्य कला :

अंगकोर वाट मंदिर अद्भुत स्थापत्य कला का नमूना है। खमेर शास्त्रीय शैली से प्रभावित इस मंदिर का निर्माण कार्य सूर्यवर्मन द्वितीय ने प्रारम्भ किया परन्तु वे इसे पूर्ण नहीं कर सके। मंदिर का कार्य उनके भानजे एवं उत्तराधिकारी धरणीन्द्रवर्मन के शासनकाल में पूरा हुआ। इस मंदिर के निर्माण में 30 वर्षों से भी अधिक का समय लगा । मिश्र एवं मेक्सिको के स्टेप पिरामिडों की तरह ही इसका निर्माण भी सीढ़ीनुमा ढ़ाँचे के रूप में किया गया है। इसका मूल शिखर लगभग 64 मीटर ऊँचा है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी आठों शिखर 54 मीटर ऊँचे हैं। मंदिर साढ़े तीन किलोमीटर लम्बी पत्थर की दिवार से घिरा हुआ था, उसके बाहर 30 मीटर खुली भूमि और फिर बाहर 190 मीटर चौडी खाई है। विद्वानों के अनुसार यह चोल वंश के मन्दिरों से मिलता जुलता है। दक्षिण पश्चिम में स्थित ग्रन्थालय के साथ ही इस मंदिर में तीन वीथियाँ हैं जिसमें अन्दर वाली सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित हैं। निर्माण के कुछ ही वर्ष पश्चात चम्पा राज्य ने इस नगर को लूटा। उसके उपरान्त राजा जयवर्मन-7 ने नगर को कुछ किलोमीटर उत्तर में पुनर्स्थापित किया। 14वीं या 15वीं शताब्दी में थेरवाद बौद्ध लोगों ने इसे अपने नियन्त्रण में ले लिया।

मंदिर के गलियारों में तत्कालीन सम्राट, बलि-वामन, स्वर्ग-नरक, समुद्र मंथन, देव-दानव युद्ध, महाभारत, हरिवंश पुराण तथा रामायण से संबद्ध अनेक शिलाचित्र हैं। यहाँ के शिलाचित्रों में रूपायित राम कथा बहुत संक्षिप्त है। इन शिलाचित्रों की शृंखला रावण वध हेतु देवताओं द्वारा की गयी आराधना से आरंभ होती है। उसके बाद सीता स्वयंवर का दृश्य है। बालकांड की इन दो प्रमुख घटनाओं की प्रस्तुति के बाद विराध एवं कबंध वध का चित्रण हुआ है। अगले शिलाचित्र में राम धनुष-बाण लिए स्वर्ण मृग के पीछे दौड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं। इसके उपरांत सुग्रीव से राम की मैत्री का दृश्य है। फिर, बाली और सुग्रीव के द्वंद्व युद्ध का चित्रण हुआ है। परवर्ती शिलाचित्रों में अशोक वाटिका में हनुमान की उपस्थिति, राम-रावण युद्ध, सीता की अग्नि परीक्षा और राम की अयोध्या वापसी के दृश्य हैं। अंगकोरवाट के शिलाचित्रों में रूपायित राम कथा यद्यपि अत्यधिक विरल और संक्षिप्त है, तथापि यह महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसकी प्रस्तुति आदिकाव्य की कथा के अनुरूप हुई है।

आज का अंगकोरवाट : पुनरुद्धार व संरक्षण

कंबोडिया के अन्य प्राचीन मंदिरों की तरह ही अंगकोरवाट को भी युद्ध, चोरी, इत्यादि से उत्पन्न क्षति का सामना करना पड़ा है । आधुनिक काल में अंगकोरवाट का पुनरुद्धार कार्य वर्ष 1908 में ईएफईओ द्वारा स्थापित अंगकोर कंसर्वेंसी (कंसर्वेशन डी अंगकोर) के साथ विधिवत रूप से आरंभ हुआ , इससे पहले की सभी गतिविधियाँ अंवेषण से संबंधित थीं। 1970 के दशक की शुरुआत तक अंगकोर कंसर्वेंसी या कंसर्वेशन डी अंगकोर, जिसे वर्ष 1975 में बंद या भंग कर दिया गया था, द्वारा अंगकोर में होने वाले शोध, संरक्षण और पुनरुद्धार कार्य किए गए ।वर्ष 1986 से 1992 के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा मंदिर के जीर्णोद्धार का कार्य किया गया। वर्ष 1992 में नॉरडॅाम सिहनॉक द्वारा की गई अपील के मद्देनज़र अंगकोर वाट को यूनेस्को की उस विश्व विरासत स्थलों की सूची में शामिल किया गया जो खतरे में थीं। साथ ही वर्ष 1992 में ही यूनेस्को द्वारा अंगकोर की रक्षा करने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय समुदाय से की गई अपील के मद्देनज़र अंगकोरवाट को विश्व विरासत स्थल की सूची में भी शामिल कर लिया गया।

वर्ष 1995 में क्षेत्र के संरक्षण व प्रबंधन हेतु कंबोडिया में "अपसरा" (अंगकोर क्षेत्र के प्रबन्धन एवं साइट की सुरक्षा हेतु प्राधिकरण) नामक प्राधिकरण की स्थापना की गई । वर्ष 1996 में कंबोडिया में कंबोडियाई विरासत को बचाने हेतु कानून पारित हुआ । मौजूदा समय में कई देश जैसे फ्रांस, जापान व चीन अंगकोर वाट संरक्षण से संबंधित परियोजनाओं से जुड़े हैं । जहाँ एक ओर जर्मन अपसरा संरक्षण परियोजना (जीएसीपी) मंदिर में स्थापित देवताओं का रक्षण एवं वैसी नक्काशियाँ जो मंदिर की साज - सज्जा में अपना योगदान दे रहीं है के संरक्षण का बीड़ा उठाया है, वहीं दूसरी ओर विश्व स्मारक कोष ने दुग्ध समुद्र के मंथन से संबंधित दीर्घा की स्थिति को बिगड़ता देख वर्ष 2008 में इसके संरक्षण का कार्य आरंभ किया। वर्ष 2005 में एक जापानी संरक्षण टीम ने मंदिर के उत्तरी पुस्तकालय के पुनरुद्धार का कार्य पूर्ण कर लिया है।

1990 के दशक के बाद से अंगकोरवाट एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में उभरा है । वर्ष 1990 से 2016 के दौरान इस मंदिर साइट का रखरखाव व प्रबन्धन एक निजी समूह सोकिमेक्स (SOKIMEX) द्वारा किया जा रहा था, जिसने इस साइट को कंबोडियन सरकार से किराए पर लिया था। पर्यटन ने भी एक व्यवसाय के रूप में इस साइट के रखरखाव व संरक्षण से जुड़े खर्चों के लिए अतिरिक्त धनराशि प्रदान करते हुए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। टिकट से प्राप्त धनराशि का लगभग 28% हिस्सा अंगकोर में स्थित मंदिरों पर खर्च किया जाता है । हालांकि संरक्षण संबंधी अधिकतम कार्य कंबोडियाई सरकार से ज्यादा विदेशी सरकारों द्वारा प्रायोजित टीमों की मदद से किए जाते हैं।

वर्तमान समय में अपने सांस्कृतिक संरक्षण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, फेडरल विदेशी कार्यालय अंगकोर में पुनरुद्धार और संरक्षण कार्य का वित्तपोषण कर रहा है और साथ ही साथ पुनर्स्थापकों और संरक्षकों को प्रशिक्षण भी प्रदान कर रहा है।

कविता

अभी हारा नहीं हूँ मैं!

पथ की बाधाएँ आती हैं,
हृदय व्यथित कर जाती हैं,
अश्रु पूरित हुए नयन,
श्वेत बिंदु माथे के चंदन,
किन्तु धीर धरो ऐ मन कुछ क्षण,
अभी हारा नहीं हूँ मैं।
उलझनों में है घिरा जीवन मेरा,
आज भले ही,
रात का हर एक सितारा धूमिल हुआ ,
आज भले ही,
रास्तों का है पता नहीं,
मंजिल मिले कब क्या खबर,
किन्तु धीर धरो ऐ मन कुछ क्षण,
अभी हारा नहीं हूँ मैं।
पथिक हूँ चलता ही रहूँगा,
पथ कंटकों को दलता ही रहूँगा,
संघर्ष है जीवन लड़ता ही रहूँगा,
कभी तो होगा विजय मिलन।
किन्तु धीर धरो ऐ मन कुछ क्षण,
अभी हारा नहीं हूँ मैं।
जीवन सुख सागर रहा ही कब है?
बिना तपे स्वर्ण चमका ही कब है?
दुख - सुख जीवन में टिका ही कब है?
किन्तु धीर धरो ऐ मन कुछ क्षण,
अभी हारा नहीं हूँ मैं।
हाँ, अभी हारा नहीं हूँ मैं।

अंकिता कुमारी गुप्ता
लिपिक
पुरुलिया रोड शाखा,
राँची

सामाजिक दूरी बनाए रखने के उद्देश्य से केंद्रीय कार्यालय में हिन्दी दिवस समारोह डिजिटल आधार पर आयोजित किया गया, जिसमें हमारे प्रबंधक निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय श्री पी.पी.सेनगुप्ता, कार्यपालक निदेशक महोदय श्री ए.के.श्रीवास्तव, राजभाषा प्रभारी महा प्रबन्धक श्री भुवन चन्द्र शर्मा के साथ- साथ अन्य कार्यपालकों ने वीसी के द्वारा प्रतिभागिता की। तत्पश्चात हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। यहाँ प्रस्तुत है इसकी कुछ झलकियाँ :

सिलिगुड़ी

कोलकाता II

मदुरै

भोपाल

चंडीगढ़

दिल्ली

भुवनेश्वर

एरणाकुलम

क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह

हैदराबाद

कोलकाता I

मेरठ

नागरकोइल

पटना

पुणे

ब्रह्मपुर

देहरादून

रायपुर

राँची

तिरुच्चि

वाराणसी

विजयवाड़ा

एनसीआर - दिल्ली

ईरोड

लुधियाना

औपनिवेशिक हिंसा का प्रतीक - लियोपॉल्ड II

शुभम दीक्षित
सहायक प्रबन्धक, केंद्रीय कार्यालय

ऐसा क्यों है कि जब कभी भी नस्ल भेद, हिंसा, अमानवीयता की बात आती है तो सिर्फ एक ही नाम निकल कर सामने आता है 'हिटलर'। अगर आप इतिहास उठा कर देखेंगे तो पाएंगे कि उसके जैसे और भी कई सरफिरे उस से पहले आए और मानवीयता को तार-तार कर गए। आज जो तस्वीरें हम आपके लिए लेकर आए हैं वो पूंजीवाद के क्रूरतम चहरे को नुमाया करने के लिए काफी हैं। इन तस्वीरों को 1893 के दौरान कैमरे में उतारा गया था। ये वो दौर था जब कांगो बेल्जियम के अधीन हुआ करता था और कांगो में मानवीय मूल्य अपने न्यूनतम स्तर पर थे। ये तस्वीरें उस दौर की है, जब बेल्जियाई राजा लियोपॉल्ड II कांगो गणराज्य पर भी शासन कर रहा था। लियोपॉल्ड II ने जो सपना कांगो के लोगों को दिखाया उसका सबसे अहम पहलू मानवीय और वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए कॉलोनी स्थापित करना था। लेकिन अच्छे दिनों का सपने केवल कोरे सपने ही थे और इसका अंदाज़ा जल्द ही कांगो के लोगों को भी हो गया। उनका हर प्रकार से शोषण किया जाने लगा। उस दौर में 18-18 घंटों के काम के बाद भी लक्ष्य पूरा न होने पर मजदूरों को जान से मार देना या उनके हाथ-पैर काट देना एक बेहद ही सामान्य सी घटना थी। अनुमानतः हिटलर, जिसने लगभग 60 लाख से अधिक यहूदियों को मौत के घाट उतार दिया, की तुलना में लियोपॉल्ड II ने विकास, विनिर्माण, कॉलोनी और सभ्यता के नाम पर लगभग 1 करोड़ से 1.5 करोड़ कांगो वासियों को मौत के मुँह में धकेल दिया और लगभग इतने ही लोगों के हाथ-पैर कटवा दिए।

तारीख-ए-बयां

आप किसी देश और उसकी वर्तमान स्थिति को समझना चाहें तो उसका सबसे आसान तरीका है उसके इतिहास को जानना। कोई भी

ब्रिटिश मिशनरी के सदस्य लोगों की हालत का ज़ायजा लेते थे।

राष्ट्र आज जहाँ भी है, उस के पीछे उसका इतिहास बहुत हद तक मायने रखता है और अगर हम डेमोक्रेटिक रिपब्लिक कांगो की बात करें तो ये शायद दुनिया के सबसे अमीर देशों में से एक हो सकता था! लेकिन, औपनिवेशवाद, गुलामी और भ्रष्टाचार ने इसे दुनिया के सबसे गरीब देशों के बीच ला कर खड़ा कर दिया है।

अगर हम कांगो की बात करें तो वैश्विक मानचित्र पर कांगो की पहली छाप 1480 के आस-पास मिलती है जब पहली बार पुर्तगाली व्यापारियों के कदम कांगो की ज़मीन पर पड़े। कांगो उनके लिए प्रकृतिक संसाधनों की उस खान की तरह था जिसके चारो तरफ न तो कोई पहरा था और न ही कोई बाड़ और यहाँ से कुछ भी बिना किसी रोक-टोक के ले जाया जा सकता था। लेकिन जब हम कांगो के प्राकृतिक संसाधनों की बात करें तो उनमें से जो सबसे प्रमुख थे उसमें एक नाम था इंसानी संसाधन। जी हाँ, कांगो में रहने वाले लोग उस समय के व्यापारियों के लिए एक संसाधन से बढ़ कर और कुछ भी नहीं थे। उनके शारीरिक बल, कद, रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता ने उन्हें गुलामों के बड़े खजाने में तब्दील कर दिया।

ये वो दौर था जब कांगो से गुलामों को जुटाने के लिए अपने रास्ते में

आने वाली सभी स्थानीय ताकतों को ध्वस्त कर दिया गया। वहाँ के सबसे अधिक धनी व प्रभावशाली लोगों की हत्याएँ करवा दी गईं, विद्रोहियों को न केवल पैसे उपलब्ध करवाए गए बल्कि उनको उस समय के प्रचलित अत्याधुनिक हथियार भी उपलब्ध करवाए गए। कांगो की सेनाओं को हराया गया, राजाओं की सुनियोजित रूप से हत्याएँ करवा दी गईं, रियासतों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट दिया गया। कई कबीलों और बस्तियों को आग के हवाले कर दिया गया, अलगाववाद को बढ़ाव दिया गया, खाने पीने के सभी साधनों को एक-एक कर नष्ट कर दिया गया ताकि हर तरफ अराजकता का माहौल बनाया जा सके और जब कांगो इस अराजकता से डरा-सहमा-हारा, हर तरह से टूटा महसूस करने लगा तो उन्हें उनके ही घरों में गुलामी की बेड़ियाँ पहना दी गईं। बस्तियों के ज़्यादातर आदमियों को या तो मार दिया गया या उन्हें विदेशों में गुलाम बना कर बेच दिया गया और जो महिलाएँ और बच्चे बच गए उनके पास नर्क से भी बदतर जीवन के अलावा और कुछ भी नहीं बचा। इस सब के लिए विदेशी ताकतों ने लगातार 350 से अधिक सालों तक न केवल कांगो बल्कि सम्पूर्ण अफ्रीका में अपने धन और ऊर्जा का बेतहाशा निवेश किया ताकि अधिक-अधिक लाभ कमाया जा सके।

काम पूरा न कर पाने के लिए लोगों के अंग काट दिए गए

कांगो की बात करते हैं तो जब लूटने को हजारों हाथ तैयार हों और लुटने वाला एक, तो एक वक्त के बाद लूटने वाले हाथ ही आपस में उलझने लगते हैं। ज्यादा से ज्यादा लूटने की होड़ में डच, रोमन और फ्रेंच में अमूमन छोटी-मोटी मुठभेड़ें तो शुरुआती दौर से ही होती रहती थीं मगर जैसे-जैसे दशक बीतते गए, संसाधन भी सिमटते चले गए और विदेशी जमीन पर भी वर्चस्व की जंगे लड़ी जाने लगीं सन 1800 आते-आते दक्षिणी अफ्रीका का एक बड़ा हिस्सा फ्रांस के प्रभाव के अधीन आ चुका था और फ्रांस उससे जुड़े हुए प्रान्तों के प्रकृतिक संसाधनों के भरपूर दोहन में लगा हुआ था। ये वो दौर था जब जिसकी लाठी उसकी भैंस के सिद्धान्त पर अफ्रीका पर राज किया जाता था। फ्रांस की बढ़ती हुई शक्तियों को रोकने के लिए रूस ने लियोपॉल्ड (लियोपॉल्ड II के पिता) को शाही रूसी सेना का कप्तान बना कर बेल्जियम भेज दिया, जहाँ लियोपॉल्ड ने नेपोलियन बोनापार्ट को हराकर रूस का झण्डा गाड़ दिया।

अपने बच्चों के मनोरंजन हेतु गोरे अफसर द्वारा पिंज़रे में रखा गया का कांगो मूल का बच्चा।

ग्रीक स्वतंत्रता संग्राम (1821-1832) के बाद लियोपॉल्ड के सामने ग्रीस के सिंहासन की पेशकश रखी गई मगर लियोपॉल्ड ने बहुत ही होशियारी से इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया क्योंकि लियोपॉल्ड जानता था कि ग्रीस के ऊपर बहुत लंबे समय तक शासन नहीं किया जा सकता है और ग्रीस में कभी भी दुबारा विद्रोह होने पर तख़्ता पलट हो सकता है। लेकिन ग्रीस के बदले लियोपॉल्ड ने बेल्जियम के शासन की बागडोर संभालने की मांग कर दी और 1831 का दौर आते-आते उसकी ये मांग बेल्जियम समेत ब्रिटेन में भी मान ली गई। इसके पीछे दो प्रमुख कारण थे। पहला ये कि बेल्जियम को लियोपॉल्ड ने नेपोलियन से आज़ाद करवाया था और दूसरा ये कि वो दौरा राजनैतिक अस्थिरता का दौरा था और लियोपॉल्ड को ब्रिटेन के साथ साथ रूस जैसी महा शक्तियों का भी समर्थन प्राप्त था जो उसे बेल्जियम के लिए सबसे उपयुक्त राजा साबित करते थे। लियोपॉल्ड ने 21 जुलाई 1831 को बेल्जियम के राजा के रूप में शपथ ली, जिसे आज भी बेल्जियम के राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाता है। हालांकि लियोपॉल्ड के सत्ता में आने के बाद भी डचों, उदारवादियों और कैथोलिकों ने कई हमले किए, 1848 में कुछ क्रांतियाँ भी हुईं मगर किसी के हाथ सफलता नहीं लगी। यहाँ पर ये बात ध्यान रखने वाली है कि लियोपॉल्ड ने बेल्जियम के हालातों को सुधारने के लिए 1835 में पहली रेलवे लाइन बिछाने, बेल्जियम के औद्योगीकरण को बढ़ावा देने के साथ ही अन्य कई क्रांतिकारी कदम उठाए। सन 1865 में लियोपॉल्ड की मृत्यु के बाद बेल्जियम की सत्ता उसके बेटे लियोपॉल्ड II के हाथों में आ गई।

लियोपॉल्ड II, जिसे बेल्जियम का तख़्त 1865 में विरासत में मिला था, ने 1909 में अपनी मृत्यु तक अपना आधिपत्य बनाए रखा। 1965 में बेल्जियम की तख़्त पर बैठने से पहले लियोपॉल्ड II सेना में पदोन्नत होते-होते लेफ्टिनेंट जनरल के पद तक पहुँच गया था। लियोपॉल्ड II ने सत्ता में आने से पहले ही व्यापार के विकास एवं बेल्जियम को कॉलोनी में बदलने को सर्वाधिक वरीयता दी। हालांकि अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लियोपॉल्ड II बाहरी निवेश पर ही निर्भर रहा और इसके चलते उसने 1854 से लेकर 1865 तक भारत, चीन, मिस्र और

कई भूमध्यसागरीय देशों की यात्राएँ कीं। लियोपॉल्ड II के हिसाब से राष्ट्र को समृद्ध, सुंदर एवं सशक्त होना चाहिए था, और इसके लिए उसने कई प्रयास भी किए लेकिन लियोपॉल्ड II के कैल्कुलेशन में बेल्जियम का हित कहीं था ही नहीं, बल्कि हक़ीकत तो ये थी कि उसने बेल्जियम का सिंहासन खुद और अपने चाहने वालों को अधिक से अधिक लाभ कमा कर देने के लिए संभाला था। हालांकि अपने आखरी दिनों में उसने अपनी सोच को अलग आकार दिया, इस बात को इस तरह भी समझा जा सकता है कि अपने मरने से पहले लियोपॉल्ड II ने अपने कई महलों और अपनी निजी संपत्ति के बड़े हिस्से को बेल्जियम की सरकार हवाले कर दिया। लेकिन इस सब से पहले के समय के लिए लियोपॉल्ड II को उसकी सत्ता और संपत्ति की भूख के लिए जाना जाता है। इसी भूख के चलते लियोपॉल्ड II कांगो में अपनी जड़ें जमाने का फैसला किया।

भुखमरी के कगार पर पहुँच चुके थे कांगो के मूल निवासी

1884-1885 के बर्लिन सम्मेलन में हैनरी मार्टिन स्टैनली (ब्रिटिश अमेरिकन एक्सप्लोरर) ने यूरोप के औपनिवेशक देशों (विशेष रूप से अफ्रीका महाद्वीप के देश) के लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए जिसने लियोपॉल्ड II को कांगो पर अपनी पहुँच को विस्तार देने में मदद की। एक पल को अगर सारी बातों को दरकिनार कर दिया जाए तो इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि लियोपॉल्ड II कांगो गणराज्य का संस्थापक और पहला शासक रहा है। हालांकि बर्लिन में हुए सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य संबन्धित क्षेत्र के लोगों के जीवन के स्तर में सुधार था किन्तु इन सारी शर्तो और नियमों को दरकिनार करते हुए लियोपॉल्ड II ने अपने निजी लाभ और कांगो के लोगों को दबाने और उनके शोषण के लिए भाड़े के गुंडो से लेकर बेल्जियम की रॉयल आर्मी तक का प्रयोग किया।

लियोपॉल्ड II के लिए जो कुछ भी था, जैसा भी था सिर्फ उसके और उसके चाहने वालों के लिए था। लियोपॉल्ड II ने बेल्जियम के लोगों के शरीर से ख़ून की आखरी बूंद तक निचोड़ कर बेल्जियम के अंदर और बाहर कई निजी सम्पत्तियों का निर्माण करवाया। उसने कांगो के प्रकृतिक संसाधनों का दोहन कर के अकूत संपत्ति अर्जित की थी।

शुरुआती दिनों में लियोपॉल्ड II कांगो के बाहर केवल हाथी के दांतों का निर्यात करता था लेकिन महज इतने से उसकी भूख कभी मिटी ही नहीं। अपने शुरू के दौर में ये सारी जद्दोजहद केवल हाथियों के दाँतों को पाने भर की थी मगर प्रथम विश्व युद्ध से पहले कई यूरोपीय देशों का रुझान तकनीक की ओर हुआ और उन्होंने तकनीकी रूप से उन्नति करना शुरू कर दिया। ये दौर गाड़ियों, साइकिलों आदि के आम ज़िंदगी में शामिल होने का दौर था और जब बात वाहनों के निर्माण की आती है तो उसमें सबसे ज्यादा जरूरी होते हैं उनके पहिये, जिन पर टायर चढ़ाए जाने होते हैं। 1890 के बाद के दशकों में रबड़ की वैश्विक मांग में नाटकीय ढंग से उछाल आया। ऐसे में कांगो के अधिकतम क्षेत्र या तो सीधे लियोपॉल्ड II के या उन कम्पनियों के अधीन आ गए जिनको लियोपॉल्ड II ने जमीनें पट्टे पर दे रखीं थीं। ये कांगो का दुर्भाग्य ही था कि वो उस दौरा का एकलौता देश था जो जंगली रबड़ का उत्पादन करता था और इसी के चलते कंपनियों और लियोपॉल्ड II का ध्यान हाथी दाँत से घूम कर रबड़ की ओर हो गया और यहाँ से एक क्रूरतम सिलसिला चल निकला। बैरिंगा के मिशनरी जॉन बैरिंस ने जो देखा उसे उन्हों ने सिकागो में रहने वाले लियोपॉल्ड II के प्रमुख एजेंट को कांगो के लोगों के हालातों को एक छोटे से ख़त में को कुछ इस तरह लिख कर भेज :

"मैं इनसोंगों मोबयो के एक सुदूर गाँव की यात्रा से अभी-अभी वापस आया हूँ। वहाँ के लोगों का अपार दु:ख और नितांत वितान अवर्णीय है। लोगों की कहानियाँ इतनी हृदयविदारक हैं कि मैं वहाँ ठहर नहीं सका; महामहिम, मैं माफ़ी चाहूँगा मगर मैंने आपकी तरफ से उनसे वादा किया है कि आप उन्हें केवल उन गुनाहों के लिए सज़ा बतौर मारेंगे जो उन्हों ने किए हैं"।

हर व्यापार का पहला उसूल होता है अधिक से अधिक मुनाफ़ा और उसे कमाने के लिए पहला शिकार बनता सबसे निचले तबके का मजदूर और अगर मजदूरों को दबाना हो तो आतंक से ज्यादा कारगर और कुछ भी नहीं। गाँव और कुनबों में रहने वाले लोगों को कभी न पूरे किए जा सकने वाले लक्ष्य दिए जाने लगे। नियमों का पालन करवाने के लिए फ्री स्टेट की सेना को बुलाया गया। गोरे अफसरों के नीचे अफ्रीकी लोगों, अनाथों और गुलामों को सेना में भर्ती कर के अलग-अलग टुकड़ियाँ बना दी गईं। ये टुकड़ियाँ अलग-अलग क्षेत्रों को नियंत्रित करती थीं। उस समय सेना अपने क्रूर रवैये के लिए जानी जाती थी। लोगों में दहशत बनाने के लिए रबड़ उत्पादन का कोटा पूरा न कर पाने वाले पूरे- पूरे गाँव को आग लगा दी जाती थी। उस गाँव के सभी आदमियों को मार दिया जाता था। यहाँ तक कि कई बार उत्पादन का कोटा पूरा करवाने के लिए उनके परिवार की औरतों और बच्चियों को बंधक बना कर रखा जाता था, और कोटा पूरा न होने पर फ्री स्टेट के सैनिकों द्वारा उनका बलात्कार किया जाता था। इस सब के अलावा जो कोई आदमी, औरत, बच्चा या बूढ़ा अगर कोटा पूरा नहीं कर पाते थे तो उन्हें या तो मार दिया जाता था या उनके हांथ-पैर कटवा दिए जाते थे।

इस अंक के लिए जिन तस्वीरों को हमने चुना है, उस समय में लोगों को दी जाने वाली यातनाओं की एक छोटी सी झलक भर हैं।

इतिहास में लियोपॉल्ड II बेल्जियम पर सबसे लंबे समय तक शासन करने करने वाला शासक माना जाता है जिसने लगभग 45 सालों (1865 से 1909 तक) शासन किया। और अगर हम कांगो की बात करें तो लियोपॉल्ड II ने कांगो पर 1985 से 1909 तक अपने अत्याचारों और हत्याओं के सिलसिले निर्बाध रूप से जारी रखा। लेकिन अपने मरने से एक साल पहले सन 1908 में दौलत की भूख के चलते लियोपॉल्ड II ने कांगो को आगे के शोषण के लिए बेल्जियम सरकार के हाथों बेच दिया और ये क्षेत्र बेल्जियम का उपनिवेश बन कर रह गया। बेल्जियम सरकार के उपनिवेश बनने के बाद उस भूखंड पर किए जा रहे अत्याचार बदस्तूर ज़ारी रहे। इस बात को मैं कुछ इस तरह से समझाना चाहूँगा कि 6 अगस्त 1945 को हिरोशिमा नागासाकी में गिराए गए परमाणु बॉम्ब (जिसकी चर्चा हम आने वाले किसी अंक में विस्तार से करेंगे) के निर्माण में इस्तेमाल किया गया कच्चा यूरेनियम दक्षिणी-पूर्व कांगो की खदानों से ही निकाला गया था और इसकी खुदाई और आपूर्ति का जिम्मा बेल्जियम सरकार के पास था। आपको शायद जान कर हैरानी होगी कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान कांगो के जिन लोगों और उनके प्रकृतिक संसाधनों के दम पर दक्षिण की रक्षा की गई, उसी कांगो के गहरे रंग के निवासियों को आज़ादी मिलने तक मतदान, यूनियन बनाने एवं राजनीतिक संघ बनाने का अधिकार तक प्राप्त नहीं था।

हालांकि 1960 में प्राप्त हुई आज़ादी, क्षेत्रफल में यूरोप से बड़े होने और हर तरह के खनिजों के प्राकृतिक अकूत भंडार होने के बावजूद भी कांगो आज गरीब देशों की श्रेणी में आता है, जो आज तक गृहयुद्ध, बीमारियों और भुखमरी का शिकार है। दरअसल, 1960 में मिली आज़ादी के बाद एक बड़े देश ने छोटे-छोटे हिस्सों में अलग होने की कोशिश की और स्थानीय लोगों ने वहाँ मौजूद बेल्जियम के अफसरों के खिलाफ़ विद्रोह का बिगुल फूँक दिया। जो लोग अभी तक कांगो को हर तरह से नियंत्रित कर रहे थे वो अचानक से चले गए और इसका नतीजा ये निकला कि एक नए नवेले देश के पास न तो कोई, डॉक्टर था, न कोई वकील और न ही कोई अर्थशास्त्री। कांगो में पूरी तरह से

कांगो की वे खदानें जहाँ से द्वितीय विश्व युद्ध के बम हेतु कच्चे यूरेनियम की खुदाई की गई थी।

अव्यवस्था फैल गई, कांगो के तत्कालीन प्रभावशाली नेता पैट्रिक लुमुंबा को पश्चिम समर्थित विद्रोहियों ने खूब पीटा और फाँसी पर चढ़ा दिया। इस सब के बाद सेना के प्रवक्ता जोसेफ़ डेसाइर मोबुतो ने सत्ता संभाल ली। लेकिन आगे जा कर वो भी एक तानाशाह साबित हुआ। जब तक पश्चिमी जगत को कांगो से खनिज मिलते रहे, कांगो सोवियत संघ के घेरे से दूर रहा और कांगो के राष्ट्रपति मोबुतो को बर्दाश्त करता रहा। मोबुतो के दौर में विद्रोहियों का उत्पीड़न किया गया, मंत्री पूरा का पूरा का बजट चुरा लेते थे, पश्चिमी जगत भी मोबुतो को अरबों डॉलर का कर्ज़ देते रहे; जिसे कांगो आज तक चुका रहा है।

1997 में रवांडा के नेतृत्व में कई पड़ोसी मुल्कों ने कांगो पर हमला कर मोबुतो से छुटकारा पाने का निर्णय ले लिया। सनद रहे कि रवांडा के लोग 1994 में मोबुतो द्वारा किए गए नरसंहार, जिसमें 100 दिनों के भीतर लगभग आठ लाख लोगों को मौत के घाट उतार दिए गए, से खासे नाराज़ थे। हमले का नतीजा ये निकला कि मोबुतो को हटा कर लौरें कबीला को कांगो का नेता बना दिया गया जो शुरू में तो रवांडा की कठपुतली माने जाते थे मगर कुछ अरसे के बाद उन्हों ने रवांडा के आदेशों को मानने से इंकार कर दिया। इससे नाराज़ हो कर रवांडा ने फिर से कांगो पर हमला कर दिया, मगर इस बार रवांडा का रास्ता उन्हीं देशों ने रोका जो पिछले युद्ध में रवांडा के साथ थे, और इस तरह कांगो फिर युद्ध में घिर गया। विदेशी सेनाओं के बीच कांगो में आज भी घमासान जारी है। हर तरफ अराजकता है। लाखों लोग मारे जा चुके हैं। एक खास बात आपको यहाँ बताता चलूँ कि आज-कल के तकनीकी दौर में जिस कोल्टान का प्रयोग मोबाइल से लेकर हर उस डिवाइस के निर्माण में होता है जिसमें इलेक्ट्रोनिक चिप लगी होती है, का सबसे बड़ा प्रकृतिक भंडार कांगो में ही है, और इसकी खुदाई का काम इस अराजक माहौल में भी जारी है। कोल्टान के खनन का अधिकतम काम स्थानीय बच्चों के द्वारा करवाया जाता है, जिसके बारे में हम किसी अन्य अंक में चर्चा करेंगे।

अगर आज के परिदृश्य की बात करें तो कांगो वो देश है जो पूरी तरह थम चुका है, मुख्य शहरों को जोड़ने के लिए सड़कें नहीं हैं, स्वास्थ्य सेवाएँ केवल धर्मार्थ संस्थानों के सहारे चल रही हैं। पुर्तगालियों, बेल्जियनों, मोबुतो और मौजूदा सरकार ने राज्य, सेना, न्यायपालिका और शैक्षिक तंत्र को मजबूत होने ही नहीं दिया ताकि ज़मीन के नीचे दबे खजाने के प्रकृतिक दोहन में कोई अड़चन न आने पाए। इन संसाधनों के सहारे अरबों डॉलर की कमाई की गई लेकिन, अभिजात वर्ग और उनके विदेशी समर्थकों के अलावा, उसका 1% भी कांगो के आम लोगों के हिस्से नहीं आ सका। ये दुर्भाग्य की ही बात है कि जिस कांगो के संसाधनों की बुनियाद पर ही विकसित देशों में औद्योगिक क्रांतियाँ हो रही हैं उसी कांगो के लोग आज भी तकलीफ़ें और मौतें झेलने के लिए बाध्य हैं।

राजभाषा हिन्दी एवं बाज़ार

नगेन्द्र कुमार सिंह
सहायक प्रबन्धक, केंद्रीय कार्यालय

बाज़ार एक व्यापक शब्द है, जिसका आकलन करते हुए हमें वैश्विक परिदृश्यों पर भी नजर डालना आवश्यक है। बाज़ार सिर्फ लेनदेन या क्रय - विक्रय तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि वह वृहत्त मात्रा में रोजगार सृजन का मार्ग प्रशस्त करता है और साथ ही देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में मदद करता है। बाज़ार का मुख्य उद्देश्य मुनाफा बाँधना और उपभोगताओं तक आसानी से माल की आपूर्ति करना है। व्यापारी उपभोगताओं तक सुगमता से अपना माल पहुँचाने हेतु तमाम रणनीतियाँ बनाते हैं, पर उन सारी रणनीतियों का अनुपालन करने के लिए एक दमदार एवं टिकाऊ भाषा की अनिवार्यता उसी तरह होती है जिस तरह कड़ाके की सर्दी में खिलती हुई धूप की होती है। बाज़ार के असीमित दायरे हैं और वह निरंकुशता के साथ पूरे विश्व पर राज करती है। हम बाज़ार को चार वर्गों में विभिक्त कर आसानी से उसके भौगोलिक दायरों को समझ सकते हैं, प्रथमत: स्थानीय बाज़ार – जो कुछ स्थान विशेष तक सीमित रहता है, जहाँ स्थानीय वस्तुओं की ज्यादा खरीद - बिक्री की जाती है, दूसरा प्रादेशिक बाज़ार – जो एक प्रदेश या राज्य के दायरे तक सीमित होता है, तीसरा राष्ट्रीय बाज़ार – जो समूचे राष्ट्र के लिए एक विस्तृत बाज़ार प्रदान करता है एवं देश की अर्थव्यवस्था को बल देता है और चौथा – अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार – जो वैश्विक स्तर पर माल का आयात - निर्यात करने का मार्ग बनाता है और बाज़ार को अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार चलाता है । इन बाज़ारों में एक समानता है, यह उपभोगताओं पर अपनी पकड़ बनाने के लिए उनकी रुचि – अभिरुचि को केन्द्र में रखते हैं। ये उपभोगताओं तक उत्पाद पहुँचाने के लिए नये – नये तरीकों का सदैव अनुसंधान करते हैं।

भाषा एवं बाज़ार दोनों एक दूसरे के समानांतर चलते हैं एवं एक - दूसरे पर पूर्णत: आश्रित होते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बाज़ार की अपनी गढ़ी हुई भाषा होती है और वह उपभोगताओं तक पहुँचने का एक ठोस माध्यम भी होती है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र का कथन "चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी। बीस कोस पर पगड़ी बदले, तीस कोस पर धानी।" – आज भी प्रासंगिक है। हमें विदेश में व्यापार करने के लिए संप्रेषण हेतु आवश्यकतानुसार भाषा का चयन करना पड़ता है। आज दुनिया में तीन भाषाएँ सबसे अधिक सम्मान पा रही हैं और वे हैं – चीनी (मैंडरिन) अंग्रेजी और हिन्दी। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिन्दी पिछले दो दशकों से बाज़ार पर हावी होती नजर आ रही है। अब भी बाज़ार को नियंत्रित करने वाली शक्तियाँ भले ही अंग्रेजी को पसंद करती हो पर बाज़ार का दायरा इतना व्यापक होता है कि चाह कर भी वे भाषा को अपने काबू में नहीं रख पाते। समकालीन बाज़ार हिन्दी के पक्ष में है। हिन्दी आज समाज के असहाय या दीन-हीन लोगों की भाषा नहीं रह गई है। वह आज एशियाई बाज़ारों में सबसे ज्यादा प्रयोग की जाने वाली भाषा बन गयी है। चाहे वाशिंगटन हो या बीजिंग, अपने देश का कूड़ा-करकट हमारे देश में हमारी भाषा के सहारे बड़ी सरलता से निर्यात कर रहे हैं। यह बात तो शत प्रतिशत निश्चित है कि वाशिंगटन हो या बीजिंग अपना कोई भी माल अंग्रेजी या चीनी भाषा के सहारे, भारत में खपत नहीं करवा सकता है।

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ भाषा लोगों के संवेदना से जुड़ी होती है। भाषा की समृद्धि व विकास में समाज एवं संस्कृति का अभूतपूर्व योगदान है। हिन्दी भारत की एक बड़ी जनसंख्या द्वारा पढ़ी, लिखी एवं बोली जाती है और वह भारत की संविधान सम्मत राजभाषा भी है। भारतीय भाषायी जनगणना 2011 के अनुसार, भारत में कुल 121 भाषाएँ एवं 270 मातृभाषाएँ विद्यमान हैं। जिसमें से हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे बोलने वालों की संख्या में पिछली जनगणना की तुलना में 6% का इजाफा दर्ज किया गया है। दक्षिण भारतीय भाषाएँ तेलुगु (-0.49%), तमिल (-0.21%), कन्नड़ (-0.08%) और मलयालम (-0.33%) में बोलने वालों की संख्या में क्रमश: गिरावट दर्ज की गई है। 2011 के जनगणना के अनुसार, हिन्दी के बाद कश्मीरी दूसरी ऐसी भाषा है जिसमें बात करने वालों की संख्या में 22.97% की वृद्धि दर्ज की गई और गुजराती तीसरी ऐसी भाषा है जिसमें बात करने वालों की संख्या में 20.40% एवं बंगला चौथी ऐसी भाषा है जिसमें बात करने वालों की संख्या में 16.63% की वृद्धि दर्ज की गई है। ये चार भारतीय भाषाएँ तेजी से अपना विस्तार कर रही हैं। 2011 के जनगणना के अनुसार, भारत की आबादी की 26% जनता अर्थात 34 करोड़ की आबादी ने हिन्दी को अपनी मातृभाषा घोषित किया है एवं संप्रेषण के लिए प्रथमत: हिन्दी भाषा का प्रयोग करने वालों की संख्या लगभग 53 करोड़ यानि आबादी का 44% है। भारत में अंग्रेजी को अपनी मातृभाषा घोषित करने वाले व्यक्तियों की आबादी सिर्फ 2,60,000 है, जो हमारे आबादी के महज 0.002% है। उक्त आंकड़े में से अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बोलचाल में करने वाले व्यक्तियों में सबसे अधिक महाराष्ट्र और

उसके बाद तमिलनाडु एवं कर्नाटक के लोग आते हैं। हम महज 0.002% आबादी के लिए अपने ज़्यादातर उत्पादों को बेचने के लिए प्रथम भाषा के रूप में अंग्रेजी का उपयोग नहीं कर सकते हैं। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत में क्षेत्रीय भाषा की पैठ कितनी मजबूत है। यह आँकड़े दर्शाते हैं कि भारत में व्यापार यहाँ के भाषा को अंगीकार करके ही किया जा सकता है।

बाज़ार ग्राहकों से निर्मित होता है, इसलिए ग्राहकोन्मुख बाज़ार होना अनिवार्य है। खुले बाज़ार (Open Market) पर अधिक बल देने की आवश्यकता है। बाज़ार का मुख्य हिस्सा सिर्फ अभिजात्य वर्ग ही नहीं बल्कि वह वर्ग भी है जो समाज के सबसे अंतिम पायदान पर विराजमान है। जब तक निम्न मध्यवर्गीय या ग्रामीण व्यक्ति बाज़ार का हिस्सा नहीं बनते, बाज़ार का कायापलट संभव नहीं है। आज ग्रामीण जनता के घरों तक टीवी, फ्रिज, तमाम इलेक्ट्रॉनिक उपकरण एवं आवश्यक सामग्री आसानी से पहुँच रही है। यह एक आकस्मिक परिवर्तन नहीं है, इसकी पृष्ठभूमि तैयार करने में लगभग दो दशक लगे हैं। यह तभी संभव हो पाया जब तमाम प्रसिद्ध विदेशी कंपनियों का भारत में आगमन हुआ और उन्होंने भारत की नब्ज को समझते हुए भारतीय भाषाओं का सहारा लेकर विदेशी उत्पादों को सरलता से लोगों तक पहुँचाने का मार्ग तैयार किया। भारत समस्त विश्व के लिए उभरता हुआ एक वृहत्त बाज़ार है। आज विश्व के अनेक देश भारत के साथ व्यापारिक संधि कर रहे हैं। पूरा विश्व भारत की ओर व्यापार की दृष्टि से एक संभावना की तरह देख रहा है। व्यापार न सिर्फ लोगों के आवश्यकताओं की पूर्ति करता है वरन वह देश को आर्थिक रूप से समृद्ध बनने का मार्ग भी दिखाता है।

आज सरकारी बैंकों को भी बाज़ार पर पकड़ बनाने के लिए जद्दोजहद करनी पड़ रही है। ग्राहकों को ऋण व जमाओं पर दी जाने वाली आकर्षक ब्याज दर अधिक लुभाती है और साथ ही उन्हें बैंकिंग उत्पादों का प्रचार करने का तरीका भी बैंक की ओर आकर्षित करता है। सरकारी बैंक सारे प्रचार प्रसार सरकारी नीतियों के तहत द्विभाषिक रूप में करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ये द्विभाषिकरण नीति ग्राहकों में अपनत्व का भाव पैदा कर रही है। भारत सरकार के सभी वित्तीय योजनाओं के कार्यान्वयन की जिम्मेवारी सरकारी बैंकों की होती है। वित्तीय समावेशन भारत सरकार का अपना बच्चा है, जिसके सहारे ग्राहकों तक बैंकिंग एवं तमाम वित्तीय उत्पाद बड़ी सरलता के साथ पहुँचाया जा रहा है। आज देश की अधिकांश जनसंख्या के पास बैंक खाते हैं और वह बचत करने की आदत भी डाल चुकी है। अब तक भारत सरकार की सबसे प्रसिद्ध योजना – प्रधानमंत्री जन धन योजना रही है, वित्तीय सेवाएँ विभाग द्वारा जारी डाटा के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में अब तक कुल 40 लाख खाते खोले गए हैं एवं उन खातों में कुल रु. 1.30 लाख करोड़ जमा हुए हैं। क्या पीएमजेडीवाई की सफलता की कल्पना भारतीय भाषाओं के बिना की जा सकती थी? – बिल्कुल नहीं, आम जनता तक वित्तीय उत्पाद उनकी भाषा में ही पहुँचाना लाभप्रद होता है। सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र के बैंकों द्वारा ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अनेकों अभियान चलाए जाते हैं एवं अब लगभग अभियान का नामकरण राजभाषा हिन्दी में किया जा रहा है, उदाहरण स्वरूप "डिजिटल अपनाएँ" और "बैंक आपके द्वार" बहुत ही प्रचलित हुआ है। ऐसे स्लोगन लोगों के मानसिक पटल पर वर्षों तक जीवंत रहते हैं।

डिजिटल युग में लोगों तक बैंकिंग बहुत ही आसान तरीकों से पहुँचाई जा रही है। ग्राहकों में इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग एवं एटीएम के प्रयोग करने संबंधी जागरुकता बहुत हद तक बढ़ी है। अब ग्राहकों के लिए इंटरनेट बैंकिंग सिर्फ अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध नहीं है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध है। ग्राहक इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से आरडी या फिक्सड डिपॉजिट कर रहे हैं एवं ऑनलाइन पर ही जमा प्रमाणपत्र प्राप्त कर रहे हैं और इसके साथ ही खातों का स्टेटमेंट आदि भी इंटरनेट बैंकिंग के जरिए प्राप्त किये जा रहे हैं। अब एटीएम पर भी सिर्फ अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व नहीं रहा, हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषा का भी चयन कर अपने खाते की राशि आहरित की जा रही है। प्राय: सभी बैंकों द्वारा मोबाइल बैंकिंग भी तमाम नए फ़ीचर्स के साथ तैयार की गई है, जिससे बैंकिंग लेनदेन अब फिंगर टिप्स पर आकर ठहर गया है। इस प्रयास से हम उन ग्राहकों को डिजिटल बैंकिंग से जोड़ने में सक्षम हो पाए हैं, जो शाखा परिसर में घंटों कतार में खड़े होकर बैंकिंग लेनदेन करने से कतराते थे। ग्राहकों को पासवर्ड एवं ओटीपी साझा न करने संबंधी सार्वजनिक सूचना हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा में देने से ग्राहक बहुत हद तक सतर्क हो गए हैं और वे फिशिंग व इलेक्ट्रॉनिक धोखाधड़ी आदि से स्वयं व बैंक को वित्तीय हानि होने से बचा रहे हैं।

अनेकों कंपनियों एवं सरकारी संस्थानों द्वारा सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म यानि वॉट्सएप, फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम आदि का प्रयोग मुनाफा कमाने के लिए बहुत हद तक मार्केटिंग करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। आज सोशल मीडिया पर नयी भाषा के रुप में हिन्दी का प्रयोग ताबड़ तोड़ किया जा रहा है। सोशल मीडिया पर एकछत्र युवाओं का राज है और सबसे अच्छी बात यह है कि हिन्दी युवाओं की भाषा बन गयी है। सोशल मीडिया का उपयोग यदि सही दिशा में की जाए तो वह अनेकों व्यावसायिक उद्देश्यों को पूर्ण कर सकती है। ग्राहकों तक संवैधानिक या सार्वजनिक सूचना पहुँचाने के लिए अधिक से अधिक मात्रा में सोशल मीडिया का उपयोग किया जा रहा है।

अपनी भाषा में बैंकिंग सिर्फ ग्राहकों की संख्या बढ़ाने में ही मदद नहीं करती बल्कि वह बैंक के आस्ति की गुणवत्ता को सालों - साल बेहतर बनाए रखने में भी मदद करती है। बैंकों के लिए अनर्जक आस्तियों की

वसूली एक बड़ी समस्या होती है। बहुत बार ऐसा पाया गया है कि ग्राहक से सही से बातचीत या पत्राचार करने पर ही वसूली हो जाती है और अनेकों बार ऐसा देखा गया है कि वसूली की सारी कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद भी वसूली नहीं हो पाती। निस्संदेह वसूली करने की भी एक भाषा होती है। वसूली प्रक्रिया की एसओपी (SOP) में भाषा पर बल देना अनिवार्य सा लगता है। वसूली की पूरी प्रक्रिया हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा में होने पर, वसूली पूरी होने की संभावना बढ़ जाती है। यदि ग्राहकों को डिमांड नोटिस या सरफेसी संबंधी कोई भी पत्राचार उनसे उनकी भाषा में किया जाए तो वह अधिक प्रभावी होगा। हमें ग्राहकों के लिए लोक अदालत एवं विशेष ओटीएस कैंप के आयोजन के संबंध में सार्वजनिक सूचना क्षेत्रीय भाषा और हिन्दी में देनी चाहिए।

हमें अपनी व्यावसायिक नीति बनाते हुए, इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे देश की अधिकतम आबादी गाँव में बसती है। ग्राहक और बैंक के बीच में किसी भी तरह की भाषाई दूरी नहीं होनी चाहिए। ग्राहकों के मन में ऐसा बैठ गया है कि सरकारी दफ्तर में बैठा हुआ कर्मचारी अंग्रेजी जुबान को अच्छे से समझता है और वह उन्हीं कार्यों को शीघ्रता से निपटाता है जिसका आवेदन अंग्रेजी में किया गया है। इसलिए अनेक ग्राहक अपनी शिकायत या अभ्यावेदन कार्यालय में नहीं देते हैं। फलस्वरूप अनेकों धोखाधड़ियों की रिपोर्टिंग समय से नहीं हो पाती। हम बैंकिंग को धोखाधड़ी से मुक्त रखने के लिए भी कृत संकल्पित हैं। बैंकिंग एक सेवा उद्योग है, जहाँ पैसों का लेनदेन मुख्य रूप से होता है। बैंकिंग लेनदेन करते समय गलती होने की संभावना भी होती है, इसलिए यदि कोई हमारे संज्ञान में इस बात को लाता है तो उसका स्वागत करना चाहिए। भाषा को बाध्यता की तरह उपयोग नहीं करना चाहिए। हमें भारतीय संविधान यह अधिकार देता है कि हम अपनी मातृभाषा में आवेदन कर सकते हैं।

दुनिया का हर समृद्ध देश ने अपने देश की भाषा को अपनाकर ही आर्थिक रूप से प्रगति की है। विश्व के धनी देशों की जनभाषा व राजभाषा संबंधी आँकड़े देखने योग्य हैं। विश्व बैंक के 2016 के आँकड़ों के अनुसार, वैश्विक स्तर पर प्रति व्यक्ति जीडीपी के आधार पर सबसे धनी देशों की जनभाषा एवं राजभाषा पर नजर डालें –

क्रम सं	देश	प्रति व्यक्ति जीडीपी	जनभाषा	राजभाषा
1	स्विटज़रलैंड	79,888	जर्मन, फ्रेंच, इटालियन	जर्मन, फ्रेंच, इटालियन
2	नॉर्वे	70,868	नॉवेजियन	नॉवेजियन
3	संयुक्त राज्य अमेरिका	57,638	अंग्रेजी	अंग्रेजी
4	डेनमार्क	53,579	डेनिश	डेनिश
5	सिंगापुर	52,962	मलय, अंग्रेजी, मैंडरिन	मलय, अंग्रेजी, मैंडरिन
6	स्वीडन	51845	स्वीडिश	स्वीडिश
7	ऑस्ट्रेलिया	49,755	अंग्रेजी	अंग्रेजी
8	नीदरलैंड	45,638	डच	डच
9	ऑस्ट्रिया	44,758	जर्मन	जर्मन
10	फ़िनलैंड	43,433	फ़िनिश	फ़िनिश

उक्त तालिका में बहुसंख्यक लोगों की स्वीकृत प्रथम भाषा ही जनभाषा है। यहाँ सूचीबद्ध भाषाओं में पर्याप्त विभिन्नता है, जिसमें यूरोपीय भाषाओं का पूर्ण अधिकार है। उल्लेखनीय है कि सभी प्रमुख 10 धनी राष्ट्रों में से किसी में भी सरकारी कामकाज की भाषा स्थानीय लोगों द्वारा प्रयुक्त जनभाषा से अलग नहीं है। यह ध्यान देने योग्य है कि उपर्युक्त 10 देशों में से अंग्रेजी सिर्फ दो देशों की ही जनभाषा एवं राजभाषा है। भाषा में वह जादू है, जो देश को हर क्षेत्र में विकास करने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। भारत के सभी सरकारी एवं गैर सरकारी कंपनियों को गाँठ बाँध लेना चाहिए कि भारत में व्यापार सिर्फ हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में ही सफल हो सकता है।

हिन्दी को बाज़ार से पूर्णत: जुड़ने में आ रही समस्याएँ एवं उनका समाधान :

- विज्ञापन एजेंसियों द्वारा पहले सारे विज्ञापन अंग्रेजी में बनाए जाते हैं और बाद में जैसे तैसे उनका काम चलाउ अनुवाद कर दिया जाता है। सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के नाम पर अनुवाद की ऐसी कृत्रिम और अटपटी भाषा तैयार हुई है, जो अंग्रेजी से भी ज्यादा क्लिष्ट है। हिन्दी और अंग्रेजी की अजीबोगरीब खिचड़ी भाषा गढ़ी जा रही है। विश्व बाज़ार की नई स्थितियों में यही हिन्दी भाषा की सबसे बड़ी विडम्बना है। हिन्दी केवल माल बेचने की भाषा बन गयी है। हमारे विज्ञापन की पहली भाषा हिन्दी होनी चाहिए अर्थात हिन्दी में सोची गई विज्ञापन की

भाषा होनी चाहिए। वही अनुवाद स्वीकृत की जानी चाहिए जो भावानुवाद हो।

- विश्व व्यापार आयात – निर्यात के क्षेत्रों में दस्तावेजों आदि के लिए विद्यमान मानक फार्म आदि मात्र दिखावा बनकर रह गए हैं, उनका उपयोग बहुत ही कम हो रहा है। ऐसे में बाज़ार से जुड़े कानूनी दाव – पेचों, विश्व व्यापार संगठन के समझौतों, उनके संबद्ध दस्तावेजों और उस समस्त प्रक्रिया में हिन्दी के प्रयोग की कल्पना करना कठिन है। सिर्फ प्रारूप द्विभाषिक बनाने से काम नहीं चलेगा बल्कि हिन्दी वाले भाग को भरवाना भी सुनिश्चित करना होगा।
- हिन्दी का पूर्णत: कंप्यूटर से न जुड़ना भी एक मूल समस्या है। बाज़ार में न के बराबर ऐसे एप्लिकेशनस हैं, जो हिन्दी में तैयार किए गए हों। सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर, हिन्दी भाषा के विकास संबंधी अनेकों अवसर हैं। सूचना क्रांति के युग में हिन्दी को अपनी महत्ता बतानी होगी। अत: इसे कंप्यूटर की भी भाषा बनना होगा। हिन्दी में ऐसे सॉफ्टवेयर विकसित करने होंगे जिनसे वैश्विक स्तर पर सूचनाओं का आदान प्रदान हो सकें। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में हम अपने यहाँ के उत्पादों पर लेबलिंग हिन्दी में करेंगे तो निश्चित ही इससे हिन्दी का प्रचार – प्रसार होगा, चाहे वे दवाइयाँ हो या अन्य पदार्थ जैसे उपभोगता वर्ग की अनिवार्य वस्तुएँ आदि।
- बहुभाषी देश होने के कारण भाषायी विवाद भी हिन्दी के लिए एक अनचाही समस्या बन गया है। हिन्दी का इतना बड़ा बाज़ार एवं ग्राहक होने के बावजूद भी हिन्दी आज तक संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा नहीं बन पायी है। हमारे हिन्दीत्तर भाषा भाषियों के मन में यह प्रश्न उठना लाजमी है कि हमने जिस भाषा को बढ़ावा देने के लिए, संविधान का सहारा लिया है, उसे वैश्विक स्तर पर आधिकारिक रूप से क्यों नहीं स्वीकारा जा रहा है। भारत सरकार को प्रयास करना चाहिए कि जल्द से जल्द हिन्दी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा घोषित करवाएँ।
- हिन्दी के व्यापकता के कारण दुनिया के 175 देशों में हिन्दी के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक माध्यम केन्द्र बन गए हैं। हिन्दी का शिक्षण एवं प्रशिक्षण विश्व के लगभग 180 विश्वविद्यालयों शैक्षणिक संस्थाओं में चल रहा है। सिर्फ अमेरिका में 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा में पढ़ाई करवाई जा रही है। रूस के मास्को शहर को हिन्दी अध्ययन – अध्यापन का केन्द्र कहा जाता है। मास्को के अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा हिन्दी से स्नातक एवं स्नातकोत्तर की पढ़ाई करवाई जाती है। यह कहा जा सकता है कि विश्व स्तर पर हिन्दी का वर्चस्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

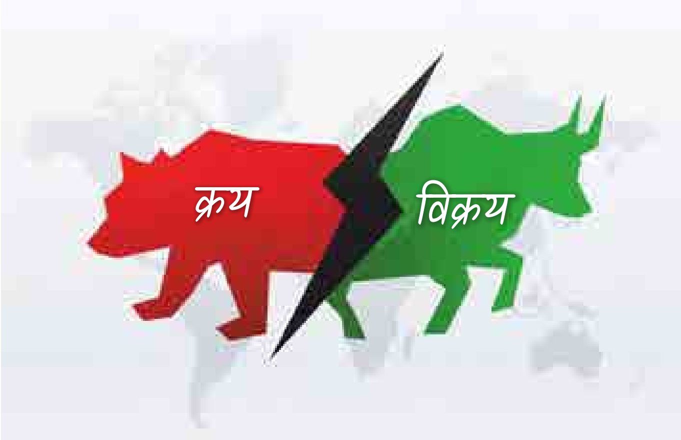

- इस डिजिटल युग में किसी भाषा के ज़िन्दा रहने और पनपने के लिए केवल उसका बोला और समझा जाना ही काफी नहीं होता है। यदि उसमें पढ़ने, लिखने और आधुनिकतम ज्ञान – विज्ञान – तकनीक में उसका इस्तेमाल करने वालों की संख्या नहीं बढ़ेगी तो वह टिक नहीं पाएगी। गूगल ने यह साझा किया है कि पिछले वर्ष गूगल पर हिन्दी भाषा में डाटा और कंटेंट की उपलब्धता करवाने में 89% की वृद्धि हुई है और अंग्रेजी में नए कंटेंट में वृद्धि सिर्फ 19% दर्ज की गई है। भारत में उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रबंधन स्तर की पढ़ाई हिन्दी माध्यम से करवाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

अत: हमें यह सोचना होगा कि हमें हिन्दी का बाज़ार बनाना है या बाज़ार की हिन्दी। हमें वह हिन्दी स्वीकार्य नहीं करनी चाहिए, जो खानापूर्ति करने के उद्देश्य से प्रयोग में लायी जा रही है। हिन्दी भाषा का विकास दूसरे भाषाओं का सिर कलम करके नहीं किया जा सकता है। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच चल रही श्रेष्ठता की प्रतिस्पर्धा को मिटाना होगा, इस तरह के शीत युद्ध का समापन अनिवार्य है। आचार्य विनोवा भावे ने कहा था – "हिन्दी को नदी नहीं, समुद्र बनना पड़ेगा।" हिन्दी भाषा का विकास एवं उसका शब्दकोष हमेशा समृद्ध करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। भाषा जितनी सरल एवं स्पष्ट होगी, वह लोगों तक आसानी से पहुँच पाएगी। सरल एवं सपाट शब्द ही बाज़ार को आकर्षित करती हैं। प्रशासनिक कार्यालयों में भी सरल शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए और क्लिष्ट अनुवाद से बचना चाहिए। ग्राहकों के लिए तैयार होने वाले प्रत्येक नवीन उत्पाद एवं स्लोगन का नामकरण हिन्दी भाषा में किया जाना चाहिए। भाषा सिर्फ व्यापार ही नहीं बल्कि आत्म गौरव का विषय भी होती है। सूचना क्रांति के दौर में, भारतीय एवं विश्व बाज़ार पर हिन्दी भाषा ने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के माध्यम से अनेक स्तरों पर अपना दबदबा जमाया है, पर आगे और भी नवोन्मेषी कार्य किए जाने शेष हैं।

शब्द-शब्दांतर

शब्द	उच्चारण	उद्भव	अर्थ
Stoical	Stoh-i- kuhl	ग्रीक	उदासीन
Trepidation	Trep-i- dey-shun	लैटिन	घबराहट
Scintilla	Sin-til-uh	लैटिन	झलक
Intrepid	In-trep-id	लैटिन	निडर/ साहसी
Equestrian	Uh-kweh-stree-uhn	लैटिन	घुड़सवार
Vicarious	Vahy-kair-ee-uhs	लैटिन	प्रतिनिधिक
Evanesce	Ev-uh-nes	लैटिन	गायब होना/ छिपना
Eulogize	yoo-luh-jahyz	ग्रीक	सराहना / प्रशंसा करना
Anodyne	an-uh-dahyn	ग्रीक	पीड़ानाशक
Whopping	hwop-ing	मध्यकालीन अंग्रेज़ी	मरम्मत
Lackadaisical	lak-uh-dey-zi-kuhl	अंग्रेज़ी	भावुक
Gory	gohr-ee	मध्यकालीन अंग्रेज़ी	रक्तमय
Mutatis Mutandis	myoo-tey-tis myoo-tan-dis	लैटिन	यथोचित परिवर्तनों सहित
Gainsay	geyn-sey	अंग्रेज़ी	अस्वीकार करना / चुनौती देना
Foment	foh-ment	लैटिन	भड़काना / उकसाना
Fallacious	fuh-ley-shuhs	लैटिन	भ्रामक / झूठा
Exonerate	ig-zon-uh-reyt	लैटिन	दोषमुक्त करना / माफी देना
Errata	ih-rah-tuh	लैटिन	शुद्धि पत्र
Ephemeral	ih-fem-er-uhl	ग्रीक	अल्पकालिक / क्षणभंगुर
De facto	dee -fak-toh	लैटिन	वास्तव में
Pro bono	proh -boh-noh	लैटिन	निशुल्क
Antagonism	an-tag-uh-niz-uhm	ग्रीक	संघर्ष
Sojourn	soh-jurn	लैटिन	अस्थाई बसेरा
Impeccable	im-pek-uh-buhl	लैटिन	दोषरहित
Nota bene	noh-tah -be-ne	लैटिन	विशेष टिप्पणी
Hospice	hos-pis	लैटिन	आश्रम
Rigor Mortis	rig-er -mawr-tis	लैटिन	कोठरता के क्षण
Per se	pur -sey	लैटिन	दरअसल
Quid Pro quo	kwid proh -kwoh	लैटिन	मुआवजा
Status Quo	Stay-tuhs- kwoh	लैटिन	यथास्थिति
Impromptu	Im-promp-too	लैटिन	बिना तैयारी के
Verbatim	ver-bey-tim	लैटिन	अक्षरशः / शब्दशः
Ergo	er-goh	लैटिन	फलस्वरूप
Allegiance	uh-lee-juhns	फ्रेंच	निष्ठा
Alleviation	uh-lee-vee-ey-shuhn	लैटिन	उन्मूलन / कमी
Demurrage	dih-mur-ij	फ्रेंच	विलंब – शुल्क
Destitute	des-ti- -tyoot	लैटिन	निराश्रित / बेसहारा
Whither	hwith-er	प्राचीन अंग्रेज़ी	कहाँ / किधर

संकलन : नेहा रंजन
सहायक प्रबन्धक, केंद्रीय कार्यालय

किसानों के लिए कितने कारगर नए कृषि कानून

फणीष मणि त्रिपाठी
प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय, राँची

सूखा-बाढ़-महाजन-मौसम-भूख-गरीबी और लगान
जिसने जब भी मौका पाया वो किसान को मार गया
उसके मरने का गम किसको ये सोचें सारे घरवाले
कितने दिन से था बिस्तर पर, अच्छा है बीमार गया

बस इतनी सी संवेदना उस अन्नदाता के लिए जो सारी वेदनाएं और मौसम के थपेड़े सहकर हमारे लिए धरती का सीना चीरकर अन्न उगाता है। ज़रा सोचिए, यदि देश का किसान खेती करना बंद कर दे तो क्या होगा। देश में अनाज का संकट खड़ा हो जाएगा। खाने के लाले पड़ जाएंगे। जो मिलेगा वो भी इतना महंगा कि आम आदमी के बस के बाहर की बात हो जाएगी। किसान, हमारे अन्नदाता, हमारा पोषण करने वाले, हमारा पेट भरनेवाले हैं। हमारे कृषि प्रधान देश की पहचान हैं किसान। स्वाधीनता पूर्व देश की सत्तर प्रतिशत से अधिक आबादी खेती पर निर्भर थी और गांवों में निवास करती थी। आज यह आंकड़ा कम तो हो गया है लेकिन अभी भी हमारे देश में गांव बहुतायत में है। ग्रामीण समाज का मूल व्यवसाय कृषि है या उससे सम्बन्धित कोई अन्य व्यवसाय है। परन्तु दुर्भाग्य आज भी हमारे किसानों के साथ जुड़ा हुआ है।

किसान हमारे देश के लिए इतनी अहमियत रखते हैं लेकिन वे और उनके मुद्दे हमेशा हाशिए पर रहते हैं। मुंशी प्रेमचंद से बेहतर भारतीय किसानों की दुर्दशा का बखान किसी ने नहीं किया है। उनके 'गोदान' में रामसेवक महतो, किसानों के शोषण के सम्बन्ध में कहता है – "यहाँ तो जो किसान है, वह सबका नरम चारा है। पटवारी को नजराना और दस्तूरी न दे तो गाँव में रहना मुश्किल। जमींदार के चपरासी और कारिन्दों का पेट न भरे तो निबाह न हो। थानेदार और कानिसिटबिल तो जैसे उसके दामाद हैं, जब उनका दौरा गाँव में हो जाए, किसान का धरम है, वह उनका आदर सत्कार करे, नगर-नियाज दे, नहीं एक रिपोर्ट में गाँव का गाँव बँध जाए। " प्रेमचंद का किसान कहता है कि हमारी गर्दन दूसरे के पैरों के नीचे दबी हुई है अकड़कर निबाह नहीं हो सकता।

आजादी के इतनें वर्षों बाद भी किसानों की स्थिति में कुछ खास सुधार नहीं आया है। आज भी वो ऋण के बोझ तले दबा हुआ आत्महत्या करने को विवश है। प्रत्येक वस्तु की कीमत आसमान पर है, परन्तु किसान इन बढ़ी कीमतों का साझीदार कभी नहीं बन पाया। बिचौलिए और व्यापारी उसकी मेहनत का भरपूर फायदा उठाते हैं और किसान उसी बदहाली और गरीबी में अपना दिन बसर करता है।

हो जाए अच्छी भी फसल, पर लाभ कृषकों को कहाँ
खाते, खाई, बीज ऋण से हैं रंगे रक्खे जहाँ
आता महाजन के यहाँ वह अन्न सारा अंत में
अधपेट खाकर फिर उन्हें है कांपना हेमंत में
मानो भुवन से भिन्न उनका, दूसरा ही लोक है
शशि, सूर्य हैं फिर भी कहीं, उनमें नहीं आलोक है

शुक्र है कि कम से कम बीते दिनों हमारे किसानों का मुद्दा सुर्खियों में तो आया। जी हाँ, सितंबर में संसद सत्र में कृषि सम्बन्धी तीन बिल पास किए गए और देश में एक बार फिर किसानों के हित-अहित के बारे में बहस शुरू हो गई। सरकार ने कहा कि ये कृषि बिल देश में किसानों की स्थिति में सुधार लाएंगे, बिचौलिए खत्म हो जाएंगे। किसानों को अपने उपज की सही कीमत मिल सकेगी और उनके हितों की रक्षा हो सकेगी। हालांकि विपक्ष को आशंका है कि इन कृषि कानूनों की वजह से लार टपकाते बाज़ार के भेड़ियों के सामने किसान निवाला बन जाएंगे क्योंकि हमारे किसान उन्मुक्त व्यापार के लिए परिपक्व नहीं हैं। आइए हम इन तीन बिलों पर विस्तार से चर्चा करते हैं और समझते हैं कि सच्चाई क्या है।

1. कृषि उत्पादन व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) बिल, 2020

14 सितंबर 2020 को यह बिल केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर द्वारा सदन पटल पर रखा गया। जगह-जगह किसानों के विरोध, विपक्ष के हंगामे और इस मांग के बीच कि यह बिल सेलेक्ट कमिटी

को भेजा जाए, बिल राज्यसभा से पास हो गया। यह बिल जून 2020 में लागू अध्यादेश की जगह लेगा।

बिल के प्रावधान

i) बिल का पहला प्रावधान : यह प्रावधान किसानों को यह छूट देता है कि वे अपने कृषि उपज को राज्य कृषि उत्पाद विपणन समिति कानूनों (APMC Acts) में चिह्नित मंडियों के परिसर से बाहर मुक्त रूप से बेच सकते हैं। एपीएमसी की मंडियों से बाहर के स्थानों या बाज़ारों पर एपीएमसी कानून की जगह यह बिल प्रभावी होगा। यानि वन कंट्री, वन मार्केट। अब कोई भी किसानों से कृषि उपज खरीद सकता है। किसानों के सामने एपीएमसी की मंडियों में जाकर बिचौलियों को अनाज बेचने की बाध्यता नहीं रहेगी। अगर मंडी से बाहर उन्हें अच्छा दाम मिल रहा है तो वे अपने उपज का सौदा कर सकेंगे।

ii) कृषि उत्पाद : बिल के अंतर्गत कृषि उत्पाद का अर्थ है खाद्य पदार्थ जिसमें दलहन, तिलहन, फल, सब्जियां, तेल, गन्ना, तेलबीज, मसाले, चना, पोल्ट्री के उत्पाद, दुग्ध, मत्स्य इत्यादि शामिल हैं। इनके अलावा कपास, जूट व कपास बीज और जानवरों के चारे, खली इत्यादि भी आएँगे। किसी भी एपीएमसी अधिनियम के तहत विनियमित कृषि उत्पाद भी इसमें आएंगे।

iii) किसान की परिभाषा : किसान वह व्यक्ति है जो स्वयं या मजदूरों के जरिए कृषि उपजों के उत्पादन कार्य में जुड़ा हुआ है। इसमें किसान उत्पादक संगठन (Farmer Producer Organisation-FPO) भी शामिल हैं। एफपीओ किसानों का ऐसा समूह होता है जो किसी कानून के तहत पंजीकृत होते हैं और केंद्र अथवा राज्य सरकार की योजना के अंतर्गत आते हैं।

iv) कृषि उपज की ट्रेडिंग के लिए योग्यता: कृषि उपज की खरीद-फरोख्त किसान, एफपीओ और व्यापारी कर सकते हैं। व्यापारी का अर्थ होगा वे लोग जो कृषि उत्पादों की खरीद थोक व्यापार, निर्यात, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, उत्पादन, रीटेल, खपत के लिए करते हैं।

v) अधिसूचित कृषि उपज में व्यापार: ऐसे कृषि उपजों में व्यापार के लिए किसान, एफपीओ या कृषि सहकारी समितियां अधिकृत होंगी। ऐसे व्यापारी भी योग्य होंगे जिनके पास आयकर कानून, 1961 के अतंर्गत पैन कार्ड होगा या केंद्र सरकार द्वारा मान्य कोई अन्य दस्तावेज़ होगा। जो इन प्रावधानों का उल्लंघन करेगा उस पर रुपए 25,000 से लेकर रुपए 5 लाख तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। लगातार उल्लंघन होने पर प्रतिदिन रुपए 5,000 का जुर्माना अदा करना पड़ेगा।

vi) किसानों को भुगतान : किसानों से खरीद करने वाले व्यापारियों को उसी दिन अथवा अधिकतम 3 दिनों के भीतर भुगतान करना होगा। तीन दिनों के भीतर भुगतान की स्थिति में व्यापारी किसानों को खरीद के दिन रसीद ज़रूर देंगे।

vii) इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म : बिल में कृषि उपजों के व्यापार के लिए इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म स्थापित करने की बात है। जहां कृषि उत्पादों की ऑनलाइन खरीद-बिक्री और डिलिवरी होगी। ऐसे प्लेटफॉर्म की स्थापना और उनका संचालन आयकर कानून, 1961 के तहत पैन कार्ड धारक अथवा केंद्र द्वारा अधिसूचित दस्तावेज़ धारक कंपनियां, पार्टनरशिप फर्म अथवा सोसायटीज़, एफपीओ और कृषि सहकारी समितियां कर सकेंगी। केंद्र सरकार द्वारा इस प्रकार के प्लेटफॉर्म के लिए नियम – कायदे तय किए जाएंगे। इन प्लेटफॉर्म के लिए पंजीकरण का तरीका, व्यवहार मानक, गुणवत्ता की जाँच के तौर तरीके और भुगतान नियम आदि केंद्र द्वारा निर्धारित मानदंडों के अनुसार होगा। जो भी संचालक इन नियमों का उल्लंघन करता पाया जाएगा उस पर रु 50,000 से लेकर रु 10 लाख तक का जुर्माना लगेगा और बार-बार नियम तोड़ने पर रु 10,000 रोजाना जुर्माना देना होगा।

viii) एपीएमसी मंडी से बाहर राज्य शुल्क नहीं लगाएंगे : बिल में स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि राज्य सरकारें एपीएमसी से बाहर की व्यापार मंडियों, केंद्रों में अधिसूचित कृषि उपज के व्यापार पर किसी भी प्रकार का बाज़ार शुल्क, सेस या कोई अन्य प्रभार नहीं लगाएंगी।

ix) विवाद निपटान प्रणाली : किसान और व्यापारी में किसी भी प्रकार के विवाद का निपटारा तहसीलदार द्वारा आपसी समझौते से किया जाएगा। तहसीलदार अपने अधिकारियों के अंतर्गत एक बोर्ड

का गठन करेंगे जिसमें दोनों पक्षों के लोगों को समान भागीदारी मिलेगी। यदि 30 दिनों में विवाद नहीं सुलझता है तब तहसीलदार सुनवाई करेंगे। यदि तब भी समाधान नहीं मिलता है तो उप-जिलाधिकारी अथवा जिलाधिकारी के समक्ष अपील की जा सकती है।

2. मूल्य आश्वासन पर किसान (बंदोबस्ती और सुरक्षा) समझौता और कृषि सेवा बिल, 2020-

यह बिल किसानों के लिए संविदा खेती का ढांचा प्रदान करता है। फसल बोने के वक्त ही किसान खरीदार से समझौता कर सकते हैं कि वो किस भाव पर अपनी कृषि उपज को बेचेंगे। आइए बिल के प्रावधानों पर एक नज़र डालते हैं :

i. किनके साथ किसान कर सकते हैं समझौता : इन्हें स्पॉनसर्स के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें व्यक्ति, पार्टनरशिप फर्म, कंपनियां, लिमिटेड लायबिलिटी ग्रुप और सोसायटियां शामिल हैं जो किसानों के साथ उनकी उपज खरीदने का समझौता कर सकती हैं।

ii. कृषि समझौता: बिल में प्रावधान किया गया है कि किसान उत्पादन या उपज से पहले कृषि समझौता कर सकते हैं ताकि वे स्पॉन्सर्स को अपनी उपज बेच सकें। ऐसे समझौते किसान और स्पॉन्सर के बीच हो सकते हैं या किसान, स्पॉन्सर और अन्य पक्ष के बीच हो सकते हैं। अन्य पक्ष की भूमिका और सेवाओं, भले ही वो बिचौलिए ही क्यों न हों, के बारे में समझौते में स्पष्ट रूप से जिक्र होना चाहिए। राज्य सरकारें ये सुविधा प्रदान कर सकती हैं कि ऐसे कृषि समझौते इलेक्ट्रॉनिक रूप में भी पंजीकृत किए जा सकें।

iii. आपसी सहमति : कृषि समझौते दोनों पक्षों द्वारा सहमत नियम व शर्तों आधारित होंगे जिसमें आपूर्ति, गुणवत्ता, मानकों, कषि उपज एवं कषि सेवा की कीमत का जिक्र होगा। कृषि सेवाओं में शामिल होगा बीज, चारा, कृषि रसायन, मशीन एवं तकनीक, परामर्श, गैर-रसायन कृषि सामग्रियों इत्यादि की आपूर्ति।

iv. समझौते की अवधि : यह अवधि कम से कम एक फसल मौसम के लिए या पशुधन के एक उत्पादन चक्र के लिए होगी। समझौते की अधिकतम अवधि 5 वर्ष होगी। जिन कृषि उपजों का उत्पादन वर्ष 5 साल से अधिक है उसके लिए समझौते की अधिकतम अवधि किसान और खरीददार आपसी सहमति से तय कर सकते हैं।

v. कृषि उपज की कीमत का निर्धारण : स्पॉन्सर द्वारा खरीदे जाने वाले कृषि उपज की कीमत का समझौते में जिक्र किया जा सकता है। कीमत निर्धारण की पद्धति का उसमें वर्णन हो सकता है। यदि कीमत किन्हीं शर्तों पर आधारित है तो ऐसे कृषि उपजों के सम्बन्ध में उस समझौते में गारंटीकृत मूल्य, इस मूल्य से ऊपर यदि कोई बोनस या प्रीमियम दिया जाना है तो उसकी कीमत का संदर्भ दिया जाना चाहिए। कीमत का संदर्भ एपीएमसी की मंडियों में चल रही कीमतों या अन्य बेंचमार्क कीमतों से लिया जा सकता है।

vi. डिलिवरी : निर्धारित समय पर स्पॉन्सर द्वारा सीधे कृषि द्वार पर डिलिवरी ली जा सकती है अथवा किसान भी डिलिवरी दे सकता है। किसानों द्वारा डिलिवरी किए जाने के मामले में स्पॉन्सर को वो सारे बंदोबस्त करने होंगे जिससे कि समय पर डिलिवरी सुनिश्चित की जा सके। बिल के अनुसार डिलिवरी से पहले स्पॉन्सर उपज की गुणवत्ता की जाँच कर सकता है। यदि निरीक्षण नहीं किया जाता है तो भी यह समझा जाएगा कि स्पॉन्सर ने उपज की जाँच कर ली है और उसे निर्धारित समयावधि में उपज की डिलिवरी लेनी होगी।

vii. भुगतान : बीज उत्पादन के मामले में स्पॉन्सर को दो तिहाई कीमत बीज की डिलिवरी लेते समय चुकानी होगी और बाकी की रकम डिलिवरी के 30 दिनों के भीतर विधिवत प्रामाणिकरण के पश्चात दी जा सकती है। अन्य सभी मामलों में समझौते में निर्धारित की गई पूरी कीमत डिलिवरी के समय चुकानी होगी और एक पावती किसान को दी जानी चाहिए। सरकार भुगतान का तरीका तय कर सकती है।

viii. मौजूदा कानूनों से छूट : कृषि समझौते में वर्णित कृषि उपज को राज्य सरकार के उन अधिनियमों से छूट प्राप्त होगी जो कृषि उपजों की खरीद बिक्री के विनियमन से सम्बन्धित होंगे। ऐसे कृषि उपज, आवश्यक वस्तु अधिनियम,1955 में निर्धारित भंडारण सीमा की शर्तों से भी मुक्त होंगे।

ix. विवाद निपटान : बिल में प्रावधान किया गया है कि कृषि

सम्बन्धी समझौते को लेकर यदि कोई विवाद उत्पन्न होता है तो उसके लिए समाधान बोर्ड होगा और समाधान की एक नियत प्रक्रिया होगी। सबसे पहले सभी झगड़े या विवाद समाधान बोर्ड के समक्ष जाएंगे। यदि 30 दिनों में समाधान नहीं आता है तो समाधान के लिए मामला तहसीलदार के पास जाएगा। एसडीएम के निर्णय से असंतुष्ट पक्ष अपीली प्राधिकारी, जिलान्यायाधीश अथवा उप-जिलाधीश के पास न्याय के लिए जा सकता है जहाँ 30 दिनों के भीतर मामले का निबटारा करना होगा।

3. आवश्यक वस्तु (संशोधन) कानून, 2020

हमारा देश करीबन सभी कृषि उत्पादों में आत्मनिर्भर हो गया है लेकिन कोल्ड स्टोरेज, वेयरहाउस, प्रसंस्करण एवं निर्यात में कम निवेश से किसानों को उनके उपज की सही कीमत नहीं मिल पा रही है और इसमें आवश्यक वस्तु अधिनियम भी बाधक बना है। अच्छी उपज होने पर किसानों को उचित कीमत नहीं मिलती। इस बिल से कोल्ड स्टोरेज में निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा और खाद्य आपूर्ति की कड़ियों का आधुनिकीकरण करने में मदद मिलेगी। पर्याप्त भंडारण क्षमता विकसित होने पर अनाज की बर्बादी भी रुकेगी। निजी निवेशकों के मन से कारोबार परिचालन में अत्यधिक विनियामक हस्तक्षेप का डर समाप्त होगा और निवेश के रास्ते खुलेंगे।

यह कानून मूल रूप से वर्ष 1955 में बना था। जिसकी मदद से केंद्र सरकार आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन, आपूर्ति, वितरण, भंडारण और व्यापार पर अंकुश रखती थी। किसी अनाज का कितना भंडारण हो सकता है और अनाज व अन्य खाद्य पदार्थों की कालाबाज़ारी रोकने के लिए कानून लाया गया था। परन्तु इस बिल के तहत सरकार सिर्फ युद्ध और आपदा के समय भंडारण का नियमन करेगी। बाकी समय भंडारण पर रोक नहीं होगी।

खाद्य वस्तुओं का विनियमन : यह अधिनियम केंद्र सरकार को कुछ कमोडिटीज़ को (जैसे खाद्य पदार्थ, दवाई, खाद, पेट्रोलियम उत्पाद) को आवश्यक वस्तु के रूप में अधिसूचित करने का अधिकार देता है। इस बिल में यह प्रावधान किए गए हैं कि केंद्र सरकार सिर्फ कुछ खाद्य पदार्थों की आपूर्ति पर, सिर्फ विशेष परिस्थितियों में ही अंकुश लगा सकती है जिसमें अनाज, दाल, टमाटर,आलू, प्याज, खाद्य तेल, और तेल शामिल हैं। ऐसी परिस्थितियां युद्ध, सूखा, कीमतों में अत्यधिक वृद्धि और गंभीर किस्म की आपदा हो सकती है। बिल में अनाज अनाज, दाल, तिलहन, खाने के तेल,प्याज और टमाटर को आवश्यक वस्तुओं के दायरे से बाहर रखा गया है।

भंडारण सीमा : इस बिल में बागबानी उत्पादों की खुदरा कीमत में 100% वृद्धि होने पर और खराब नहीं होने वाली कृषि खाद्य वस्तुओं की खुदरा कीमतों में 50% बढ़ोत्तरी पर ही भंडारण सीमा लगाने का प्रावधान किया गया है। कीमत में वृद्धि की निर्धारण पिछले 12 महीनों की कीमतों अथवा पिछले 5 वर्षों की औसत खुदरा कीमत को ध्यान में रखकर लिया जाएगा।

भंडारण सीमा से छूट : ऐसे व्यक्तियों, खाद्य संसाधन से जुड़ी संस्थाओं या वैल्यू चेन पार्टिसिपेंट को भंडारण सीमा से छूट से मिलेगी यदि उनके पास स्थापित संसाधन क्षमता से कम सीमा में माल है। वैल्यू चेन पार्टिसिपेंट वे लोग होंगे जो कृषि उत्पादों के संसाधनीकरण, पैकेजिंग, भंडारण, यातायात और वितरण में लगे होंगे। जन वितरण प्रणाली को भी इस भंडारण सीमा से छूट प्राप्त होगी।

बिल के प्रावधानों से लगता है कि तीनों कृषि बिल देश में कृषि सुधार कि दिशा में बड़ा कदम हैं। किसानों को अपनी उपज कहीं भी बेचने की आजादी, बिचौलियों का लगभग समाप्त होना और उपज की कीमत में किसानों को बड़ा हिस्सा मिलने की संभावना किसानों के जीवन में सुधार ला सकते हैं और खेती में नई जान फूँक सकते हैं। बिल का विरोध करने वाले मानते हैं कि सरकार इन तीन बिलों के अमल में आने के बाद न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करने की व्यवस्था खत्म कर देगी लेकिन सरकार ने इन आशंकाओं को सिरे से खारिज किया है। दिगर बात तो ये कि एमएसपी का लाभ सिर्फ मुट्ठी भर किसान ही ले पाते हैं। खेती और खेतीहर की स्थिति सुधारने के लिए सरकार को ग्रामीण स्तर पर रोज़गार के साधन मुहैया करना होंगे ताकि कृषि पर निर्भर आवश्यकता से अधिक लोग अन्य रोजगार पा सकें, उन्हें आय का स्रोत मिले ताकि कृषि उपजों की माँग भी बढ़े और किसानों को उनके पैदावार की अच्छी कीमत मिले।

दासता की दास्तान

शुभम दीक्षित
सहायक प्रबन्धक, केंद्रीय कार्यालय

इस दुनिया में पहली बार लिपि का प्रयोग ही शायद अपनी बात को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने के लिए किया गया होगा और जरिया रहा होगा ख़त... ख़त जिस पर सवार हो कितना कुछ जाता होगा इस पार से उस पार ! लेकिन एक बात जो निश्चित रूप से कही जा सकती है कि "ख़तों का एक बेहद ही लंबा इतिहास रहा होगा"। लेकिन जब मैं इस स्तम्भ की बात करता हूँ तो मैं इसे कुछ इस तरह से लिखना चाहूँगा कि "इस लंबे से इतिहास में कई ख़त रहे होंगे"। कुछ ख़त होंगे जो लिखे गए होंगे, स्याही की जगह आंसुओं से, खून से या शराब से; शायद कुछ ने बदला होगा तो कुछ ने बनाया होगा एक इतिहास; कई ऐसे ख़त भी होंगे जो अपने आप में समेटे होंगे एक सम्पूर्ण काल; जिनको लिखने वाले ने एक पूरा जीवन उतार दिया होगा एक कोरे कागज़ पर। ख़त, जिनसे गुज़रते हुए एक पूरे दौर से गुज़रा जा सकता है। ऐसे ही कुछ ख़त हम इतिहास के पन्नों से आपके लिए चुन कर कर लाए हैं, जो मूल रूप से भले ही किसी भी भाषा में लिखे गए हों, हम उनका अनुवाद इस आशा के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं कि आप उन्हें पसंद करेंगे।

इस कड़ी का पहला ख़त हम आपके लिए लेकर आए हैं कर्नल पी एच एंडरसन के लैटर-बॉक्स से। ये ख़त उस ख़त का जवाब है जो सन 1864 में जॉर्डन को अपने पुराने मालिक के पते से मिला था। अगर बहुत ही कम शब्दों में जॉर्डन की बात करें तो जॉर्डन एंडरसन जिन्होंने प्लांटेशन फार्म (बिग स्प्रिंग) पर बतौर दास अपनी ज़िंदगी के 32 साल बिताए थे, को बमुश्किल ही यूनियन आर्मी के जवानों की मदद से आज़ाद करवाया गया था। दासता से आज़ादी के बाद जॉर्डन एंडरसन आज़ादी को अपनी अगली पीढ़ी को मजबूती के साथ सौंपने के लिए ओहायो में आ कर रहने लगे, जहाँ उन्होंने अपनी मेहनत की कमाई से अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दी, अपने परिवार की बेहतर परवरिश की और कभी पलट कर नहीं देखा। सिविल वार खत्म होने के लगभग एक साल बाद ही जॉर्डन को पैट्रिक हेनरी एंडरसन (जोकि जॉर्डन का पुराना मालिक हुआ करता था) का एक ख़त मिला। ख़त में पैट्रिक ने जॉर्डन को प्लांटेशन के काम पर वापस आ कर उसके डूबते हुए प्लांटेशन के व्यापार को बचाने की विनती की थी। ये ख़त जॉर्डन ने 7 अगस्त 1864 को अपने एक नए साथी पैट्रिक की मदद से कर्नल पी एच एंडरसन के नाम लिखवाया था। इस ख़त ने उस वक्त काफी चर्चा कमाई और इसे उस वक्त के कई नामचीन अख़बारों में शब्दशः प्रकाशित किया गया। जॉर्डन कभी भी लौट कर बिग स्प्रिंग नहीं गए और 1907 में 81 साल की उम्र में एक आज़ाद मौत पाई।

ख़त

डेटन, ओहायो **7 अगस्त 1865**

मेरे पुराने मालिक कर्नल पी एच एंडरसन, बिग स्प्रिंग के नाम,

श्रीमान, आपका ख़त मिला और मुझे जान कर खुशी हुई कि आप जॉर्डन को नहीं भूले और आप मुझे काम पर वापस बुलाना चाहते हैं और चाहते हैं कि मैं वापस आकर दोबारा आपके साथ रहूँ। अपने ये वादा भी किया है कि आप मेरा इतना ख़्याल रखते हैं जितना कि कोई और नहीं रख सकता। लेकिन मैं कई बार आपके बारे में सोच कर भी बेचैन हो जाता हूँ। एक बार को तो मुझे लगा था कि यंकियों ने आपके घर में जमा नर कंकालों को देख कर आपको बहुत पहले ही गर्दन के बल लटका दिया होगा। मुझे लगता है शायद उन्होंने कभी सुना ही नहीं कि आप कोलोनल मार्टिन जा कर बटालियन शिविरों में छूट गए यूनियन के जवानों को मारने जाने वाले थे। हालांकि आपके यहाँ से निकाले जाने से पहले आपने मुझ पर ही दो बार गोली ज़रूर चलाई थी। मैं ये बिलकुल नहीं सुनना चाहता था कि आपको कोई नुकसान हुआ है और मुझे खुशी है कि आप ज़िंदा है। ये मेरे लिए बेहद खुशी की बात होगी अगर मैं अपने पुराने घर वापस आ सकूँ और मिस मैरी, मिस मार्टा, एलेन, आइशर, ग्रीन और ली को देख सकूँ। उन सब को मेरा प्यार दीजिएगा और कहिएगा कि अगर इस दुनिया में न सही तो कोई बात नहीं, हम एक बेहतर दुनिया में ज़रूर मिलेंगे। जब मैं नाशविले हॉस्पिटल में काम कर रहा था तो मुझे आपसे मिलने जाना चाहिए था, लेकिन मुझे एक पड़ोसी के माध्यम से पता चला कि हैनरी ने मुझे देखते ही गोली मारने की इच्छा ज़ाहिर की है।

मैं ज़रा तफ़सील से जानना चाहता हूँ कि आपने जो प्रस्ताव मुझे दिया है उसमें कौन-कौन सी उन्नत संभावनाएं हैं। मैं यहाँ बेहद ही अच्छे से हूँ, मुझे हर महीने 25 डॉलर मिलते हैं, खाने और कपड़े मिलते हैं, मैंडी के लिए एक सुकून भरा घर है – लोग उसे मिसेज़ एंडरसन बुलाते हैं- मेरे बच्चे मिली, जेन और ग्रंडी स्कूल जा रहे हैं और बहुत अच्छे से सीख रहे हैं। वो संडे स्कूल जाते हैं और मैं मैंडी के साथ नियमित रूप से चर्च जाता हूँ। हम से अच्छी तरह बर्ताव किया जाता है। यहाँ कुछ एक बार कुछ एक लोगों से सुनने को मिलता है कि "ये गहरे रंग के लोग टेनेसी में गुलाम थे"। बच्चे जब ये सुनते हैं तो उन्हें बुरा लगता है, लेकिन मैंने उन्हें समझाया कि टेनेसी के कर्नल एंडरसन से जुड़े होना कोई शर्म की बात नहीं है। हम लोगों को भी बहुत से गहरे रंग वालों की तरह ही ये कहने में फ़क्र होगा कि हम आपके गुलाम थे। अब आप अगर मुझे बताएं कि आप मुझे कितनी मज़दूरी देंगे तो मेरे लिए ये फ़ैसला करना आसान होगा कि मुझे वापस आने में कोई फ़ायदा भी होगा या नहीं!

आपने बताया कि मैं मेरी आज़ादी पा सकूँगा, उस बारे में मैं आपको बताना चाहूँगा कि मुझे मेरी आज़ादी के कागज़ात नश्विल्ले के विभाग के जर्नल प्रोवोस्ट-मार्शल-जर्नल के द्वारा 1864 में ही दिए जा चुके हैं और अब उसके लिए मैं आपकी दया का मोहताज़ नहीं हूँ। बिना किसी सबूत के कि आप हमारे साथ इंसाफ और दयापूर्ण व्यवहार करेंगे, मैडी उस घर में वापस जाने से डर रही है। हमने तय किया है कि जिन सालों में हमने आपके यहाँ काम किया है, क्यूँ न आप उन सालों की पगार हमें भेज कर अपनी नेक नियत का सबूत दें। ये हमें पुराने ज़ख़्मों को भूलने और आपको माफ़ करने में मदद करेगा और हमारी भविष्य की न्यायपरक नई दोस्ती की नीव रखेगा। मैंने वफ़ादारी के साथ 32 सालों और मैंडी ने 20 सालों तक आपकी सेवा की है। मेरे लिए 25 डॉलर हर महीन और मैडी के लिए 2 डॉलर हर हफ्ते के हिसाब से अगर हमारी पगार को जोड़ा जाए तो ये कुल मिला कर ग्यारह हज़ार छः सौ आठ डॉलर होती है, जोकि आपने कभी दी ही नहीं। ऐसे में आप पर कुछ ब्याज भी बनता है जिसमें से आप हमारे कपड़ों पर हुए खर्च, तीन बार मेरे लिए बुलाए गए डॉक्टर के खर्च, और मैडी के दाँत को निकलवाने के लिए किए गए खर्च को निकाल दें तो भी कुछ रकम बचेगी। आप ब्याज की बकाया रकम को भी भेज दें जिससे हमें विश्वास हो कि आपने हमारे साथ इंसाफ किया है। कृपया रकम को एडम एक्स्प्रेस के माध्यम से श्रीमान वी विंटर्स, डेटन ओहायो के नाम भिजवा दें। अगर आप अपने पुराने और बफ़ादार मजदूरों की मजदूरी नहीं दे सकते तो हमारे पास आपके भविष्य के वादों पर भरोसा करने के लिए कोई वजह नहीं बचती। हमें भरोसा है कि ईश्वर ने आपकी आँखें खोल दी हैं कि आप और आपके पिता ने मेरे और मेरे पिता के साथ कितना बुरा बर्ताव किया है और पीढ़ियों तक बिना किसी मेहनताने के हमारे साथ बदतर सुलूक किया। यहाँ हर शनिवार को मेरे काम का भुगतान किया जाता है लेकिन नीग्रोज़ के लिए टेनेसी में ऐसा कोई दिन कभी आता ही नहीं था। टेनेसी में नीग्रोज़ की हालत घोड़ों या गायों से भी ज़्यादा बदतर थी। ज़रूर ही वो दिन भी आएगा जब उन सभी का इंसाफ होगा जिन्होंने अपने खरीदे हुए मजदूरों के साथ धोखा किया है।

इस ख़त के जवाब में बताइए कि क्या बिग स्प्रिंग में मेरी मिली और जेन, जोकि अब बड़ी हो चुकी हैं और बेहद ही खूबसूरत हैं, के लिए कोई सुरक्षा होगी? आप जानते हैं कि बेचारी मटिल्डा और कैथरीन के साथ क्या हुआ। अपनी बच्चियों को वहाँ ला कर अपने छोटे मालिकों (मालिक के बच्चे) से प्रताड़ित करवाने और उनके दुराचार का शिकार बनवाने से बेहतर होगा कि हम सब यहीं रहें और भूख के चलते दम तोड़ दें। मुझे कृपया ये भी बताएं कि क्या वहाँ आपके आस-पास में गहरे रंग के बच्चों के लिए कोई स्कूल खुल गया है? अब मेरे ज़िंदगी की सबसे बड़ी ख़्वाहिश है कि मैं अपने बच्चों को तालीम और कुछ अच्छी आदतें दे सकूँ।

जॉर्ज कार्टर को मेरा सलाम कहिएगा और जब आप मुझ पर गोलियां चला रहे थे उस वक्त आपके हाथ से पिस्तौल छीनने के लिए मेरी तरफ से उसका शुक्रिया अदा करिएगा।

आपका पुराना गुलाम
जॉर्डन एंडरसन

देशकाल

अगर भारत और एशिया की बात ये मानते हुए छोड़ भी दें कि उसके बारे में सबने जाना, देखा, पढ़ा और समझा है तो भी गुलामी/ दासता के इतिहास काफी बड़ा और पुराना है लेकिन जहाँ से मैं अपनी बात की कड़ी जोड़ना चाहूँगा वो 15वीं शताब्दी थी, जब बड़े-बड़े जहाजों से समंदर को नापना शुरू कर दिया गया था। पहली बार जब कोलंबस समुद्री यात्रा के दौरान उत्तरी अमेरिका पहुँचा और सब ने उसकी खोज को नई दुनिया की पदवी से नवाज़ा। मगर मेरी नज़रों में वो बसी बसाई दुनिया तक पहुँचने के नए रास्तों की खोज भर थी।

कोलंबस ने जिन्हें रेड इंडियंस का नाम दिया, कोलंबस के तट छूने से पहले भी उनका अपना वजूद, अपनी संस्कृति, अपनी भाषा तथा अपना समृद्ध अतीत रहा होगा। लेकिन इतिहास गवाह रहा है कि अक्सर बड़े शोर के बीच छोटी आवाज़े और चीखें दब जाती हैं। कोलंबस की ही तरह कुछ एक व्यापरी और कुछ एक खोजी भी जब नए समुद्री रास्तों की खोज में निकले तो उनमें से कुछ एक के कदम अफ्रीका की धरती पर भी पड़े। वो लंबे चौड़े कद-कांठी वाले अफ्रीकी मूल के लोगों के शारीरिक गठन, उनके बाहुबल के मुरीद हो गए। उन्हें जहाज पर चप्पू चलाने के लिए ऐसे ही लोगों की तलाश थी जो कम से कम पगार या महज दो वक्त के खाने के लालच में जहाजों पर मजदूरी के लिए राज़ी हो जाएँ। इतिहास का यही वो मोड था जहाँ से अश्वेतों के खिलाफ दमन चक्र शुरू हुआ जो काफी लंबे समय तक जारी रहा।

जिस कोलंबस को हमारे इतिहास ने खोजी की पहचान दी है, का इतिहास हमारे पढ़े इतिहास से काफी जुदा है। हमने बचपन में गीत गाए "कोलंबस-कोलंबस छुट्टी है आई, आओ कोई नया मुल्क ढूँढे चल कर भाई..." लेकिन उस नए मुल्क को ढूँढने के बाद कोलंबस ने क्या किया ? उन लोगों के साथ क्या हुआ ? उनके प्रकृतिक संसाधनों की लूट की होड़ में उन पर कितने हमले हुए ? उनमें कितने लोगों को बंधक बना कर उनकी आने वाली कई पीढ़ियों को दासता के दलदल में झोंक दिया गया ? उनकी महिलाओं पर कितने जुल्म किए गए ? उस वक्त अगर इन सारे सवालों के जवाब हमें दिए गए होते तो शायद ही कोई बालमन नए मुल्क को खोजने के लिए कोलंबस को निमंत्रण देता!

शुरुआती दौर में जिन नीग्रोज़ को जहाजों पर चप्पू चलाने के लिए बंधक बनाया जाता था, जल्द ही उनको यूरोप के कई देशों में ले जा कर उनकी बिक्री शुरू कर दी गई। चाहें कहीं का भी बाज़ार हो वहाँ सिर्फ एक ही सिद्धान्त काम करता है "मांग का सिद्धान्त", जैसे-जैसे मांग बढ़ेगी किसी न किसी को उसकी आपूर्ति भी करनी होगी। देखते ही देखती गुलामों की बिक्री का व्यवसायीकरण हो गया। शुरुआती तौर पर जिन नीग्रोज़ को बेहतर भविष्य के सपने दिखाकर यूरोप लाया जाता था और बेंच दिए जाता था, अब उतने भर से मांग की पूर्ति नहीं हो पा रही थी तो उनके गाँवों / कबीलों पर हमला कर के उन्हें बंधक बनाया जाने लगा। हालात यहाँ तक गंभीर हो गए कि यूरोप में पहले से ही काम कर रहे कुछ गहरे रंग के लोगों को भी अगवा कर के नीग्रोज़ के साथ बेंचा जाने लगा।

जब हम नीग्रोज़ या अफ्रीकी मूल के लोगों के गाँवों/ कबीलों को गुलाम बनाने के लिए किए गए हमलों की बात करते हैं तो इतिहास में एक नाम निकल कर सामने आता है। इंग्लैंड के "जॉन हॉकिंस" का, इनसे जुड़ा एक किस्सा भी है कि 1567 के दौर में गुलामों को जुटाने के लिए इन्होंने सिएरा लियोन के एक गाँव पर हमला किया और आदिवासियों से मुँह की खानी पड़ी। अपनी गलतियों से सीखते हुए हॉकिंस ने दूसरी उपजाति के लोगों से दोस्ती की और उनकी मदद के साथ दुश्मन कबीलों पर लगातार हमले करते हुए बड़ी संख्या में गुलामों को जुटाना शुरू कर दिया और जमकर मुनाफा कमाया। हॉकिंस की राह पर कई और लोग भी चले और देखते ही देखते अफ्रीका में गुलामों की तस्करी की जड़ें बहुत गहरे तक धंस गईं। इस बात को कुछ इस तरह भी समझा जा सकता है कि हमलों में कबीलों के मृतकों की संख्या (लगभग 7.5 करोड़) को अगर अलग ही रहने दे तो भी लगभग डेढ़ करोड़ से अधिक लोगों को गुलाम बनाकर यूरोप के अलग अलग देशों में बेच दिया गया।

वक़्त बीतता गया और दासता का कारोबार बढ़ता चला गया। 19वीं शताब्दी के आगमन तक दासों के कारोबार के लिए बाकायदा मंडियाँ सजाई जाने लगीं, जहाजों के तट छूने से पहले ही उनमें अफ्रीकी महाद्वीप के अलग-अलग हिस्सों से लाए जा रहे गुलामों के बारे में इश्तेहार छाप कर दीवारों पर चिपका दिए जाते थे, उनके पोस्टरों

नीग्रोज़ की नीलामी / बिक्री का केन्द्र और ऊपर उससे संबंधित इश्तहार

और बांटे जाने वाले पैम्फ़लेट्स उनके ज़मीन पर उतारने से पहले ही पूरे शहर में बंट जाते थे। उन सभी पोस्टर्स में गुलामों की होने वाली नीलामी की तारीख और जगह के बारे में जानकारी दी होती थी। मुनाफे के मामले में ये धंधा इतना फायदेमंद था कि कई बार जहाज़ में छोटी सी जगह में दम घुटने से मर जाने, लुटेरों से जहाज़ को बचाने के लिए जहाज़ की रफ्तार बढ़ानी पड़ती थी और इस के लिए कुछ गुलामों को बीच समुद्र में फेंक देने के चलते लगभग 25 से 30 प्रतिशत गुलाम बीच रास्ते में ही अपनी जान गँवा देते थे। लेकिन इस सब के बावजूद भी जहाज़ी काफी मोटा मुनाफा कमा लेते थे।

गुलामों से आने वाला मुनाफ़ा सीधे किसके पास जाता था या इसे कौन नियंत्रित करता है ये ठीक से बता पाना थोड़ा मुश्किल है लेकिन एक बात जो निश्चित तौर पर कही जा सकती है कि इस काम में डचों का काफी नाम था। हालांकि इसमें फ्रांसीसी और पुर्तगाली भी पीछे नहीं थे। मगर यहाँ जो बात समझने वाली है वो ये कि अभी पीछे हमने जिन जॉन हॉकिंस की बात की थी उन्हें दास प्रथा में अच्छा काम करने के लिए महारानी एलीज़ाबेथ के द्वारा "सर" की उपाधि से नवाज़ा गया था। इस बात को इस तरह भी समझा जा सकता है कि गुलामों को लाने ले जाने के लिए महारानी एलीज़बेथ ने व्यापारिक हिस्सेदारी के तहत जॉन हॉकिंस को "ईसा" नाम का एक जहाज़ भी उधार दिया था। अंग्रेजी इतिहासकार इतिहास के पन्नों पर लगे हुए दागों को छुपाने की कितनी ही कोशिश क्यों न करें लेकिन इस बात को झुंठलाया नहीं जा सकता है कि मेंचेस्टर या लिवरपूल की धन-दौलत का ज़्यादातर हिस्सा गुलामों की हड्डियों से ही बना है और इसकी एक जायज़ वजह भी है। गुलामी का इतिहास उठा कर देखने पर पता चलता है कि गुलामों में कभी भी, कहीं भी कोई बूढ़ा गुलाम देखने को नहीं मिलता है और इसकी वजह बस इतनी, कि जब कोई गुलाम बूढ़ा होने लागता या काम करने के लायक नहीं रह जाता था तो उसे मार दिया जाता था। लेकिन गुलामों के भाग जाने, उनके चोरी हो जाने के मामलों में काफी सख़्त कानून प्रचलित थे। ऐसे में गुलामों की हत्या संबंधी कानून या तो काफी उदार थे या थे ही नहीं।

ऐसे इतिहासकार जो अंग्रेज़ों को गुलामों का हिमायती बताते हैं, अमूमन ये बताते हुए हिचकते हैं कि सबसे ज्यादा नीग्रो विद्रोह अमेरिका में ही हुए हैं और इन सब में सबसे बड़ा विद्रोह हाइती नेता "तुसो" के नेत्रत्व में हुआ था। बाहर से लाए गए गुलामों के साथ अमूमन महिलाएं भी हुआ करती थीं जो ज्यादातर मामलों में मालिकों की जबर्दस्ती का शिकार हो जाया करती थीं और इस तरह जन्म लेने वाले बच्चों से भी गुलामों की ही तरह काम लिया जाता था। गुलामों के हाथों से गुलामी की ये बेड़ियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के हाथों में आप ही सरक जाती थीं। गहरे रंग के लोगों के ऊपर किए गए अत्याचारों को समझने के लिए साल 2013 में आई फिल्म "12 ईयर आ स्लेव" ज़रूर देखी जानी चाहिए।

जब हम दासता की बात करते हैं तो ये केवल गहरे रंग के लोगों के ऊपर ही लागू नहीं थी, उस वक्त दासता की शृंखला में यूरोप के गोरी चमड़ी के लोगों को भी इस दलदल में झोंका गया था। यूरोपीय लोगों को अमेरिका में इज्जत की नौकरी, अच्छी पगार और एक बेहतर जीवन के सपने दिखा कर जहाजों में भर लिया जाता था, आने जाने का किराया न होने पर सात साल तक बिना पगार के काम करने के अनुबंध पर दस्तख़त करने के साथ ही उनकी और गहरे रंग के दासों के जीवन के बीच की सारी फाँकें मिट जाती थीं। दास बनाए जाने के बाद छोटी-छोटी गलतियों पर भी उनकी गुलामी के साल दोहरे अंकों में बढ़ा दिए जाते थे, या यूँ कहें कि इस दलदल में फंसने के बाद शायद ही कोई निर्धारित समय में या कभी ही बाहर निकाल पाता था। उस दौर में दासों के जीवन में 18-18 घंटे का काम, रहने के लिए जानवरों से बदतर जगह, बीमार होने पर जान से मार दिए जाना एक आम बात हुआ करती थी। हमारे इस स्तम्भ की कुछ सीमाएँ हैं और दासता की कहानी इतनी लंबी है कि उसके ऊपर कई महाग्रंथ तक लिखे जा सकते हैं, तो अभी के लिए इतना ही।

हँसी की फुलझड़ियाँ

टीसी – ये विकलांग लोगों का डिब्बा है ,
इसमें क्यों सफर कर रहे हो ..?
यात्री – जी सर मेरे साथ ये है ..!
टीसी – ये तो आम है ..!
यात्री – जी हाँ , लेकिन ये लंगड़ा आम है ...!!

सुबह –सुबह पत्नी नींद से उठते ही बोली , अजी सुनते हो ..?
पति – बोलो ..! क्या हुआ..?
पत्नी- मुझे सपना आया कि आप मेरे लिए
हीरों का हार लेकर आए हो ..!
पति – ठीक है , तो वापिस
सो जा और पहन ले ..!!!

संता ने भगवान से प्रार्थना की ...
हे भगवान !
मुझे एक पैसे से भरा बैग ,
एक नौकरी और एक बड़ा सा वाहन,
जिसमें लड़कियाँ भरी हुई हो, दे दो ..!!
भगवान – तथास्तु !!
दूसरे दिन संता गर्ल्स कॉलेज की बस का कंडक्टर बन गया ...!!

मास्टर जी - 'संगठन में शक्ति है' का उदाहरण दो..!
पप्पू - सर जेब में एक सिगरेट रखें तो मुड़-तुड़ जाती है
पर यदि पूरा पैकेट रखें तो कड़क ही रहती है...!!!
फिर मास्टर जी ने पप्पू को तोड़-मरोड़ के कूटा...

परेशान पप्पू ने गप्पू से कहा...
पता नहीं दूसरों के घर वाले लव मैरिज के लिए कैसे मान जाते हैं...
यहां तो अपनी पसंद की सब्जी भी मांग लो तो जूते पड़ते हैं...!!!

टीचर - एक टोकरी में दस आम थे तीन सड़ गए तो कितने आम बचे..?
बन्टू - दस
टीचर - अरे मूर्ख दस कैसे बचेंगे..?
बन्टू - सड़े हुए आम कहां जाएंगे, सड़ने से केले थोड़े ही बन जाएंगे..!!

बंटू - जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, दिन-प्रतिदिन
इंसान रईस बनता जाता है..!!
घंटु - वो कैसे..?
बंटू - बूढ़े होने पर चांदी बालों में, सोना दांतों में, मोती आखों में
शुगर खून में और महंगे पत्थर किडनी में पाए जाने लगते हैं..!!

शाम को पति के घर आते ही पत्नी ने
किच-किच शुरू कर दी...!!!
परेशान पति - अरे यार दिनभर का थका-हारा आया हूं,
पहले फ्रेश तो होने दो..!!
पत्नी - मैं भी तो दिनभर अकेली थी,
तो मैं भी फ्रेश ही हो रही हूं...!!!

लड़की ने घबराकर मायके फोन किया...
लड़की - मां, मेरी रात में उनसे लड़ाई हो गई..!
मां - कोई बात नहीं बेटी, पति-पत्नी के बीच लड़ाई होती रहती है..!
लड़की - अरे वो सब तो ठीक है, लेकिन अब ये बताओ कि
लाश का क्या करना है...?
यह सुनकर माँ हो गई बेहोश...

डॉक्टर - आपके अंदर आयरन की कमी है!
पप्पू - तो क्या करूं, कीलें खाऊं या सरिया...?

पप्पू (गप्पू से) - यार मेरे पापा दिन-ब-दिन
केबीसी के अमिताभ बच्चन बनते जा रहे हैं..!!
गप्पू - वो कैसे..?
पप्पू - उनसे जब भी पैसे मांगो,
कहते हैं 'क्या करोगे इतनी धनराशि का'..?

एक अंकल ने एक बच्चे से पूछा -
पढ़ाई कैसी चल रही है?
बच्चे ने जवाब दिया -
अंकल, समंदर जितना सिलेबस है, नदी जितना पढ़ पाते हैं
बाल्टी भर याद होता है, गिलास भर लिख पाते हैं
चुल्लू भर नंबर आते हैं, उसी में डूब कर मर जाते हैं...!!!

नई-नई शादी के बाद पत्नी के हाथ का खाना पति ने पहली बार खाया...
मिर्च अधिक तेज थी, फिर भी वह बात बिगाड़ना नहीं चाहता था...
पति - खाना बहुत अच्छा बना है..!
पत्नी - लेकिन, आप रो क्यों रहे हैं..?
पति - खुशी के कारण..!
पत्नी - और दूं..?
पति - नहीं, मैं ज्यादा खुशी बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा...!!!

मास्टर - बेटा, अगर सच्चे दिल से भगवान से प्रार्थना की जाए तो वो जरूर सफल होती है!
पप्पू - रहने दो सर, अगर ऐसा होता तो आप मेरे सर नहीं, ससुर होते...!!!

कोरोना महामारी आपदा प्रबन्धन : कुछ श्रेय बैंक कर्मियों को भी

राजीव सिंह चौधरी
क्षेत्रीय कार्यालय, देहारादून

कोरोना महामारी

"कोरोना (कोविड-19)" एक वायरस जनित रोग है जिसने धीरे-धीरे अति आक्रामक महामारी का रूप धारण कर लिया है और निरंतर पूरे विश्व में बहुत तेजी से फैलता जा रहा है। जैसा कि सर्वविदित है इस भयंकर महामारी की शुरुआत पूर्व वर्ष 2019 के दिसम्बर माह में चीन देश के "वुहान" नामक शहर से हुई थी। यह एक प्रकार का वायरस होता है जिसका संबंध ऐसे वाइरसों के परिवार से है जिसमें सामान्य सर्दी जुकाम से लेकर बड़ी बीमारी जैसे एमईआरएस (मिडिल ईस्ट रेसिपीरेटरी सिंड्रोम) एवं सार्स (सीवीयर एक्यूट रेसिपीरेटरी सिंड्रोम) तक हो सकता है। नॉवेल कोरोना वायरस -कोविड -19 इसी परिवार का एक नया प्रभावी वायरस है जो पहले कभी भी मानवो में नहीं पाया गया है। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म परंतु अत्यधिक प्रभावी वायरस है, जिसका संक्रमण एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के संपर्क में आने से फैलता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कोरोना वायरस के संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, नाक बहना, खांसी, गले में खराश व सांस लेने में कठिनाई जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती है।

कोरोना (कोविड-19) के लक्षण:

जब कोई व्यक्ति इस वायरस से संक्रमित होता है तो उस व्यक्ति में निम्न प्रकार के लक्षण पाये जाते है:

- ज्वर
- सूखी खाँसी
- गले में ख़राश
- डायरिया
- सिरदर्द
- साँस लेने में तकलीफ
- छाती में दर्द एवं जकड़न
- स्वाद एवं सूंघने की क्षमता कम होना
- थकान

उपरोक्त लक्षणों के अनुसार सर्वप्रथम सामान्य सर्दी जुकाम, बुखार तथा खाँसी होती है और फिर कुछ दिनों पश्चात सांस लेने में समस्या होने लगती है तथा आगे चल कर जब यह वायरस गंभीर रूप धारण कर लेता है तो व्यक्ति को निमोनिया, साँस लेने में बहुत अधिक कठिनाई, किडनी फेल होना और यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है। जो व्यक्ति पहले से ही अस्थमा, मधुमेह व हृदय रोग से ग्रसित हो उनके लिए इस वायरस का खतरा अत्यधिक गंभीर हो सकता है इसलिए उन्हें ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है।

कोरोना (कोविड-19) से बचाव:

सबसे बड़ी समस्या यह है कि अभी तक इस महामारी का किसी भी देश के पास कोई इलाज नहीं है, जिसके कारण यह एक चिंता जनक विषय बना हुआ है, और इसे लेकर बहुत ही सावधानियाँ बरती जा रही हैं। कई देश इसके इलाज के लिए निरंतर खोज कर रहे हैं, और कई देश इसका वेक्सीन बनाने का दावा भी कर रहे हैं, परंतु अभी उनके द्वारा बनाई गयी वेक्सीन का मानव परीक्षण नहीं हुआ है और न ही उनके द्वारा बनाई गयी वेक्सीन की आधिकारिक पुष्टि की गयी है, इसलिए अभी कुछ भी कहना उचित नहीं होगा। कहा जा रहा है कि इस साल के अंत तक इस खतरनाक वायरस को खत्म करने वाला वेक्सीन बना लिया जाएगा। तब तक इस बीमारी से बचने के लिए एकमात्र उपाय यही है कि अपने आप को संक्रमित होने से बचाएं।

स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए कुछ दिशा निर्देश जारी किए हैं-

1. जब तक जरूरी न हो घर से बाहर न निकलें।

2. लोगों के सीधे संपर्क में न आएँ और कम से कम 1 मीटर की दूरी बनाए रखें।

3. सार्वजनिक स्थानों पर भीड़ न बढ़ाएँ।

4. सार्वजनिक वाहनों जैसे- बस, ऑटो व टैक्सी आदि से यात्रा न करें, यदि जरूरी हो तो निजी वाहनों का प्रयोग करें।

5. किसी से हाथ न मिलाएँ।

6. हाथों को नियमित समय अंतराल पर अच्छी गुणवत्ता वाले साबुन या लिक्विड हैंड वॉश से धोते रहें।

7. मास्क व सेनेटाइज़र का प्रयोग करें।

8. आँख, नाक व कान को अनावश्यक छूने से बचें।

9. छींकते व खाँसते हुए मुँह व नाक को रुमाल या टिशू पेपर से ढकें।

10. बुखार, ज़ुकाम व खाँसी होने पर अपने आप को घर या किसी सरकारी सुविधा वाली जगह पर क्वारंटाइन करें।

11. खाद्य पदार्थों का प्रयोग करने से पहले उनकों अच्छे से धोएँ।

12. कच्चे माँस का सेवन न करें।

भारत सरकार भी इस महामारी से बचने के लिए कई प्रयास कर रही है। हमारे माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 25 मार्च, 2020 को पूरे देश में सम्पूर्ण लॉक डाउन लगवाया था जो आगे बढ़ा कर 17 मई, 2020 तक किया गया, केवल आवश्यक सेवाओं जैसे- चिकित्सा सेवाओं, पुलिस सेवाओं, नगर निगम (साफ-सफाई से संबंधित सेवाओं), खाद्य आपूर्ति सेवाओं एवं वित्तीय सेवाओं आदि का संचालन किया गया। प्रत्येक क्षेत्र में साफ सफाई करवा कर दवाई का छिड़काव करवाया गया। प्रत्येक स्थान पर सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए तथा लॉक डाउन के नियमों का पालन करवाने के लिए पुलिस विभाग द्वारा सख्ती से निगरानी की गयी और लोगों को घरों में सुरक्षित रहने के लिए निर्देश दिये गए। अभी भी मीडिया, टीवी, इंटरनेट, मोबाइल एप्लिकेशन तथा अखबार के माध्यम से लोगों को इस वायरस से बचने के उपाय बताए जा रहे हैं तथा उन्हें जागरूक किया जा रहा है।

कोरोना महामारी से अब तक अत्यधिक तबाही हो चुकी है। इसके कारण औद्योगिक क्षेत्र में बहुत गिरावट आई है, कई कंपनियाँ बंद होने की कगार पर हैं, स्थिति बहुत दयनीय है। भारत जैसा जनसंख्या बाहुल्य देश पहले ही बेरोजगारी की मार झेल रहा था और कोरोना काल में देश में और अधिक बेरोजगारी बढ़ती जा रही है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था भी डगमगाने लगी है।

कोरोना महामारी आपदा में भारतीय बैंको का योगदान

कोरोना महामारी से पूरे देश में संकट छाया हुआ है। लॉक डाउन के दौरान अधिकतर संस्थान, जैसे-कार्यालय, स्कूल, कॉलेज, मॉल, होटल, टूरिस्ट प्लेस, रेस्टौरेंट,स्विमिंग पूल्स व जिम आदि पूर्ण रूप से बंद किए गए थे, केवल चिकित्सा एवं पैरामेडिकल स्टाफ, नगर निगम, खाद्य विभाग, पुलिस, आर्मी व वित्तीय सेवाओं का परिचालन किया गया। चिकित्सा विभाग तो इस संकट के समय में हमारे लिए एक वरदान के रूप में साबित हुआ है। डाक्टर्स, नर्स एवं अन्य पैरामेडिकल स्टाफ ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है तथा अन्य विभाग जैसे पुलिस, नगर निगम, खाद्य व वित्तीय विभाग आदि ने भी लॉक डाउन से लेकर वर्तमान में चल रहे अनलॉक काल में अपनी सेवाएँ देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

इस काल में एक वर्ग ऐसा भी है जो उतनी ही निष्ठा और मेहनत से जनता की सेवा में लगा हुआ है, वो है बैंकिंग वर्ग। वित्तीय विभाग में भारतीय बैंको का भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिस प्रकार अन्य विभागों ने देश हित के लिए अपनी जान की परवाह न करते हुए इस संकट के समय में अपनी सेवाएँ दी हैं उसी प्रकार बैंको ने भी इस आपदा के समय में उतनी ही लगन से अपने कर्तव्य का पालन किया है एवं भरपूर सहयोग दिया है और वर्तमान में भी अपना कर्तव्य भली भांति निभा रहे हैं।

कोरोना की इस महामारी में ग्राहकों को सेवा देने के दौरान विभिन्न बैंको के कई स्टाफ कोरोना की चपेट में आ कर अपनी जान गँवा चुके हैं क्योंकि आज की तारीख में बैंक कर्मी को सबसे ज्यादा लोगों के संपर्क में रहना पड़ता है। पुलिस के पास जाने की हिम्मत बहुत कम लोग ही जुटा पाते हैं, डाक्टर्स के पास केवल वही लोग जाते हैं जो इस कोरोना वायरस के लक्षण से पीड़ित हैं या फिर टेस्ट करवाने के बाद जिनकी रिपोर्ट पॉज़िटिव आती है। सबसे ज्यादा खतरा भी डाक्टर्स लोग ही उठा रहे हैं, इसमे कोई शक नहीं है। लेकिन आज प्रत्येक बैंक

की प्रत्येक शाखा में कम से कम 200 से लेकर 500 ग्राहक प्रतिदिन आते हैं और यदि इनमें से कोई भी संक्रमित व्यक्ति शाखा में प्रवेश कर लेता है और किसी कारणवश बैंक कर्मचारी को उसके संक्रमित होने का पता नहीं चल पाता है, तो वह बैंक कर्मचारी उस संक्रमित व्यक्ति को सेवा देने के लिए बाध्य होता है। भारत सरकार द्वारा प्रधान मंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत प्रत्येक महिला जन धन खातों में अप्रैल, मई व जून में 500/- रुपये की राशि जमा करवाई गयी है, जिनमें से अत्यधिक खाते डोरमेंट व इनेक्टिव होने के कारण बैंको द्वारा तुरंत केवाईसी को अपडेट किया गया, उसके पश्चात ग्राहकों के खातों को एक्टिव कर उन्हें इस योजना के तहत जमा की गयी 500/- रुपए की राशि उपलब्ध करवाई गई है। बैंको में नकदी लेन-देन तथा पासबुक प्रिंट करवाने के समय कोरोना वायरस का अत्यधिक खतरा बना रहता है, क्योंकि करेंसी नोट व पासबुक पर वायरस चिपका हुआ हो सकता है जिससे सिंगल विंडो ऑपरेटर या खजांची के संक्रमित होने का खतरा बढ़ जाता है। कई बार कोरोना के लक्षण देर से दिखाई देने पर संक्रमित व्यक्ति / स्टाफ कई और व्यक्तियों / कर्मचारियों के संपर्क में आ जाते हैं जिसके कारण अन्य कर्मचारी / व्यक्ति भी इस वायरस की चपेट में आ जाते हैं। ऐसे कई केस भी देखे गए हैं जिसकी वजह से शाखाओं में पूरा स्टाफ संक्रमित हुआ और पूरी ब्रांच को ही बंद करना पड़ा व कर्मचारियों को क्वारेंटाइन करना पड़ा।

सबसे बड़ी विडंबना तो यह है कि अधिकांश जन-धन खाते निरक्षर तथा गरीब वर्ग के लोगों के होते हैं इसलिए नकदी निकालने के लिए बैंक कर्मी को ही ग्राहकों के निकासी फार्म को भरना पड़ता है, जिससे वह लोगों के सीधे संपर्क में आ जाता है और जिससे उसके संक्रमित होने का खतरा बढ़ जाता है। इसमें भी कोई संदेह नहीं है क्योंकि यह बैंक कर्मचारी का काम होता है, और उनको भी अपना कर्तव्य निभाना होता है। शाखाओं में सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टैन्सिंग) का पालन भी बैंक कर्मियों को ही करवाना पड़ता है। आज की तारीख में हम सभी भली भाँति जानते हैं कि कितने ग्राहक बैंक वालों की बात मानते हैं या उनके द्वारा दिये गए निर्देशों का पालन करते हैं। तनिक भी कठोर शब्दों के प्रयोग से अधिकांश ग्राहक शिकायत करने के लिए तैयार रहते हैं। इतना कुछ करने के बाद भी बैंक कर्मियों का नाम तक नहीं लिया जाता है, नाम तो दूर, उनके लिए प्रोत्साहन के दो शब्द भी नहीं बोले जाते हैं।

भारत सरकार ने इस महामारी के कारण देश में आयी मंदी से उबरने के लिए तथा देश की अर्थव्यवस्था को नियंत्रण में लाने के लिए 20 लाख करोड़ के राहत पैकेज की घोषणा भी की है, जिसमें विभिन्न क्षेत्र, उद्यम तथा इकाइयों के लिए विशेष प्रकार का कर्ज उपलब्ध करवाने की घोषणा की गयी है, जिनमें से कई क्षेत्रों को राहत पैकेज की राशि बैंकों के माध्यम से ही प्रदान की जा रही है। यह सरकार

द्वारा लिया गया बहुत ही अच्छा कदम है जो देश की आम जनता व देश कि अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध हो सकता है परंतु बैंकों को बहुत सतर्क होकर इन विभिन्न योजनाओं के तहत ग्राहकों को कर्ज बाँटने होंगे क्योंकि कई योजनाओं में बिना गारंटी के कर्ज देने की बात कही गयी है। कर्ज देने के बाद बैंकों द्वारा दिए गए कर्ज को गैर निष्पादित आस्तियाँ (एनपीए) होने से भी बचाना होगा और यदि किसी कारणवश कोई लोन एनपीए हो भी जाता है तो उसे रिकवर करना और भी मुश्किल होगा क्योंकि लोन वितरण के समय बैंक ने उधारकर्ता से किसी प्रकार की कोई गारंटी नहीं ली।

इन नई-नई योजनाओं के साथ-साथ बैंकों को अपने पूर्व एवं वर्तमान में चल रहे कार्यों को भी समय पर पूर्ण करना होता है। भारत सरकार व आरबीआइ द्वारा पहले से दी गयी योजनाओं एवं लक्ष्यों को भी उन्हें पूरा करना होता है। देखा जाए तो बैंकों का देश की आर्थिक स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए एक विशेष योगदान होता है।

कुल मिला कर कोरोना वायरस के कहर से पूरी मानवता पर संकट छाया हुआ है और देश की आर्थिक स्थिति दिन पर दिन बहुत खराब होती जा रही है। भारतीय बैंक देश के सबसे बड़े संकट की घड़ी में भी अन्य योद्धाओं की तरह देश हित में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे रहें हैं और आगे भी यही बैंक कर्मी केन्द्र सरकार द्वारा घोषित की गयी विभिन्न प्रकार की योजनाओं के द्वारा आर्थिक उद्धार करेंगे। अब ऐसे में यदि मीडिया, प्रशासन और देश के बड़े बड़े नेतागण, डाक्टर्स, सफाई कर्मचारी व पुलिस के साथ- साथ बैंक कर्मियों के बारे में भी दो शब्द कहते और उन्हें प्रोत्साहित करते तो बेहतर होता, क्योंकि भारतीय बैंक एवं समस्त बैंक कर्मी इस कठिन परिस्थिति में प्रोत्साहन के पात्र हैं। कोरोना वायरस के कारण इस विकट परिस्थिति में बैंकों द्वारा दी जा रही सेवाओं को भी नजरंदाज / अनदेखा नहीं किया जा सकता है। ऐसे में हमें कोरोना वारियर्स के रूप में बैंक कर्मियों के योगदान को भूलना नहीं चाहिए।

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र : बैंकिंग सेवाएं और चुनौतियां

अंकिता मुखर्जी
सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे

जैसा की हम सभी जानते है, बैंक एक वित्तीय संस्थान है। जो अपने ग्राहक को वित्तीय और बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करता है। बैंक का मुख्य कार्य ग्राहकों को उधार देना और ग्राहकों से धन स्वीकार करना होता है।

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र का अवलोकन

- बैंक एक वित्तीय संस्थान है, जिसके पास उधार देने के उद्देश्य से अपने ग्राहकों से धन स्वीकार करने का मुख्य कार्य है।
- बैंक धन प्रबंधन, मुद्रा विनिमय और सुरक्षित जमा बॉक्स जैसी वित्तीय सेवाएं प्रदान करता है।
- बैंकिंग को व्यक्तियों के धन को स्वीकार करने और सुरक्षित रखने और लाभ कमाने के लिए इस धन को उधार देने की व्यावसायिक गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- बैंकों की स्थापना से पहले, असंगठित क्षेत्र द्वारा मुद्रा उधारदाताओं की तरह बैंकिंग गतिविधियाँ की जाती थीं। वे बहुत अधिक ब्याज दर लेते थे। यहां तक कि सार्वजनिक जमा भी बहुत सुरक्षित नहीं थे।
- इस समस्या को दूर करने के लिए संगठित बैंकिंग क्षेत्र की स्थापना की गई।
- 20 वीं शताब्दी के बाद कई संयुक्त स्टॉक बैंकों और सहकारी बैंकों ने विशेष रूप से कृषि और लघु उद्योग क्षेत्र को वित्त प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद वित्तीय बाज़ार और बैंकिंग उद्योगों में बड़े बदलाव हुए हैं।
- प्रौद्योगिकी की तीव्र प्रगति ने लेन-देन की लागत में महत्वपूर्ण कमी लाने में योगदान दिया है, और बैंकों की ऋण देने की सुविधाओं में सुधार हुआ है।
- इससे बैंकों के कार्यों में वृद्धि हुई है और इसके पोर्टफोलियो में विविधता आई है। इसने व्यापक रूप से बैंकिंग गतिविधियों का दायरा बढ़ा दिया है।

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र – बैंकिंग सेवाएँ

बैंकों द्वारा दी जाने वाली सेवाओं को मोटे तौर पर 4 प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। भुगतान सेवाएँ, वित्तीय मध्यस्थ, वित्तीय सेवाएँ और सहायक सेवाएँ।

1. **भुगतान सेवाएं:** यह बैंकों द्वारा की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण सेवा है। पहले भुगतान प्रणाली को चेक, डिमांड ड्राफ्ट आदि द्वारा समर्थित किया गया था, जिसे अब प्रौद्योगिकी के विकास के साथ प्रत्यक्ष ऑनलाइन धन हस्तांतरण के साथ बदल दिया गया है।

2. **वित्तीय मध्यस्थ:** यह बैंक के सबसे पुराने कार्यों में से एक है, जो ग्राहकों से जमा स्वीकार करने और फिर उधारकर्ताओं को इन निधियों को उधार देने के लिए निर्दिष्ट करता है। यह बैंकिंग प्रणाली का मुख्य व्यवसाय है और यह तब तक जारी रहेगा जब तक बैंकिंग प्रणाली मौजूद है।

3. **वित्तीय सेवाएँ:** इन सेवाओं में निवेश बैंकिंग, विदेशी मुद्रा व्यापार, ऋण सेवाओं की लाइन, धन प्रबंधन और ब्रोकिंग सेवाएं शामिल हैं। ये सेवाएं कमीशन आदि के रूप में वाणिज्यिक बैंक के लिए आय उत्पन्न करती हैं।

4. **सहायक सेवाएँ:** अन्य सेवाएँ जो कि बैंक आवश्यक बैंकिंग सेवाओं के साथ आम लोगों को प्रदान करते हैं। विशिष्ट सहायक सेवाओं में सोने के लिए सुरक्षित जमा लॉकर, चेक पिक सुविधा, डोर स्टेप बैंकिंग आदि शामिल हैं। विभिन्न गैर-बैंकिंग गतिविधियां हैं, जो अब बैंक द्वारा निष्पादित की जाती हैं। उदाहरण के लिए, ग्राहकों को उपयोगिता भुगतान करने में मदद करने के लिए, अपने ग्राहकों के मर्चेंट बैंकिंग के रूप में प्रदर्शन करने, म्यूचुअल फंड का प्रबंधन करने और अपने निवेश जोखिमों का प्रबंधन करने, क्रेडिट और डेबिट कार्ड की पेशकश करने, बीमा सेवा प्रदान करने आदि के लिए।

बैंकिंग सेवाओं के आधार पर, उपयोगकर्ता दो प्रकार के होते हैं: सामान्य उपयोगकर्ता और औद्योगिक उपयोगकर्ता।

1. सामान्य उपयोगकर्ता – सामान्य उपयोगकर्ता वे उपयोगकर्ता होते हैं, जिनके पास अपना बैंक खाता होता है और वे बैंकों द्वारा निर्धारित नियमों और शर्तों के अनुसार बैंकिंग सुविधाओं का उपयोग करते हैं। वे आम तौर पर बहुत कम लेनदेन करते हैं और बैंक की बहुत सीमित सेवाओं का लाभ उठाते हैं।

2. औद्योगिक उपयोगकर्ता – उद्योगपति, उद्यमी जिनके पास बैंक में खाता है और जो अपने व्यवसायों के कई कार्यों जैसे प्रतिष्ठानों और विस्तार, विलय, अधिग्रहण आदि के लिए क्रेडिट सुविधाओं और अन्य सेवाओं का उपयोग करते हैं, औद्योगिक उपयोगकर्ता के रूप में जाने जाते हैं। आम तौर पर वे बड़े एवं प्रतिष्ठित ग्राहक माने जाते हैं।

प्रौद्योगिकी के निरंतर विकास के साथ भारतीय बैंकिंग उद्योग विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है। ये डीरेग्यूलेशन, दक्षता, डिफ्यूज़्ड कस्टमर लॉयल्टी और कम्पीटिशन गैप हैं।

डीरेग्यूलेशन – इस निरंतर डीरेगुलेशन ने अधिक स्वायत्तता, परिचालन में लचीलेपन और विघटित ब्याज दर के साथ चरम प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया है, और बैंकिंग बाज़ार में विदेशी मुद्रा के लिए उदार मानदंडों और नीतियों को उदार बनाया है।

दक्षता : उद्योग में गला काट प्रतियोगिता के कारण, बैंकों को मूल्य निर्धारण दबाव का सामना करना पड़ रहा है और खुदरा परिसंपत्तियों पर जोर देना पड़ रहा है। वाणिज्यिक और सामाजिक विचारों के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए बैंकरों में उत्कृष्ट क्षमता की आवश्यकता होती है।

विचलित ग्राहक वफादारी : एमएनसी और अन्य राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा आकर्षक प्रस्तावों के परिणामस्वरूप, ग्राहक अधिक मांग वाले बन गए हैं और उनकी निष्ठाएँ भी किसी एक बैंक से जुड़ी नहीं होती।

योग्यता अंतराल : योग्यता अंतर को एक साथ संबोधित करने की आवश्यकता है, अन्यथा चूक के अवसर होंगे। सही जगह पर सही कौशल रखने से सफलता निर्धारित होगी।

बैंकिंग के विकास ने बहुत सी बाधाएं और तनाव को पार किया है। बैंकों ने अपनी सेवाओं के विपणन के महत्व को महसूस किया है, ताकि बाज़ार में गला काट प्रतिस्पर्धा से बच सकें। वर्तमान बैंकिंग उद्योग में ग्राहकों की संतुष्ट करना सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है। बाज़ार में जीवित रहने के लिए उन्हें अपनी मार्केटिंग रणनीतियों को बहुत प्रभावी ढंग से लागू करना होगा।

वर्ग पहेली XVI का हल

1 28 अ	क	29 स्मा	30 त		2 दे	31 ह		3 32 वा	33 ता	व	34 र	ण
व		4 र	ह	स्य		5 ता	35 प	मा	न		ह	
लो		क			6 36 आ	ह	ट			7 37 आ	ब	
8 क	38 न			9 39 ध	रा	त	ल		10 40 सा	ग	र	
11 न	य	41 ना	भि	रा	म			12 42 व	ध			43 का
	13 न	म				14 44 वा	ता	य	न		15 च	र्या
45 क		16 व	46 स्तु	प	47 र	क				17 वि	र	ल
ल्प		18 र	ति		19 वि	चा	र	णी	48 य			य
वृ						तु			20 की	म	49 त	
21 क्ष	50 ति	51 ग्र	52 स्त		22 धै	र्य		23 53 मा	न		24 म	54 ग
	25 ल	ह	र				26 च	ल	न		27 स	त

स्वस्थ कैसे रहें ...?

निशा कुमारी
सहायक प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा

यह एक ऐसा प्रश्न है जिसे आजकल प्रत्येक व्यक्ति जानना चाहता है। हमारे चारो ओर का वातावरण और खानपान इतना ज्यादा दूषित हो गया है कि हमें सच में हेल्थ की तरफ बहुत ध्यान देने की जरूरत है। इस समय में लोगों को हेल्थ टिप्स के बारे में जानते रहना चाहिए और उन्हें अपनी ज़िन्दगी का एक जरूरी हिस्सा बना लेना चाहिए।

कोई भी व्यक्ति यदि सफल होना चाहता है तो सफलता का प्रयास वह तभी कर पाएगा जब उसका शरीर स्वस्थ और निरोगी होगा। इन हेल्थ टिप्स को अपने जीवन का हिस्सा बना लीजिए ताकि कोई बीमारी आपको छू भी न सके –

- स्वस्थ रहने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है सुबह उठकर 3-4 गिलास पानी पीना। सुबह जल्दी उठकर बिना ब्रश किए यदि आप 3-4 गिलास (अर्थात लगभग एक लीटर) गुनगुना पानी पीते हैं तो इससे आपके शरीर के टॉक्सिक बाहर निकल जाएगा। ध्यान रखिए, पानी पीने के 45 मिनट तक आपको कुछ खाना पीना नहीं है।
- रोज व्यायाम , योगा करना एक ऐसी आदत है जो आपको निरोग बनाए रखने में सबसे अधिक मदद करेगी। आपको सुबह व्यायाम जरुर करना चाहिए। इसके लिए कम से कम 20 मिनट और अधिक से अधिक जितना आप चाहें समय निकाल सकते हैं। सुबह में किया हुआ व्यायाम आपको पूरे दिन एनर्जी से भरपूर और खुश रखेगा।
- सुबह का नाश्ता एक ऐसी डाइट है जिस पर हमारी 50% हेल्थ निर्भर करती है। सुबह के नाश्ते में आपको अंकुरित चने या दाल, एक मौसमी फल और कुछ ड्राई फ्रूट खाना चाहिए। कोशिश करें कि सुबह 8 बजे तक आपका नाश्ता हो जाए। यदि आप चाहें तो फलों का ताजा जूस भी ले सकते हैं।
- खाना खाने के तुरंत बाद आपको पानी नहीं पीना चाहिए। तुरंत बाद पानी पीने से जठराग्नि कम हो जाती है और खाना सही से नहीं पचता। इसलिए आपको खाना खाने के कम से कम 45 मिनट बाद पानी पीना चाहिए। पानी गुनगुना हो तो वो ज्यादा बेहतर होगा।
- अगर स्वस्थ रहना है तो आज से ही चीनी खाना छोड़ दीजिए। चीनी हमारे शरीर को बहुत नुकसान पहुँचाती है। यदि बंद न कर सकें तो बहुत कम कर दें। शहद, मिश्री, गुड़ आदि का प्रयोग करें। साथ ही नमक का सेवन भी कम से कम करें। सफेद नमक की जगह रॉक सॉल्ट ज्यादा फायदेमंद होता है।
- मेडिटेशन स्वस्थ रहने के लिए बहुत जरूरी है। यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य के साथ शारीरिक स्वास्थ्य को भी एकदम फिट रखता है। दिन में सुबह के समय या शाम के समय कम से कम 15 मिनट आपको मेडिटेशन को जरूर देना चाहिए। मेडिटेशन टेंशन फ्री होने का सबसे अच्छा तरीका है। आप टेंशन फ्री होंगे तो अधिक स्वस्थ होंगे। ध्यान रहे कि मेडिटेशन करते समय आसपास का वातावरण साफ और खुशनुमा होना चाहिए।
- नींद पूरी न होने के कारण भी बहुत से रोग हो जाते हैं। नींद पूरी न हो तो पूरा दिन बेकार जाता है। आपको कम से कम 6 घंटे और अधिक से अधिक 8 घंटे की नींद जरूर लेनी चाहिए। नींद के समय हमारे शरीर की प्राणशक्ति बॉडी को रिपेयर करती है, बॉडी को आराम मिलता है जिससे हम फुल रिचार्ज हो जाते हैं।
- आप किस समय खाना खाते हैं ..? स्वस्थ रहने के लिए खाने का समय फिक्स होना चाहिए। सुबह 8 बजे तक आपको नाश्ता जरूर ले लेना चाहिए। दोपहर 12 बजे के आसपास आप लंच कर सकते हैं और शाम सूर्यास्त होने से ठीक पहले आपको खाना खा लेना चाहिए। रात को सोते समय आप दूध ले सकते हैं।
- शरीर की मालिश करना शरीर को स्वस्थ रखने का बहुत अच्छा उपाय है। आपको प्रत्येक सप्ताह पूरे शरीर की मालिश जरूर करनी चाहिए। इसके लिए आप सरसो, तिल या कोई आयुर्वेदिक तेल का प्रयोग कर सकते हैं। तेल मालिश से आपके शरीर की नसों में खून का प्रवाह बहुत अच्छा रहता है जिससे शरीर को कोई बीमारी नहीं लग पाती।
- सुबह जल्दी उठना बहुत अच्छी आदत है। आपको रोज सूर्य निकलने से पहले उठ जाना चाहिए। सुबह का वातावरण अमृत के समान माना गया है। सुबह 4 से 5 बजे के बीच उठ जाने से शरीर और मन दोनों फिट बने रहते हैं। सुबह का समय टहलने, कसरत करने और मेडिटेशन के लिए बहुत उपयोगी है।
- फल और ड्राई फ्रूट का उपयोग करने से शरीर प्राकृतिक रूप से स्वस्थ अनुभव करता है। हमारा शरीर फलों को 2 घंटे में पचा देता है जबकि खाना पचाने में शरीर को 6 से 8 घंटे लगते हैं। कोई भी

खाई हुई चीज़ जितनी जल्दी आपका शरीर पचाएगा उतना ही हम खाते रहेंगे। सूखे मेवे में आप अखरोट और बादाम का प्रयोग जरूर करें। ध्यान रहे, एक बार में 28 ग्राम सूखे मेवे से ज्यादा का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

- यदि आपको निरोगी जीवन जीना है तो चाय, कॉफी और फ़ास्ट फूड का सेवन बंद कर देना चाहिए। यह तीनों छोड़ना तभी संभव हो पाएगा जब इसके सबस्टीट्युट का आप यूज़ करने लगें। चाय और कॉफी की जगह आप आयुर्वेदिक पेय का उपयोग कर सकते हैं और फ़ास्ट फूड को आप कभी-कभी अपने घर पर बनाकर खा सकते हैं।
- आप एक हेल्दी और नैचुरल लाइफ जीने के लिए कुछ अच्छी और आयुर्वेदिक दवाओं का नियमित सेवन कर सकते हैं। आप तुलसी के पत्तों को रोज खा सकते हैं। साथ ही आपको ग्रीन टी, आँवला, लहसुन का नियमित सेवन करना चाहिए। यह सभी प्राकृतिक दवाइयों का काम करती हैं और आपको बीमार होने से बचाती है।

यह बात विज्ञान ने भी प्रूफ कर दी है कि हमेशा पॉजिटिव रहने से आपकी हेल्थ पर भी पॉज़िटिव असर होता है। एक पॉज़िटिव सोच वाला इंसान बहुत सी बीमारियों से बचा रह सकता है। उसे न तो टेंशन होती है और न ही थकान होती है। ऐसा व्यक्ति एकदम स्वस्थ जीवन जीता है।

जानिए काली मिर्च के 10 गुणकारी फ़ायदे

चाहे सलाद हो, फल या फिर पिज्जा और पास्ता, काली मिर्च हर चीज का स्वाद बढ़ाती है। और यह सेहत के लिए भी बेहद फायदेमंद होती है। जानिए काली मिर्च के 10 फायदे।

खांसी जुकाम में : काली मिर्च इतना फायदा पहुंचाती है कि खांसी जुकाम से राहत दिलाने वाले कफ सिरप में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। रात को सोने से पहले एक चम्मच शहद और अदरक के रस के साथ चुटकी भर काली मिर्च लेने से कफ कम होता है। चाय में मिला कर पीने से भी फायदा मिलता है।

कैंसर से बचाव : यूनिवर्सिटी ऑफ मिशीगन द्वारा की गयी एक स्टडी के अनुसार काली मिर्च में पिपेरीन नाम का रसायन होता है, जो कैंसर से लड़ने में मददगार होता है। रिपोर्ट के अनुसार अगर काली मिर्च को हल्दी के साथ लिया जाए, तो इसका असर और भी ज्यादा होता है। खास कर महिलाओं में यह ब्रेस्ट कैंसर की रोकथाम के लिए अच्छा है।

मांसपेशियों का दर्द : काली मिर्च में मौजूद पिपेरीन के कारण रक्तसंचार बढ़ता है। इससे मांसपेशियों के दर्द से निजात मिलता है। तेल को हल्का गर्म कर के उसमें काली मिर्च मिलाएं और पीठ और कंधों की इससे मालिश करें। गठिया रोग में भी काली मिर्च काफी फायदेमंद साबित होती है।

हाजमे के लिए : काली मिर्च के कारण पेट में हाइड्रोक्लोरिक एसिड ज्यादा पैदा होता है, जो हाजमे में मददगार होता है। इससे पेट में दर्द, पेट के फूलने और कब्ज में भी राहत मिलती है। अगर आपको एसिडिटी और गैस की समस्या है, तो लाल मिर्च को छोड़ दें और काली मिर्च का इस्तेमाल शुरू करें।

चेहरे पर निखार : मोटी पिसी काली मिर्च को चीनी और तेल के साथ मिला कर, इसे चेहरा पर मलें। इससे ना केवल चेहरे की गंदगी हटेगी, बल्कि काली मिर्च के कारण रक्तसंचार भी तेज होता है और चेहरे पर निखार आता है।

वजन संभाले : 2010 में हुए एक शोध के मुताबिक काली मिर्च शरीर की वसा को कम करने का भी काम करती है। इससे पाचन प्रक्रिया तेज होती है और कम समय में अधिक कैलोरी खर्च होती है। साथ ही यह शरीर से टॉक्सिन्स को निकाल बाहर करने में भी कारगर है।

सुंदर बालों के लिए : अगर आपको रूसी की समस्या है, तो दही में काली मिर्च मिला कर इससे सिर की मालिश करें। आधे घंटे बाद पानी से इसे धो लें। तुरंत शैंपू का इस्तेमाल ना करें। इससे रूसी भी कम होगी और बाल भी चमकेंगे। ध्यान रखें कि बहुत ज्यादा काली मिर्च ना डालें, नहीं तो जलन होने लगेगी।

दांतों की हिफाज़त : मसूड़ों में सूजन और सांस में बदबू की समस्या हो, तो एक चुटकी नमक और एक चुटकी काली मिर्च को पानी में मिला कर इसे मसूड़ों पर मलें। पानी की जगह अगर लौंग का तेल इस्तेमाल करें तो असर और भी जल्द होगा। यानि काली मिर्च का इस्तेमाल करें और मुस्कराहट बरकरार रखें।

डिप्रेशन में भी फायदेमंद : काली मिर्च के इस्तेमाल से शरीर में सेरोटोनिन हार्मोन बनता है, जो अच्छे मूड के लिए जिम्मेदार होता है। सेरोटोनिन की मात्रा बढ़ने से डिप्रेशन में भी फायदा मिलता है। इसलिए अपने रोजमर्रा के खाने में काली मिर्च का इस्तेमाल करें और खुशमिजाज रहें।

स्वाद में जबरदस्त : हर फीकी चीज में स्वाद डाल देने का जादू काली मिर्च कर सकती है। पश्चिमी देशों में अक्सर काफी फीका खाना खाया जाता है। ऐसे में अगर काली मिर्च मिल जाए, तो मसालों की कमी नहीं खलती।

झाँकी झारखंड की !!

अशोक कुमार
क्षेत्रीय कार्यालय, राँची

जाड़ों की नर्म धूप और आँगन में लेट कर या
गर्मियों की रात जो पुरवाईयां चलें
.........दिल ढूंढता है फिर वही फुर्सत के रात दिन

वैसे तो गुलज़ार के लिखे इस गीत के बोल कश्मीर की खूबसूरत फिज़ाओं के बारे में थे पर फुर्सत के ऐसे लम्हे जीने हों तो झारखंड भी किसी मायने में कम नहीं है। प्रकृति ने अपनी सारी खूबसूरती इस राज्य को नवाज़ी है। सारे प्राकृतिक उपादान यहां मौजूद हैं। हरे-भरे पहाड़, कल-कल बहते झरने, घुमावदार घाटियां, तरह-तरह के वनस्पतियों की खेप, पेड़ों की अंतहीन शृंखला, रंग-बिरंगे पक्षी। हर ओर प्रकृति का विहंगम दृश्य। यहां वक्त थम-सा जाता है। मौसम के तो क्या कहने। न अधिक गर्मी और ना ही हाड़ कँपाने वाली ठंड। यहां का मौसम खुशनुमा है। अंग्रेजों को यहां के पहाड़ और मौसम इतना लुभा गए कि रेड इंडियंस की एक बड़ी आबादी यहां बस गई। इस जगह को हम मैकलुस्कीगंज के नाम से जानते हैं। सैनिक स्कूल के लिए मशहूर नेतरहाट का सूर्योदय और सूर्यास्त आपकी आंखों और यादों में हमेशा के लिए समां सकता है। एक बार यहां आने पर आपका मन जाने को नहीं करेगा। सिर्फ प्रकृति ही नहीं यहां के लोग भी इतने सीधे-सादे हैं कि वे आपका मन मोह लेंगे। यहां के गावों और घने वनों के बीच रहने वाले जनजाति और आदिवासियों से मिलकर आपको ऐसा लगेगा मानो असली भारत यहीं बसता है। यहां की प्रमुख नदी स्वर्णरिखा है और यहां के बांधों से गिरती पानी की बौछारें आपकी पलकें नहीं झपकने देगा। यहां के झीलों में नौका विहार आपके मन को तरोताजा कर देंगे।

यहां प्रकृति का अनुपम रूप अब भी कायम है। राँची, जो राज्य की राजधानी है, वहां से अगर 10 किलोमीटर भी बाहर आप कदम रखते हैं तो आप शहर की सीमा से बाहर आ जाएंगे जहां खूबसूरत वादियां आपका स्वागत करने के लिए तैयार रहेंगी। राँची खुद भी हरी-भरी है। यहां के दूसरे प्रमुख शहरों में जमशेदपुर, बोकारो, धनबाद, देवघर इत्यादि हैं। यहां धरती के गर्भ में कोयला, अबरख जैसे खनिज पदार्थ हैं जिन पर आधारित उद्योग यहां के लोगों की जीविका का प्रमुख साधन हैं । देवघर का प्रसिद्ध शिव मंदिर जो देश के ज्योतिर्लिंगों में से एक है उसकी प्रसिद्धि पूरे देश और दुनिया में है। यहां के रजरप्पा मंदिर के पीछे की कहानी आप जानकर हैरान रह जाएंगे। आइए आपको राँची के प्रमुख पर्यटन स्थलों और केंद्रों की सैर पर लिए चलते हैं ताकि आप घर बैठे झारखंड राज्य से और यहां की खूबसूरती से परिचित हो सकें।

रजरप्पा: यह झारखण्ड के रामगढ़ जिले में स्थित एक तीर्थस्थल है। यह झारखंड की राजधानी रांची से करीब 80 किलोमीटर दूर स्थित है। रामगढ़ से रजरप्पा की दूरी 28 किमी की है। यहाँ का झरना एवं माँ छिन्नमास्तिका का मंदिर प्रसिद्ध है। रजरप्पा प्रांत के दो भाग हैं- रजरप्पा परियोजना और रजरप्पा मंदिर। रजरप्पा परियोजना जिसे रजरप्पा प्रोजेक्ट के नाम से जाना जाता है, वहाँ कोल इंडिया लिमिटेड की अनुषांगिक इकाइयों में से एक सेंट्रल कोलफील्ड लिमिटेड की परियोजना है। यहाँ कोयले की खानें हैं, जहाँ विशाल स्तर पर खनन होता है। रजरप्पा के भैरवी-भेड़ा और दामोदर नदी के संगम पर मां छिन्नमास्तिका का मंदिर स्थित है। इस मंदिर को 'प्रचंडचंडिके' के रूप से भी जाना जाता है। मंदिर की उत्तरी दीवार के साथ रखे एक शिलाखंड पर दक्षिण की ओर रुख किए माता छिन्नमस्तिके का दिव्य रूप अंकित है। पुराणों में रजरप्पा मंदिर का उल्लेख शक्तिपीठ के रूप में मिलता है। मंदिर के निर्माण काल के बारे में पुरातात्विक विशेषज्ञों में मतभेद है। कई विशेषज्ञ का कहना है कि इस मंदिर का

निर्माण 6000 साल पहले हुआ था और कई इसे महाभारतकालीन मंदिर बताते हैं। यहां कई मंदिर हैं जिनमें 'अष्टामंत्रिका' और 'दक्षिण काली' प्रमुख हैं। यहां आने से तंत्र साधना का अहसास होता है। यही कारण है कि असम का कामाख्या मंदिर और रजरप्पा के छिन्नमस्तिका मंदिर में समानता दिखाई देती है।मंगलवार और शनिवार को रजरप्पा मंदिर में विशेष पूजा होती है।

पतरातू घाटी

राजधानी रांची से करीब 35 किलोमीटर दूर स्थित है खूबसूरत पतरातू घाटी। हरे-भरे पेड़ों से घिरी घाटी के बीच से एक सड़क गुजरती है, जिसमें दो दर्जन से ज्यादा खतरनाक, घुमावदार मोड़ हैं। बरसात में पूरी घाटी हरियाली की चादर में लिपटी रहती है। घाटी खत्म होने के साथ ही पड़ता है, पतरातू डैम। रामगढ़ के पश्चिम में 30 किमी इस बांध का निर्माण पतरातू थर्मल पावर स्टेशन को पानी की आपूर्ति के उद्देश्य से किया गया था। नलकार्नी नदी से और इस बांध के आस-पास की पहाड़ियों के झरने से पानी इस बांध में जमा किया जाता है। इस बांध की कुल भंडारण क्षमता 81 वर्ग मील है। यह एक सुंदर पर्यटन स्थल है और पूरे वर्ष विशेष रूप से सर्दियों के मौसम के दौरान लोगों का एक बड़ा सदस्य पिकनिक के लिए यहां जाता है। बांध के बगल में एक सर्किट हाउस है। बांध के नजदीक पंचवाहिनी मंदिर एक प्राचीन मंदिर है और इसके धार्मिक मूल्य के लिए महत्वपूर्ण है। इस बांध को नलकार्नी बांध भी कहा जाता है।

देवड़ी मंदिर

मां दिवड़ी का मंदिर रांची से करीब 60 किलोमीटर दूर रांची-टाटा हाइवे पर तमाड़ में स्थित है, जो आज देश विदेशों में प्रसिद्ध है। हालंकि यह मंदिर पहले खासा प्रसिद्ध नहीं था। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान धोनी के इस मंदिर में जाने की खबर आने के बाद से यह मंदिर खासा प्रसिद्ध हो गया।

जोनहा जलप्रपात

रांची-पुरुलिया राजमार्ग पर स्थित रांची से 45 किमी दूर, स्थानीय गांव के नाम पर जोनहा जलप्रपात है। इसे गौतमधारा भी कहा जाता है, क्योंकि यहां भगवान बुद्ध को समर्पित एक मंदिर है। इसके अलावा भी राँची और आसपास कई जलप्रपात हैं जैसे हुंडरू, दशम इत्यादि।

(क्रमशः)

प्रतिस्पंदन

वाणी पत्रिका का 125वां अंक प्राप्त हुआ। हमेशा की तरह यह अंक भी रोचक व आकर्षक लगा। पत्रिका में की गई डिजाइनिंग मनभावन है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती - 2 लेख को पढ़कर आत्मशक्ति के विचार उत्पन्न होते हैं व पत्रिका में प्रकाशित प्रेरक प्रसंग वाकई प्रेरक तथा रोचक हैं। विभिन्न गतिविधियों के छाया चित्र हमारे बैंक की प्रगति को दर्शाते हैं। डिज़िटल बैंकिंग में साइबर क्राइम से बचने के उपाय' लेख आजकल होने वाली धोखाधड़ियों से बचने के लिए सचमुच कारगर हैं। पत्रिका का यह अंक संपूर्णतः सुंदर , रोचक व ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के संपादक मंडल को पत्रिका के इस अंक हेतु बधाई व शुभकामनाएँ।

शंकरानन्द झा
वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

आपके पत्र क्रमांक राभावि/ 124/2020-21 दिनांक 13.08.2020 के माध्यम से आपके बैंक द्वारा प्रकाशित हिंदी गृहपत्रिका 'वाणी' के जनवरी- जून 2020 के 124वें अंक को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। पत्रिका का अवलोकन करने पर उसकी उत्कृष्टता श्रेष्ठ संपादकत्व को प्रदर्शित करती है। पत्रिका में संकलित कार्यपालकों का संदेश प्रेरणादायी एवं नवीन ऊर्जा और उत्साह का संचार करने वाला है। पत्रिका में संकलित काव्य मार्मिक तथा हृदयस्पर्शी हैं।'बैंकिंग व अन्य आलेख' द्वारा बैंक के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। पत्रिका में स्थापना दिवस संबंधी विभिन्न क्रियाकलापों का सजीव चित्रण किया गया है , जो सराहनीय प्रयास है। ज्ञान के मोती के रूप में श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट सुविचारों का संकलन और योग का सचित्र वर्णन पत्रिका को आकर्षण प्रदान करता है , जो पाठकों को आकर्षित करेंगे। हमें पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में निहित सामग्री को पाठकगण रुचिकर व उपयोगी पाएंगे। मेरी ओर से संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा इसी प्रकार ज्ञानवर्धक सामग्री से भरपूर अगले अंक की हमें प्रतीक्षा रहेगी,जिसके लिए हमारी अनेकानेक शुभकामनाएँ।

अम्बरीष कुमार सिंह
सहायक महा प्रबन्धक (राजभाषा), यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुम्बई

"वाणी" का संयुक्तांक (जनवरी- जून 2020) प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका के अवलोकन से इस बात का एहसास होता है कि कोविड -19 महामारी के इस कठिन दौर में भी पत्रिका को उत्कृष्ट बनाने का प्रयास किया गया है। इसकी सामग्री का चयन इस रूप से किया गया है कि जीवन के अधिकतम पक्षों का समावेश हो जाए। समस्त विषय रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

विशेष आलेख – "गौरवगाथा वाणी" में पत्रिका का अब तक का इतिहास वर्णित है , जो आपके द्वारा इस हेतु किए गए प्रयासों एवं उपलब्धियों को दर्शाता है। साहित्यिक गतिविधियों में कविताएँ एवं प्रसिद्ध शायर राहत इंदौरी का परिचय एवं लेखन रोचक एवं मनोरंजक है। इंद्रधनुष में महर्षि दयानन्द सरस्वती पर द्वितीय भाग में उनके जीवन का परिचय, कानून संबंधी आलेख, प्रदक्षिणा में धार्मिक स्थल भीमाशंकर पर जानकारी, स्वास्थ्य संपदा में कोरोना वायरस पर लेख, आदि इस अंक को रोचक, ज्ञानवर्धक एवं विशेष बनाते हैं। हम आपके सार्थक प्रयासों की प्रशंसा करते हैं तथा आपको इसके लिए बधाई देते हुए पत्रिका के अगले अंक हेतु अग्रिम शुभकामनाएँ।

अजय कुमार
मुख्य प्रबन्धक(राजभाषा), इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, राजभाषा विभाग

आपकी गृहपत्रिका वाणी का 125वां अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका के 125वें अंक का प्रकाशन पत्रिका की लंबी और निरंतर सफल यात्रा को दर्शाता है। पत्रिका का यह अंक भी पिछले अंकों की तरह ही विविधता से भरा हुआ, रोचक और ज्ञानवर्धक है। बैंकिंग, स्वास्थ्य, साहित्य, हास्य और पर्यटन सहित अनेक विषयों पर लेखों को पत्रिका में शामिल किया गया है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई।

श्याम सुंदर
प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिज़र्व बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

हमें आपके बैंक की त्रैमासिक पत्रिका "वाणी" का जनवरी-जून 2020 अंक प्राप्त हुआ , धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ काफी आकर्षक है। पत्रिका में विविध गतिविधियों एवं खबरों का समावेश व्यवस्थित ढंग से किया गया है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख "डिजिटल बैंकिंग में साइबर क्राइम से बचने के उपाय" , "योग – एक स्वस्थ जीवन शैली" , नई सरकारी योजनाओं के अमल में सरकारी बैंकों की भूमिका" , " बैंकों में बढ़ती धोखाधड़ियाँ : रोकथाम के उपाय", तथा "क्या पत्नी मांग सकती है, पति के बैंक खाते की जानकारी" आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

हिंदू धर्म अध्यात्म को दर्शाता आलेख "बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक –भीमाशंकर" तथा परिक्रमा कॉलम के अंतर्गत प्रकाशित आलेख "नयनाभिराम शहर शिमला" पठनीय हैं। कविताएँ "ईर्ष्या" एवं "बेवक्त" काफी मर्मस्पर्शी लगीं। मौजूदा परिदृश्य में स्वास्थ्य संपदा कॉलम के अंतर्गत "कोरोना वायरस : बचाव कैसे करें?" रोचक एवं जानकारियों से परिपूर्ण है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पूरी संपादकीय टीम को बधाई।

संजय सिंह
सहायक महाप्रबन्धक (राजभाषा), बैंक ऑफ बड़ौदा, बड़ौदा कॉर्पोरेट सेंटर, मुम्बई

गतिविधियाँ

केंद्रीय कार्यालय में पदार्पण पर एमडी व सीईओ महोदय श्री पी.पी. सेनगुप्ता का स्वागत किया मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री ए.बी.विजयकुमार ने। इस अवसर पर उनके साथ उपस्थित हैं हमारे कार्यपालक निदेशक महोदय श्री ए.के. श्रीवास्तव।

केंद्रीय कार्यालय में प्रभार ग्रहण करने के बाद एमडी व सीईओ श्री पी.पी.सेनगुप्ता ने कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों से औपचारिक रूप से मुलाकात की। इस अवसर पर एमडी व सीईओ महोदय राजभाषा विभाग के स्टाफ सदस्यों से वार्ता करते हुए।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
आपकी प्रगति का सच्चा साथी

त्यौहार ऑफ़र

राइज़ व शाइन

आवास ऋण व वाहन ऋण हेतु
कोई प्रसंस्करण शुल्क नहीं

दिनांक 27.08.2020 से 15.05.2021 तक

*शर्तें लागू

www.iob.in | 1800 425 4445 | @IOBIndia | travelcard@iobnet.co.in

अधिक जानकारी के लिए हमारी नज़दीकी शाखा से संपर्क करें या www.iob.in पर देखें

प्रकाशन की तिथि : 30.10.2020